

## चरक संहिता – पूर्वार्ध

चतुष्क - 7

अनु.	चतुष्क नाम	अध्याय नाम
1	भेषज चतुष्क	1) दीर्घजीवितीय अध्याय 2) अपामार्ग तण्डुलीय अध्याय 3) आरग्वधीय अध्याय 4) षडविरेचनशताश्रितीय अध्याय
2	स्वास्थ्य चतुष्क	5) मात्राशितीय अध्याय 6) तस्याशितीय अध्याय 7) न वेगान्धारणीय अध्याय 8) इन्द्रियोपक्रमणीय अध्याय
3	निर्देश चतुष्क	9) खुड्हाकचतुष्पाद अध्याय 10) महाचतुष्पाद अध्याय 11) तिस्त्रैषणीय अध्याय 12) वातकलाकलीय अध्याय
4	कल्पना चतुष्क	13) स्नेहाध्याय 14) स्वेदाध्याय 15) उपकल्पनीय अध्याय 16) चिकित्सा प्राभृतीय अध्याय
5	रोगचतुष्क	17) वियन्तःशिरसीय अध्युँय 18) त्रिशोथीय अध्याय 19) अष्टोदरीय अध्याय 20) महारोगाध्याय
6	योजना चतुष्क	21) आष्टौ निन्दितीय अध्याय 22) लघनबृहणीय अध्याय 23) संतर्पणीय अध्याय 24) विधीशोणीतीय अध्याय
7	अन्नपान चतुष्क	25) यज्जःपुरुषीय अध्याय 26) आत्रेयभद्रकाप्यीय अध्याय 27) अन्नपानविधि अध्याय 28) विविध अशीतिपितीय अध्याय
8	संग्रह द्वय	29) दशप्राणायतनीय अध्याय 30) अर्थेदशमहामूलीय अध्याय

हितकर तथा अहितकर आहार – (च. सू. 27/4)

- 1) तत् स्वभावाद् उदकं क्लेदयति
- 2) लवणं विष्वन्दयति
- 3) क्षारः पाचयति
- 4) मधु संदधाति

- 5) सर्पिः स्नेहयति
- 6) क्षीरं जीवयति
- 7) मांसं बृहयति
- 8) रसः प्रीणयति
- 9) सुरा जर्जरीकरोति (मांसादी शिथीलीकरोति)
- 10) शीधुः अवधमति (मांस मेदादी लेखन)
- 11) द्राक्षासवो दीपयति
- 12) फाणितम् आचिनोति (दोषो को एकत्रित करना)
- 13) दधि शोफं जनयति
- 14) पिण्याकशाकं ग्लपयति (ग्लानी)
- 15) प्रभूतान्तर्मलो माषसूपः (अन्तः मल प्रमाण वर्धक)
- 16) दृष्टिशुक्रघ्नः क्षारः
- 17) प्रायः पित्तलमन्यत्र दाढिमामलकात्
- 18) प्रायः इलेष्पलमधुरः अन्यत्र मधुनः शालिषष्ठिक यवगोधूमात्
- 19) प्रायः तिर्कं वातलमवृष्यं चान्यत्र वेत्राग्रामृता पटोलपत्रात्
- 20) प्रायः कटुकं वातलमवृष्यं चान्यत्र पिप्पलीविश्वभेषजात्

#### प्राणवर्धनादी में एक एक की प्रधानता – ( च. सू. 30/15)

- 1) तत्र अहिंसा प्राणिनां प्राणवर्धनानां उत्कृष्टतम् ।
- 2) वीर्यं बलवर्धनानां
- 3) विद्या बृहणानां
- 4) इन्द्रियजयो नन्दनानां
- 5) तत्त्वावबोधो हर्षणानां
- 6) ब्रह्मचर्यं अयनानां

# TIERRA

#### अनुमान प्रमाण द्वारा परीक्षा – ( च.वि. 4/8)

- |   |   |
|---|---|
| 1) अग्निं जरणशक्त्या परीक्षेत्                | 13) धैर्यं अविषादेन                                   |
| 2) बलं व्यायामशक्त्या                         | 14) वीर्यं उत्थानेन (उत्साह से वीर्य का)              |
| 3) श्रोत्रादीनि शब्दादि अर्थग्रहणेन           | 15) अवस्थानं अविभ्रमेण (भ्रम न होने से मन स्थिरता का) |
| 4) मनोऽर्थं अव्यभिचरणेन (प्राकृत ग्रहण से)    | 16) श्रद्धां अभिप्रायेण (इच्छा से श्रद्धा का)         |
| 5) विज्ञानं व्यवसायेन (व्यवसाय से विज्ञान का) | 17) मेधां ग्रहणेन                                     |
| 6) रजः सङ्घेन (आसक्ति से रजोगुण का)           | 18) संज्ञां नामग्रहणेन                                |
| 7) मोहं अविज्ञानेन                            | 19) स्मृतिं स्मरणेन                                   |
| 8) क्रोधं अभिद्रोहेण                          | 20) हियम् अपत्रपणेन (लज्जा करने से लज्जा का)          |
| 9) शोकं दैन्येन                               | 21) शीलं अनुशीलनेन (अभ्यास से स्वभाव का)              |
| 10) हर्षं आमोदेन (आनंद से)                    | 22) द्वेषं प्रतिषेधेन                                 |
| 11) प्रीतिं तोषेण (संतोष से)                  | 23) उपथिं अनुबन्धेन (परिणाम से कपट का)                |
| 12) भयं विषादेन                               | 24) धृतिं अलौल्येन                                    |

- 25) वश्यतां विधेयतया (आज्ञा मानने से वश्यता का)

26) वयोभक्तिसात्म्यव्याधिसमुत्थानानि कालदेशोपशयवेदनाविशेषेण  
( वय भक्ति सात्म्य रोग, रोग कारण, इनकी परीक्षा काल देश उपशय वेदना के द्वारा होती है )

27) गूढलिंगं व्याधिं उपशय अनुपशयाभ्यां

28) दोषप्रमाणविशेषं अपचारविशेषेण ( अपचार के अनुसार दोष विशेष का )

29) आयुषः क्षयम् अरिष्टैः

30) उपस्थितश्रेयत्वं कल्याणभिनिरेशेन ( कल्याणकारी मार्ग पर चलने से कल्याणयुक्त होने की )

31) अमलं सत्वं अविकारेण ( मन मे विकार न होने से अमलयुक्त सत्व का )

32) ग्रहण्यास्तु मृदूदारूणत्वं

33) स्वप्नदर्शनम्

34) अभिप्रायं

35) द्विष्टेष्टस्खदःखानि



(द्वेष, सुख, दुःख का)

## भेषजसेवन काल -

अ) चरक -

- 1) दिनावेक्ष्य - उदा . - पूर्वाह्न मे वमन

2) रोग्यवेक्ष - बलवान रुग्ण - प्रातः निरन्त्र औषध पान  
दुर्बल रुग्ण - लघुअ पथ्यान सह

1) भुक्तादौ - चक्रपाणीनुसार दो अर्थ  
 1) प्रातरेव निरन्त्र - बलवान् रुग्ण मे  
 2) प्राग्भोजनं - अपान वैगुण्य मे (अपाने विगुणे पूर्व)

3) भुक्तमध्ये - समाने मध्यभोजनम्

4) (भोजन) पश्चात - चक्रपाणीनुसार दो अर्थ  
 1) प्रातः भोजनोत्तरकालम् - व्याने तु प्रातराशितम्  
 2) सायं भोजनोत्तरकालम् - उदाने भोजनोत्तरम्

6) मुहुर्मुहु - श्वास कास पिपासासु

7) सामुदगं - (भुक्तस्यादावन्ते च भुज्यते) सामुदगं हिककिने देयं

8) भुक्तसंयुक्त - लघु अन्त्र सह संयुत - अरुचि मे

9) ग्रास प्राणदुष्टी मे

10) ग्रासान्तर }

# मध्यमाजनम् वक्रपाणीनुसार दो अर्थ भोजनोत्तरकालम् – व्याने तु प्रातराशितम्

सश्रतोक्त औषध सेवन काल – 10

- 1) अभक्त – अन्नहीन काले केवल औषध सेवन, वीर्याधिक औषध इस काल में देय
  - 2) प्रागभक्त – भोजन पूर्व औषध सेवन, शीघ्र विपाक करती है, वृद्ध शिशु भी इनमें देय
  - 3) अधोभक्त – भोजन पश्चात औषध सेवन, शरीर उर्ध्वभागज रोग नाशन
  - 4) मध्येभक्त – भोजन मध्य काल में सेवन, शरीर मध्य भागज रोग नाशन
  - 5) अन्तराभक्त – पूर्व (प्रात) अपर (सायं) काल के भोजन के मध्य में, हुदय मनोबलकर, दीपन
  - 6) सभक्त – भोजन में मिश्रीत कर सेवन, अबल, स्त्री, औषध द्वेषी इनमें हितकर
  - 7) सामुदगा – यद भक्तस्य आदावन्ते च पीयते । दोषों के द्विधा प्रसत (उर्ध्व व अधः ) होने पर उपयोगी

- 8) मुहुर्मुहु - सभकमभकं वा यदौषधं मुहुर्मुहु उपयुज्यते । श्वास, अतिप्रसृत कास, हिकका, वमन
- 9) ग्रास - पिण्ड (ग्रास / कवल) के साथ मिश्रीत की जाती है । अग्निबल वर्धनार्थ व वाजीकरणार्थ
- 10) ग्रासान्तर - दो ग्रासों के बीच में । श्वासादी रोग में वमनीय औषधी धूम, वा लेह

### 3) वाग्भटोक्ट औषध सेवन काल - 10

- 1) अनन्न - कफोद्रेके में बलवान रोग व बलवान रूगण होनेपर
- 2) अन्नादौ - अपान विगुण होनेपर
- 3) अन्नमध्ये - समान विगुण होनेपर
- 4) अन्ने अन्ते - प्रातः भोजनोन्तर -- व्यान वायु विकार व सायं भोजनोन्तर - उदान वायु दुष्टी
- 5) सग्रास - ]
- 6) ग्रासान्तर - प्राणे दुष्टे मातरिश्वानि
- 7) मुहुर्मुहु - विष. छर्दि, हिकका, तृष्णा, श्वास, कास .
- 8) सान्न - अरोचक में भोज्यैः चित्रैः (नानाप्रकार के भोज्य द्रव्य सह)
- 9) सामुदग - कम्प आक्षेपक, हिधा इनमें लघु भोजनसह
- 10) निशाकाल - उर्ध्वजन्मुविकारेषु स्वप्नकाले प्रशस्यते ।

### शारंग्धरानुसार औषध सेवन काल -

ज्ञेयः पण्चविधः कालो भैषज्यग्रहणे नृणाम् ।

किञ्चित् सूर्योदये जाते तथा दिवसभोजने ॥

सायन्तने भोजने च मुहुश्वापि तथा निशी ।

- 1) किञ्चित सूर्योदये
- 2) दिवसभोजने
- 3) सायंकाल के भोजन समये
- 4) मुहुर्मुहु
- 5) निशी

### 1) प्रथम काल ( प्रातःकाल ) -

पित्तकफोद्रेके , विरेकवमनार्थयोः, लेखनार्थ

### 2) द्वितीय काल -

- अ) भोजनाग्रे - अपान वैगुण्य मे
- ब) आहारे (आहार समये) - अरुचि मे चित्र (विविध प्रकार के रूचिकर) लघु भोजन सह
- क) भोजनमध्ये - समान वात विकृति मे, मन्दाग्नि मे अग्निदीपनार्थ
- ड) भोजनान्ते - व्यानकोपे
- इ) पूर्वमन्ते च भोजनात् - हिकका आक्षेपक कंप

### 3) तृतीय काल -

- अ) सान्ध्यभोजने ग्रास ग्रासान्तरे (सायंकालीन भोजन के ग्रास ग्रासान्तर मे)-

उदान के कुपित होनेपर उत्पन्न स्वरभंगादी मे

- ब) सान्ध्यस्य भुक्तस्यान्ते - प्राण दुष्टी मे

### 4) चतुर्थ काल -

- अ) मुहुर्मुहु - तृट छर्दि हिकका श्वास गर (गरविष) अन्न के साथ मुहुर्मुहु

### 5) पंचम काल -

- अ) अनन्न निशी - उर्ध्वजन्मुगत विकार, लेखन , बृहणार्थ पाचन वा शमन औषधी प्रयोग

### चरकोक्त गण्

ऐकुण विरेचन योग – षड विरेचन शतानी भवन्ति । ६००

कषाय – ५००

महाकषाय – ५०

वमन योग – ३५५

विरेचन योग – २४५

विरेचन आश्रय – ६ = क्षीर मूल त्वक पत्र पुष्प फल

कषायकल्पना –

कषायकल्पना व्याध्यातुरबलापेक्षिणी

न तु ऐवं खलु सर्वाणि सर्वत्रोपयोगिनि भवन्ति ।

#### १) जीवनीय गण् –

अष्टवर्गोक्त ६ – जीवक ऋषभक मैदा महामेदा काकोली, क्षीरकाकोली

मुदगपर्णी माषपर्णी

जीवनी मधुक (यस्तीमधु)

#### २) बृहणीय गण –

काकोली व क्षीरकाकोली

क्षीरिणी (क्षीरविदारी)

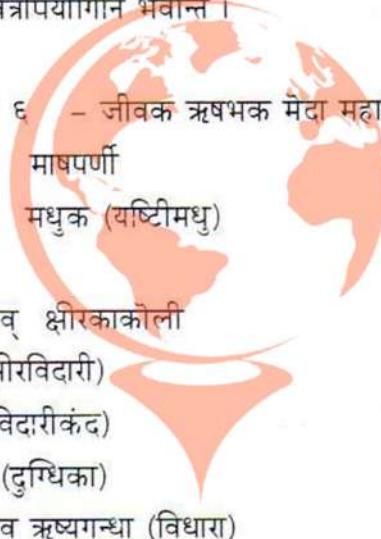
पयस्या (विदारीकंद)

राजक्षवक (दुग्धिका)

अश्वगंधा व ऋष्यगन्धा (विधारा)

भद्रौदनी (पीतबला)

वाक्यायनी (श्वेतबला)



शारद्वाजी (वनकार्पास)

#### ३) लेखनीय गण –

हरिद्रा व दारूहरिद्रा

वचा व हेमवती (श्वेतवचा)

कुष्ठ व अतिविषा

चित्रक व मुस्ता

कटुरोहिणी (कुटकी)

चीरबिल्व (करंज)

#### ४) भेदनीय गण –

शकुलादनी (कुटकी )

सुवहा (निवृत), चित्रा (दंती), स्वर्णक्षीरि , शंखिनी उरुबुक (ऐरंड)

अर्क चित्रक

अग्निमुखी (लांगली)

चिरबिल्व (करंज)

५) सन्धानीय गण –

लोधि	प्रियंगु	मोचरस	स्तंभक	कषाय रसात्मक
धातकी	कटफल	अम्बष्टा (पाठा)		

मधुक (यष्टि) मधुपर्णी (गुडूची)

पश्नीपर्णी समंगा (मंजिष्ठा / लज्जालु)

६) दीपनीय गण –

षड् उषण – पिप्पली पिप्पलीमूल चव्य चित्रक श्रङ्गबेर मरीच
अजमोदा हिंगु भल्लातकास्थी अम्लवेतस

७) बल्य गण –

बला	अतिबला		पयस्या (क्षीरविदारी)	ऋषभी (कपिकच्छु)
अतिरसा (शतावरी)	अश्वगंधा			
रोहिणी (कुटकी)	स्थिरा (शालपर्णी)			
ऐन्द्री	ऋष्यप्रोक्ता (मासपर्णी)			
शतावरी -- बल्य है वृंहणीय नहीं	अश्वगंधा -- बल्य व वृंहणीय			
अश्वगंधा -- बल्य व वृंहणीय	क्षीरविदारी -- बल्य व वृंहणीय			
बला = दल्त्य गण में - बला + अतिबला				
वृंहणीय गण में - श्वेतबला + पीतबला				

८) वर्ण गण –

सारिवा	मंजिष्ठा	चंदन	उशीर	- रक्तगामी
सिता (श्वेतदुर्बा)	लता (श्यामदुर्बा)			
मधुक (यष्टिमधु)	पयस्या (क्षीरविदारी)	- मधुर रसात्मक		
तुंग (नागकेशर) – केशर के अभाव में				
पदमक (पद्मकाष्ठ)				

९) कंद्य गण –

सारिवा	मधुक (यष्टिमधु)	द्राक्षा	विदारी = मांसगामी व वातज स्वरभेद
बृहती	कंटकारी	पिप्पली	कैटर्य (कटफल) = कफज स्वरभेद में
इक्षुमूल	हंसपादी	= आचूषण	

१०) हृदय गण –

आम्र	आम्रातक		
वृक्षाम्ल	अम्लवेतस	मातुलुंग	
करमर्द	कुवल (बडा बदर)	बदर	दाडिम
निकुच्			

११) तृप्तिघन गण –

चव्य	चित्रक	नागर	पिप्पली	- पिप्पलीमूल वर्जीत पंचकोल्
गुडूची	पटोल	मूर्वा	मुस्ता	- ज्वरातील तृप्तिघन कार्य
विडंग	वचा			

१२) अशोष्ण गण –

अभया (हरीतकी) – अभयारिष्ट

चव्य	चित्रक	नागर	- पंचकोल के प्रथम तीन् द्रव्य
दारूहरिदा	वचा	अतिविषा	
कूटज	बिल्व	- अपान पर कार्यकारी	
धन्वयास			

१३) कुष्ठघन गण –

खदिर – खदिरो कुष्ठघनानाम्			
आरग्वध	हरिदा	विडंग – कुष्ठघन	
अभया	आमलकी	- त्रिफला के दो द्रव्य	
भल्लातक	सप्तपर्ण	करबीर	जातीप्रवाल (जातीपत्र)
(निम्ब करंज बाकुची तुवरक चक्रमर्द – नहीं है)			

१४) कण्डूघन गण –

निम्ब	नक्तमाल (करंज)	दारूहरिदा	- कण्डूघन
कूटज	मुस्ता		
चंदन	नलद (जटामांसी)	मधुक (यष्टीमधु)	- त्वकगामी
सर्षप	- शीतपित्त में अभ्यंग से कण्डूघन कार्य		

१५) कृमीघन गण –

विडंग – विडंगं व्रिमध्नानाम्			
निर्गुण्डी – स्नायूक उमीपर कार्यकारी			
वृषपर्णिका	आखुपर्णिका	- कृमीकुठार रस भावना द्रव्य	
गण्डीर	केबुक	गोक्खुर	
किणिही (अपामार्ग)	अक्षीव	मरीच	- शिरोगत कृमी के लिए

१६) विषघ्न गण –

शिरीष – शिरीषा विषघ्नानाम्			
हरिदा	मंजिष्ठा	ऐला	चंदन - त्वकगामी
सुवहा (त्रिवृत)	पालिन्दी (कृष्ण त्रिवृत)	-	रेचक
कतक	- जलविषघ्न		
सिन्दुवार	श्लेष्मातक		

१७) स्तन्यजनन गण –

दर्भ	कुश	काश	- तृणपंचमूल के तीन्
------	-----	-----	---------------------

इत्कट कृष्ण इक्षुवालिका वीरण (उशीर) – तृणजातीय  
 गुन्दा (गुडूची)  
 शाले षष्ठिक – आहारीय द्रव्य  
 (शतावरी समाविष्ट नही)

१८) स्तन्यशोधन गण –

मूर्वा	गुडूची	वत्सकफल (इंद्रयव)	} तिक्त रसात्मक
किराततिक	पाठा	कटुरोहिणी (कुटकी) सुरदारू (देवदारू)	
महौषध (शुंठी)	मुस्ता – कटू रसात्मक		

सारिवा

१९) शुक्रजनन गण –

काकोली	क्षीरकाकोली	जीवक	ऋषभक	मेदा – अष्टवर्गोक्त ५
मुद्रपर्णी	माषपर्णी	– पर्णी द्रव्य		
जटिला (जटामांसी/उच्चटा)		कुलिंगा (उच्चटा भेद)		
वृद्धरूहा (शतावरी)				
(अश्वगंधा कपिकच्छु विदारी नही है)				

२०) शुक्रशोधन गण –

इक्षु	काण्डेक्षु	कोकिलाक्षा (क्ष समान)
कुष्ठ	कटफल	कदंब (क समान)
समुद्रफेन	ऐलवालुक	वसुक उशीर

२१) स्नेहोपग गण –

मृद्विका	मधुक (यष्टी)	विदारी – स्निग्ध
काकोली	क्षीरकाकोली	जीवक मेदा = अष्टवर्गोक्त ४
जीवन्ती		
मधुपर्णी (गुडूची)	शालपर्णी	

२२) स्वेदोपग गण –

ऐरंड	अर्क	शोभांजन (शिगृ)	पुनर्नवा वृशीर (शेत पुनर्नवा) = पत्रस्वेद
यव	तील	कुलथथ माष	= धान्ययुक्त उपनाह स्नेद
बदर			

२३) वर्मनोपग गण –

मधुक	मधु	= आकंठपान
शणपुष्पी	सदापुष्पी	प्रत्यकपुष्पी (अपामार्ग) = पुष्प आघाण
कोविदार (रक्त कांचनार)	कर्बुदार (शेत कांचनार)	= आमाशयाचे दार उघडणे
नीप (कदंब)	विदुल (हिज्जल)	बिम्बी = बाहेर पडते

२४) विरेचनोपग गण –

अभया	आमलकी	बिभितकी = त्रिफला
------	-------	-------------------

कुवल	बदर	कर्कन्थु	= बदर भेद्
द्राक्षा	काश्मर्य	परूषक	पीलु = रेचक द्रव्य

२५) आस्थापनोपग गण –

मदनफल	त्रिवृत	वचा	= क्वाथार्थ
शतपुष्पा	कुष्ठ	सर्षप	पिप्पली = प्रक्षेपार्थ
भधुक	बिल्व	वत्सक फल (इंद्रयव)	

२६) अनुवासनोपग गण –

रास्ना	सुरदारू	अनिमंथ	श्वदंष्ट्रा	इयोनाक	= वातहर
बिल्व	मदनफल	शतपुष्पा		= आस्थापनोपग में कोमन	
वृक्षश्विर (श्वेत पुनर्नवा)		पुनर्नवा		= स्वेदोपग में कोमन	

२७) शिरोविरेचनोपग गण –

ज्योतिष्मति	मरीच	पिप्पली	विडंग	} अपामार्ग तण्डुलीय अध्यायोक्त
शिग्गु	सर्षप	अपामार्ग		
श्वेता (अपराजिता)		महाश्वेता (अपराजिता भेद)	= इनको शिरोविरेचन देना है	
क्षवक = क्षवथु	= शिरोविरेचन			

२८) छर्दिनिग्रहण गण –

जम्बुपत्र	आम्रपत्र	उशीर	मृत्तिका	= स्तंभक
मातुलुंग	बदर	दाढ़िम	= अम्ल = हृद्य = छर्दिनिग्रहण	
यव	घटिक	लाजा	= छर्दिनिग्रहणार्थ आहारीय द्रव्य	

२९) तृष्णानिग्रहण गण –

मुस्ता	पर्पटक	हीबेर (उशीर)	चंदन	नगर = उदीच्य वर्जीत षडंगोदक
धन्वयास (दुरालभा)		किरातिक्क	गुड़ची	पठोल = ज्वरधन (ज्वर में तृष्णा)
धान्यक = धान्यक हिम				

३०) हिककानिग्रहण गण –

बृहती	कंटकारी	पिप्पली	पुष्करमूल	= प्राणवह स्त्रोतोगामी
शटी	कुलीरश्रृंगी (कर्कटश्रृंगी)			
वृक्षरूहा (बन्दाक)	अभया	दुरालभा	बदर	

३१) कासहर गण –

कण्टकारी = अग्न्य = कंटकारी	कासधार्नाम् / निदिग्धिका कासे)
अभया (हरीतकी )	आमलकी
दुरालभा	तामलकी (भूम्याम्लकी)
वृक्षरूहा (श्वेत पुनर्नवा )	पिप्पली
वृक्षरूहा (श्वेत पुनर्नवा )	रक्त पुनर्नवा
वृक्षरूहा (श्वेत पुनर्नवा )	पुनर्नवा = स्वेदोपग अनुवासनोपग कासहर

३२) श्वासहर गण –

शटी	पुष्करमूल	सुरसा	तामलकी	= प्राणवह स्त्रोतोगामी
-----	-----------	-------	--------	------------------------

अम्लवेतस	ऐला	हिंगु	अगरू	= उष्ण वीर्य
जीवनी	चण्डा (चोरपुष्टी)			

कासहर + श्वासहर = तामलकी

हिककानिग्रहण + श्वासहर = शटी पुष्करमूल

हिककानिग्रहण + कासहर = कर्कटश्रृंगी पिप्पली

### ३३) पुरीषविरजनीय गण –

शल्लकी	शाम्लली	श्रीवेष्टक	= निर्यास
--------	---------	------------	-----------

पयस्या (विदारीकंद)	कच्छुरा (कपिकच्छु)
--------------------	--------------------

मधूक (मोह)	जम्बु	उत्पल (नीलकमल)	तिल्
------------	-------	----------------	------

भृष्टमृत्तिका

### ३४) पुरीषसंग्रहणीय गण –

प्रियंगु	आम्रास्थी	कट्वंग (श्योनाक)	धातकीपुष्ट	स्तंभक
लोध	मोचरस	समंगा (लज्जाल)		
पदमा (भारंगी)	पद्मकेशर (कमलकेशर)			
अनन्ता (सारिवा / दुरालभा)				

### ३५) मूत्रसंग्रहणीय गण –

वट	उदुम्बर	अश्वत्थ	प्लक्ष	= पारीष वर्जीत पंचवल्कल
जम्बु	आम्र	अशमन्तक	सोमवल्क	(खदिर)
भल्लातक	कपीतन (आम्रातक)			

### ३६) मूत्रविरजनीय गण –

एद्ध	उत्पल	नलिन	कुमुद	सौगन्धिक	पुण्डरिक	शतपत्र	= कमल के ७ भेद्
मधुक (यष्टीमधु)	प्रियंगु			धातकीपुष्ट			

### ३७) मूत्रविरेचनीय गण –

दर्भ	कुश	काश	= तृणपञ्चमूल के प्रथम ३
गुन्दा	इत्कटमूल	= तृणजातीय	स्तन्यजनन में ५ समान है
गोक्खुर	वसुक (पुनर्नवा)	वशीर (सूर्यावर्त)	पाषाणभेद = मूत्रजनन
वृक्षादनी (बन्दाक)			

### ३८) शौथहर गण =

पाटला	अग्निमंथ	श्योनाक	बिल्व	काश्मरी	दशमूल
शालपर्णी	पृश्नीपर्णा	बृहती	कंटकारी	गोक्खुर	

### ३९) ज्वरहर गण –

अभया	आमलकी	बिभितकी	= त्रिफला
द्राक्षा	पीलु	परूषक	= विरेचक

सारिवा मंजिष्ठा

पाठा शर्करा

(गुडूची पटोल मूर्वा चंदन किराततिक्त समावेशीत नहीं)

ज्वरहर + विरेचनोपग = त्रिफला

कुष्ठघन + कासहर = विभितक वर्जीत त्रिफला

४०) श्रमहर गण –

द्राक्षा खर्जुर प्रियाल बदर दाढ़िम फलगु परूषक = फलवर्ग

यव षष्ठिक = आहारीय द्रव्य

इक्षु = इक्षुरस पान से श्रमहर कार्य

४१) दाहप्रशमन गण –

चन्दन काशमरी नीलोत्पल उशीर सारिवा हीबेर (सुगन्धवन्धा) = शीतवीर्य

मधूक (मोह)

गुडूची = उष्णवीर्य होनेपर भी दाहप्रशमन

लाजा शर्करा = आहारीय

४२) शीतप्रशमन गण –

वचा अगस्त कंटकारी पिप्पली शृंठी तगर = इनका लैप शीतप्रशमन

भूतीक (अजमोदा) धान्यक

• अनिमंथ श्योनाक

४३) उदर्दप्रशमन गण –

खदिर कदर (खदिर भेद) इरिमेद (विटखदिर) = खदिर के भेद

प्रियाल अर्जुन असन (विजयसार) = कषाय रसात्मक

निन्दुक चंदन

सप्तपर्ण अश्वकर्ण = पर्ण कर्ण = दर्द

४४) अंगमर्दप्रशमन गण –

विदारीगंधा (शालपर्णी) पृश्नीपर्णी बृहती कटकारी = गोक्षुरवर्जीत लघुपंचमूल

काकोली मधुक (यष्टि) = मधुर रसात्मक = वातशमन

उशीर चंदन

ऐरण्ड

४५) शूलप्रशमन गण –

पिप्पली पिप्पलीमूल चव्य चित्रिक श्रृंगबेर = षडूषण+अजमोदा = दीपनीय मै समान

अजाजी (जीरक) अजमोदा अजगंधा (अजमोदा भेद) = अजा का उदरशूल

गंडीर

४६) शोणितस्थापन गण –

मधुक (यष्टि) मधु (मध) शर्करा = मधुर रसात्मक

मोचरस मृत्कपाल लोधि गैरिक प्रियंगु = स्तंभक

लाजा रुधिर (केशर)

४७) वेदनास्थापन गण –

शाल	कदम्ब	पद्मक	- प्रभावाने कार्य
कटफल	शिरीष	मोचरस	अशोक - कषाय रस , स्तंभक
तुंब	वंजुल (जलवेतस)		ऐलवालुक

४८) संज्ञास्थापन गण –

हिंगु	कैटर्ड (कटफल)	वचा	पलंकष (गुगुल) - प्रधमन नस्य
जटिला (मांसी)	गोलोमी (भूतकेशी)	वयस्था (ब्राह्मी)	- मज्जागामी
चोरक	इरिमेट	अशोकरोहिणी ( कुटकी)	

४९) प्रज्ञास्थापन गण –

एन्द्री	ब्राह्मी	- दिव्य औषधी
शतदीर्घा (दुर्वा)	सहस्रवीर्या (दुर्वाभेद)	
अमोघा (पाटला)	अव्यथा (गुडूची)	शिवा (हरीतकी) - रसायन द्रव्य
अरिष्ठा (कुटकी)	वात्यपुष्टी (बला)	- बल्य गण
विष्वकसेनकन्ता (प्रियंगु)		

५०) वयस्थापन गण –

अभंया (हरीतकी)	धात्री (आमलकी)	- त्रिफला के दो द्रव्य
अमृता (गुडूची)	अतिरसा (शतावरी)	मण्डूकपर्णी - रसायन द्रव्य
जीवन्ती - जीवन - वयस्थापन		
पुनर्नवा - पुनः नवकारी इन्द्रिय चेतसाम् - वयस्थापन		
स्थिरा (शालपर्णी) - वय स्थिर करनेवाली		
मुक्ता (रासना ) } नाम की लड़कियों का वयस्थापन		
श्रेता (अपराजिता) }		

षटक कषायवर्ग –

जीवनीय	बृहणीय	लोखनीय
भेदनीय	सन्धानीय	दीपनीय

चतुष्क कषायवर्ग –

बल्य	वर्ण्	कंथ्	हुदय
------	-------	------	------

षटक कषायवर्ग –

कुष्ठधन	कण्डूधन	क्रिमिधन्
तृप्तिधन	अर्शोधन	विषधन्

चतुष्क कषायवर्ग –

स्तन्यजनन	स्तन्यशोधन	शुक्रजनन	शुक्रशोधन
-----------	------------	----------	-----------

**सप्तक कषायवर्ग –**

स्नेहोपग	स्वेदोपग	वमनोपग	विरेचनोपग
आस्थापनोपग	अनुवासनोपग	शिरोविरेचनोपग	

**त्रिक कषायवर्ग**

चार्दिनिग्रहण्	हिक्कानिग्रहण	तृष्णानिग्रहण्
----------------	---------------	----------------

**पंचक कषायवर्ग –**

पुरीषसंग्रहणीय	पुरीषविरजनीय
मूत्रसंग्रहणीय	मूत्रविरजनीय

**पंचक कषायवर्ग –**

कासहर	श्वासहर
शोथहर	ज्वरहर
	श्रमहर

**पंचक कषायवर्ग –**

दाहप्रशमन	शीतप्रशमन
उदर्दप्रशमन	अंगमर्दप्रशमन
	शूलप्रशमन

**पंचक कषायवर्ग –**

शोणितस्थापन	वेदनास्थापन	संज्ञास्थापन
प्रजास्थापन	वयस्थापन	

**महाकषाय फलश्रुती –**

अल्पबुधीनां व्यवहाराय बुधीमतां च स्वालक्षण्यानुमानयुक्तीकुशलानामनुकार्थज्ञानयेति ।  
मन्दानां व्यवहाराय बुधानां बुधीवृद्धये ।

# TIERRA

## दीर्घजिवितीय अध्याय

### अनुबंध चतुष्टय

1) अभिधेय – ज्ञान का विषय

हेतुदोषद्रव्य स्वरूप, स्कंदन्त्रय ज्ञान, रोगोत्पत्ती निराकरण

2) प्रयोजन

धातुसाम्य क्रिया चोक्ता तन्त्रस्यास्य प्रयोजनम् ।

3) संबंध

वाच्य वाचक लक्षण संबंध

4) अधिकारी

शास्त्रज्ञान का अधिकारी

### चरक संहितोक्त सूत्र प्रकार – 4

1) गुरुसूत्र – गुरुद्वारा कथित सूत्र

उदा. न एतद् बुधिमां द्रष्टव्यमग्निवेश ।

2) शिष्य सूत्र – शिष्यद्वारा उपस्थित शंका

उदा. न एतानि भगवन् पञ्चशतानि कुर्वन्ते ।

3) प्रतिसंस्कर्तु सूत्र – प्रतिसंस्कर्ता द्वारा उपस्थित प्रश्न

तम उवाच भगवानात्रेय ।

4) एकीय सूत्र – प्रसंगानुरूप अन्य आचार्य के सिधांत का उदाहरण देना ।

कुभीरस्य शिरः पूर्वम् अभिनिर्वत्ते इति कुमारशिरा भगद्वाजः ।

धर्म अर्थ काम मोक्ष आरोग्याणां मूलमुत्तमम् ।

त्रिसूत्र / त्रिसंकंध आयुर्वेद

हेतु सूत्र

**TIERRA**

लिंग सूत्र

औषध सूत्र

### 1) हेतु सूत्र

कालबुध्दी इन्द्रियार्थानां योगो मिथ्या न च अति च । द्रयाश्रयाणां व्याधीनां त्रिविधो हेतुसंग्रहः ।

काल इन्द्रियार्थ व कर्म – इनका हीन मिथ्या व अतियोग

द्रयाश्रय – शरीर व मन आश्रय

### 2) लिंग सूत्र – निदानपंचक

### 3) औषध सूत्र –

किंचिद् दोषप्रशमनं किंचिद् धातुप्रदूषणं । स्वस्थवृत्तौ मतं किंचिद् द्रव्यं त्रिविधं उच्यते ॥

1) दोषप्रशमन

2) धातुप्रदूषण

3) स्वस्थवृत्तकर

### षटपदार्थ ज्ञान – ज्ञानचक्षुद्वारा

ज्ञानदेवता – बुध्दी सिध्दी स्मृती मेधा धृती किर्ती क्षमा दया

### त्रिदंड –

सत्त्वं आत्मा शरीरं च त्रयम् इति त्रिदंडवत् ।

आयुर्वेद का अधिकरण –

स पुमान् चेतनं तश्च तच्चाधिकरणं स्मृतम् ।

आयुर्वेद का अधिकरण – चेतनायुक्त पुरुष

(अधिकरण = चिकित्सा का विषय)

कारण द्रव्य –

खादिन्यात्मा मनः कालो दिशश्च द्रव्यसंग्रहः । (प्रथम उल्लेखित द्रव्य = ख)

समवाय लक्षण –

समवायो अपृथगभावो भूम्यादिनां गुणैर्मतः । स नित्यो यत्र हि द्रव्यं न तत्रानियते गुणः ॥

समवाय – भूमी आदी से गुणों का अपृथगभाव ।

जहा द्रव्य होता है वहा गुण अनियत नहीं होता है (नियत होता है)

मानस रोग चिकित्सा सूत्र –

मानसो ज्ञानविज्ञान धैर्य स्मृति समाधिभिः ।

वात गुण –

रुक्षः शीतो लघु सूक्ष्मः चलः अथ विशदः खरः ।

पित्त गुण –

सस्नेहमुष्णं तीक्ष्णं च द्रवं अम्ल सरं कटु ।

प्राकृत रस - कटू व अम्ल

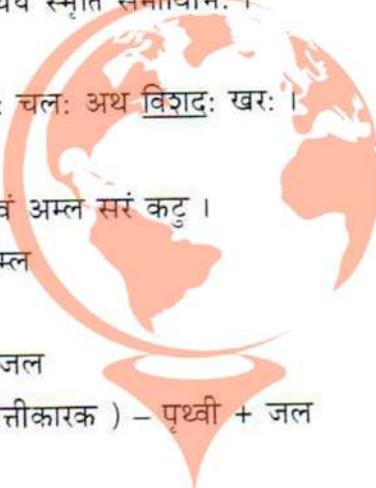
रस –

1) आधार द्रव्य – पृथ्वी + जल

2) निवृत्ती कारक द्रव्य (उत्पत्तीकारक) – पृथ्वी + जल

प्रभाव भेद से द्रव्य प्रकार –

1) शमन  
2) कोपन  
3) स्वस्थहित



उत्पत्ती भेद से द्रव्य प्रकार –

- 1) जांगम
- 2) औद्धिद
- 3) पार्थिव

औद्धिद द्रव्य प्रकार – 4

- 1) वनस्पती – फलैर्वनस्पतीः (केवल फल दृष्टिगोचर होते हैं)
- 2) वानस्पत्य – पुष्पैर्वनस्पत्य फलैरपि (पुष्प व फल दोनों दृष्टिगोचर)
- 3) औषधी – औषध्यः फलपाकान्तः ।
- 4) वीरूध – प्रतानैर्वीरूधः स्मृतः ।

औद्धिद द्रव्य के ग्राह्य अंग – मूल त्वक सार तैल कंटक इ. = 18

मूलिनी – षोडश मूलिनी

- 1) वमनार्थ – शणपुष्पी, बिम्बी, हेमवती (वचा) = 3
- 2) शिरोविरेचनार्थ – श्वेता (अपराजिता प्रकार), ज्योतिष्मती = 2

3) विरेचनार्थ – 11 हस्तीदंती, श्यामा, त्रिवृत, अधोगुडा, सप्तला, प्रत्यक्षश्रेणी, गवाक्षा विषाणिका, अजगंधा, द्रवन्ती, क्षिरिणी

फलिनी = 19

1) वमन व आस्थापनार्थ – 8 धामार्गव इक्ष्वाकु, जीमूतक, कृतवेधन, मदनफल, कूटज हस्तीपर्णी त्रपुष

2) शिरोविरेचनार्थ – 1 अपामार्ग

3) विरेचनार्थ – शोष 10

महास्नेह – चतुर्विध सर्पि तैल वसा मज्जा

पंचलबण – सैंधव सौवर्चल बिठ औद्दिद सामुद्र

मूत्र सामान्य गुण – दीपनीय विषधन क्रिमिघन

पांडुरोगोपसृष्टानां उत्तमं शार्म चोच्यते ।

1) श्लेष्माणं शमयेत् पीतं – पान करने से कफ शामक

2) मारुतं च अनुलोमयेत्

3) कर्षेत्पीतं अधोभागं ।

मूत्र प्रधान रस – कटू अनुग्रस – लवण

अष्टमूत्र गुणधर्म –

1) अविमूत्र – तिक्त स्निग्ध पित्तादिरोधी

2) अजा मूत्र – कषाय मधुर पथ्यकर दोषनाशक

3) गोमूत्र – मधुर, किंचित दोषधन, क्रिमिकुष्ठनुत्, कण्डूघन, उदर मे हितकर

4) माहिष मूत्र – अर्श शोफ उदरधन सक्षार सर

5) हस्तीमूत्र – कृमीकुष्ठनुत्, लवण रस, प्रशस्तं बद्धविषमूत्रं, विषश्लेष्मार्शसाम्

6) उष्ट्र मूत्र – तिक्त, श्वासकास अर्शोद्धन

7) वाजीमूत्र – निक्त कटू कुष्ठव्रण विषापहम्

8) ख्रर मूत्र (गर्दभ) – अपस्मार उन्माद ग्रहविनाशनम्

अष्टक्षीर – आवि अजा गो माहिष उष्ट्र नागी (हत्तिणी), वडवा (घोडी), स्त्री

दुग्ध सामान्य गुणधर्म – शमन शोधन दीपनीय

शोधनार्थ षड वृक्ष –

1) वमन – अश्मन्तक

2) विरेचन – स्नुहीक्षीर

3) उभयभागहर – अर्कक्षीर

4) विरेचन – पूतिक

5) विरेचन – तिल्वक

6) शोधन – कृष्णगंधा

औषधी ज्ञान – अवपा अजपा गोपा द्वारे प्राप्त करे ।

तत्त्वविद् –

योगविद् अपि रूपज्ञ तासां तत्त्वविद् उच्यते । किं पुनर्यो विजानीयादोषधीः सर्वथा भिषग ॥

जो औषधी के स्वरूप को न जानते हुए भी उसके प्रयोग को जानता है उसे तत्त्वविद् कहते हैं ।

### श्रेष्ठ चिकित्सक –

योगमासां तु यो विद्याद् देशकालोपपादितम् । पुरुषं पुरुषं वीक्ष्य स ज्ञेयो भिषगुत्तमः ।  
जो वैद्य प्रत्येक पुरुष की परीक्षा करके देश काल के अनुसार औषधीयो का प्रयोग करना जानता हो उसे  
उत्तम वैद्य जानना चाहिए ।

### अविज्ञात तथा विज्ञात औषधी प्रयोग परिणाम –

यथा विषं यथा शस्त्रं यथा अग्नि अशनिः यथा । तथा औषधीं अविज्ञातं विज्ञातं अमृतं यथा ॥  
विज्ञात औषधी – अमृतसमान हितकर  
अविज्ञात औषधी – विष शस्त्र अग्नि समान अहितकर

### हितीय अध्याय – अपामार्ग तण्डुलीय अध्याय

संग्रह पांचकर्मिक – पंचकर्मार्थं द्रव्यं वर्णन  
पंचकर्माणि कुर्वीत मात्राकालौ विचारयन् ।

### युक्ति महत्व –

मात्राकालाश्रया युक्तिः सिद्धिर्दुक्तौ प्रतिष्ठिता । सिष्ठत्युपरि युक्तिज्ञो द्रव्यज्ञानवतां सदा ॥  
औषध योजना (युक्ति) = मात्रा व काल इनके आश्रय से है  
युक्तौ सिद्धी प्रतिष्ठिता – युक्ति मे सिद्धी (सफलता) प्रतिष्ठित है ।  
द्रव्यज्ञानवान व्यक्ति से युक्तिज्ञ वैद्य श्रेष्ठ है ।

### 28 यवागू वर्णन –

- 1) शूलनाशन – पंचकोल सिद्ध
- 2) पाचनी ग्राहे पेया – दधित्थ, बिल्व चांगेरी, तक्र दाडिम सिद्ध
- 3) कृमीघ्न – विडंग पिप्पलीमूल शिगु मरिच तक्र सिद्ध
- 4) विषघ्न – सोमराजी (बाकुची ) सिद्ध
- 5) कार्शनाशन – वराहनिर्भूह सिद्ध
- 6) कर्षणी – गवेधुक भृष्ट + मधासह
- 7) वर्चोनिरसन (सारक) – शाक मांस तिल माष सिद्ध
- 8) सांग्राहिक – जम्बु आम्रास्थी दधि बिल्व
- 9) भेदन – यवक्षार चिन्क हिंगु अम्लवेतस
- 10) वातानुलोमक – अभया पिप्पलीमूल विश्वा
- 11) घृतव्यापद – तक्रसिद्ध
- 12) तैलव्यापद – तक्र + पिण्याक सिद्ध
- 13) विषमज्वरनाशन – गव्यमांसरस + अम्ल सिद्ध
- 14) कंठय – यव, यमक (घृत तैल ) सह
- 15) रेतोमार्गरूजापह – ताम्रचूडारस सिद्ध
- 16) वृष्य – माष विदल घृत क्षीर सिद्ध
- 17) मदनाशक – उपोदिका व दधिसिद्ध
- 18) क्षुधानाशन – अपामार्ग + गोथा रस

**तृतीय अध्याय – आरग्वधीय अध्याय**

बत्तीस सिद्धतम् चूर्ण प्रदेह वर्णन

अध्याय – 2 अंतः परिमार्जन

अध्याय – 3 बहिः परिमार्जन

अध्याय – 4 उभयपरिमार्जन

**पंचम अध्याय – मात्राशितीय अध्याय**

लघु व गुरु द्रव्य दोनो मात्रा की अपेक्षा करते हैं।

**1) लघु द्रव्य –**

वायु अग्नि गुण बहुलानि भवन्ति

अग्निसंधुक्षण स्वभावाणि

अल्पदोषाणि च उच्चन्ते सौहित्योपयुक्तानि ।

**2) गुरु द्रव्य –**

पृथ्वी सोम गुण बहुलानि भवन्ति

न अग्निसन्धुक्षण स्वभावानि

अतिमात्रं दोषवन्ति सौहित्योपयुक्तानि अन्यत्र व्यायाम अग्नि बलात् ।

**द्रव्यानुसार मात्रा –**

गुरु द्रव्य – त्रिभागसौहित्यं अर्धसौहित्यं वा गुरुणामुपदिश्यन्ते ।

लघु द्रव्य – न अति सौहित्यं

**अभ्यास अयोग्य द्रव्य – वल्लूर शुष्क शाक शालूक बिस्क कूर्चिका किलाट शौकर गव्य माहिष मास**

**मत्स्य दधि माष यवक**

**अभ्यास योग्य द्रव्य – मुदग षष्ठिक शाली, सैंधव यव आमलक अन्तरिक्ष जल पय सर्पि जांगल मांस मधु नस्य –**

वर्षे तर्हे अणुतैलं च कालेषु त्रिषु ता चरेन् । प्रावृट शरद वसंते गतमेघे नभस्नले ॥

प्रावृट शरद वसंत मे मेघ न होनेपर अणु तैल द्वारा नस्य प्रयोग करे ।

**अणु तैल निर्माण –**

चंदन अगरु दार्जी इ द्रव्य का 100 पट माहेन्द्र जल मे क्वाथ

1/10 शोष रखकर स्नेहसिध्दी, एकून 9 पाक

10 वा पाक अजादुग्ध सह करे ।

अणु तैल मात्रा – 1/2 पल

**क्षोरकर्म लाभ –**

पौष्टिक वस्त्रं आयुष्यं शुचि रूपविराजनम् । केशश्मश्रुनखादीनां कल्पनं संप्रसाधनम् ॥

इतर वर्णन – स्वस्थवृत्त नोट्स

**मुख मे सुगंधी द्रव्य धारण – जाती, कटुक (लताकस्तुरी), पूग, लवंगफल, कंकोल फल, ताम्बुलपत्र, कर्पूर**

**पादाभ्यंग – दृष्टिप्रसादन**

**पादत्राणधारण – चक्षुष्य**

## अध्याय – 6 तस्याशीतीय अध्याय

ऋतुचर्या वर्णन – स्वस्थवृत्त नोट्स  
ओकसात्म्य इति अभ्यास सात्म्य – गंगाधर

### सप्तमो अध्याय – नवेगान्धारणीय

#### व्यायाम –

लाघवं कर्मसामर्थ्यं स्थैर्यं दुःखसहिष्णुता । दोषक्षयो अग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते ॥  
अधिक व्यायाम हानी – श्रम क्लम क्षय तृष्णा रक्पित प्रतमक कास ज्वर छर्दि

#### व्यायाम लक्षण –

- 1) स्वेदागम
- 2) श्वासवृद्धी
- 3) गात्राणां लाघव
- 4) हुदयादी उपरोध

#### पादांशिक ऋम (हित अहित त्याग सेवन विधि )

एकांतर द्व्यंतर त्र्यंतर विधी से पादांशिक ऋम आचरण करे ।  
ऋमेण अपचिता दोषाः ऋमेण उपचिता गुणाः ।  
सन्तो याति अपुनर्भवं अप्रकम्प्य भवन्ति च ॥  
दोष = ऋम से अपचय करे । अपुनर्भव होता है  
गुण = ऋम से उपचय करे । अप्रकम्प्य (प्रकोप) नहीं होता है

#### प्रकृति –

दोषानुशयिता होषा देह प्रकृति उच्यते ।  
वातलादया सदातुराः – वातल आदी एकदोषज प्रकृति सदा आतुर होते हैं ।

#### अनुमान द्वारा ज्ञान –

- 1) मलायन गुरुताद्वारा – मल संग का
- 2) मलायन लाघवता द्वारा – मल क्षय का

#### दोष निर्हरण काल –

- 1) माधव (वैशाख के) प्रथम मासे – कफ का
- 2) नभरय (भाद्रपद के) प्रथम मास मे – वात का
- 3) सहस्य (पौष के) प्रथम मास मे – पित्त का

मानस व आगंतुज रोग हेतु – प्रज्ञापराध

#### आगंतुज रोग अनुत्पत्ती उपाय –

त्यागः प्रज्ञापराधानां इन्द्रियोपशमः स्मृतिः । देश काल आत्मविज्ञानं सदवृत्तस्यानुवर्तनम् ॥

#### दधि सेवन नियम –

रात्री मे व उष्ण काल मे सेवन निषेध  
घृत शर्करा मुदगयूष क्षोद्र आमलकी इनके सिवा दधि सेवन न करे ।

### अष्टम अध्याय – इन्द्रियोपक्रमणीय अध्याय

अतिन्द्रियं पुनः मनं सत्वसंज्ञकं चेत इत्याहुरेके ।

मन – अृतन्द्रिय

एकीय मतानुसार – मन = सत्व

तदर्तात्मसंपत्तदायत्तचेष्टं चेष्टाप्रत्ययभूतमिन्द्रियाणाम् ।

मन का व्यापार अपने सुख दुःखादी विषय व आत्मा की सम्पत (श्रेष्ठतः) के अधीन है तथा सभी इन्द्रियों की चेष्टाओं का प्रधान कारण है ।

#### मन के विषय ग्रहण की प्रक्रिया –

मनः पुरस्सराणि इन्द्रियाणि अर्थग्रहण समर्थाणि भवन्ति ।

#### अध्यात्म द्रव्यगुण संग्रह –

1) मन

2) मनोऽर्थ

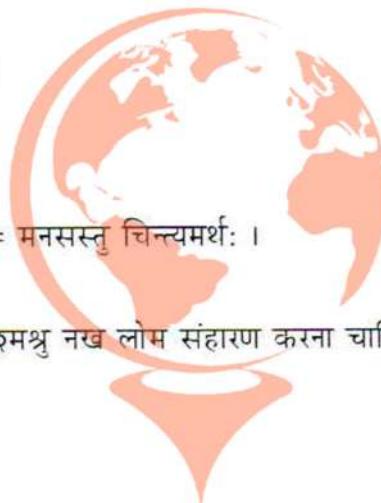
3) बुद्धी

4) आत्मा

मन का विषय / अर्थ – चिंता है = मनसस्तु चिन्त्यमर्थः ।

सदवृत्त वर्णन

एक पक्ष में तीन बार केश इमश्रु नख लोम संहारण करना चाहिए ।



#### नवमो अध्याय – खुड़ाकचतुष्पाद

#### चिकित्सा परिभाषा –

चतुर्णा भिषगादिनां शास्तानां धातुवैकृते । प्रवृत्तिः धातुसाम्यार्था चिकित्सा इति अभिधीयते ॥

#### 1) वैदय गुण –

1) श्रुते पर्यवदात्तत्व – शास्त्र का अच्छी प्रकार से ज्ञान रखना

2) बहुशो दृष्टकर्मता – अनेक बार रोग औषध निर्माण देखना

3) दाक्ष्य – समय अनुसार युक्ति की कल्पना करने में चतुर होना

4) शौच – पवित्रता रखना

#### 2) औषधी गुण –

1) बहुता – औषधी का अधिक रूप में प्राप्त होना

2) योग्यत्व – व्याधीनाश में समर्थ होना

3) अनेकविध कल्पना – स्वरस कल्क आदि कल्पना होना

4) संपत – औषधी अपने रस गुण वीर्य विपाकादी गुण से युक्त होना

#### 3) परिचारक गुण –

1) उपचारज्ञता – सेवा कार्य का पूर्ण ज्ञान

2) दाक्ष्य – चतुरता

3) अनुरागश्च भर्तरि – रूग्ण के प्रति प्रेम

4) शौच – पवित्रता

4) रोगी गुण –

- 1) स्मृती – स्मरणशक्ति
- 2) निर्देशकारीत्व – वैद्य की आज्ञाओं के पालन की प्रवृत्ति
- 3) अभीरूत्व – निर्भयता
- 4) ज्ञापकत्व – रेग तथा उपद्रव को अच्छी प्रकार से बता सकना

चिकित्सक प्रधानता –

विज्ञाता शासिता योक्ता प्रधानं भिषग अत्र तु ।

**प्राणाभिसर वैद्य लक्षण –**

तस्माच्छास्त्रार्थे अर्थविज्ञाने प्रवृत्तौ कर्मदर्शने । भिषक चतुष्टये युक्तः प्राणाभिसरः उच्यते ॥

- 1) शास्त्र के अध्ययन में तत्पर रहना
- 2) शास्त्र के अर्ध समझाने में परिश्रम करना
- 3) अन्यत्र हुए या होनेवाले कर्मों को बार बार देखना
- 4) स्वकर्म – कर्म स्वयं करना

**शस्त्रादी संबंध में पात्र महत्व –**

शास्त्र शात्राणि सलिलं गुणदोषप्रवृत्तये ।

पात्राणि अपेक्षीण्यतः प्रज्ञां चिकित्सार्थं विशोधयेत् ॥

**उत्तम वैद्य के 6 गुण –**

- 1) विद्या
- 2) विर्तक
- 3) विज्ञानं
- 4) स्मृती
- 5) तत्परता
- 6) क्रिया



# TIERRA

**शास्त्र व बुध्दी संबंध –**

शास्त्रं ज्योतीः प्रकाशार्थः – शास्त्र ज्योती समान

दर्शनं बुधिः आत्मनः – बुधिं दर्शन (नेत्र) समान है

**वैद्य वृत्ति – 4**

- 1) मैत्री
- 2) आर्तेषु कारुण्यं
- 3) शक्ये प्रिती – साध्य रोगों में प्रेमपूर्वक चिकित्स करना
- 4) प्रकृतिः तेषु भूतेषु उपेक्षणम् – असाध्य रोग या रोगी की उपेक्षा करना ।

**दशमो अध्याय – महाचतुष्पाद अध्याय**

चतुष्पाद संबंधी पूर्वपक्ष – मैत्रेय ने रखा

परीक्ष्यकारिणो हि कुशला भवन्ति ।

**साध्यासाध्यता –**

### साध्य के त्रिविधि विकल्प –

- 1) अल्प उपाय साध्य
- 2) मध्य उपाय साध्य
- 3) उत्कृष्ट उपाय साध्य

साध्यासाध्यता लक्षण – विकृतीविज्ञान नोट्स

### एकादशो अध्याय – स्तिस्त्रैषणीय अध्याय

#### त्रिविधि एषणा –

- |   |           |               |
|---|-----------|---------------|
| 1) प्राणैषणा  | 2) धनैषणा | 3) पारलोकैषणा |
| भेल संहिता मे धर्मैषणा का उल्लेख  |           |               |
| प्रत्यक्षं हि अल्पं अनल्पमप्रत्यक्षमस्ति, यद् आगम अनुमान युक्तिभिः उपलभ्यते । |           |               |

#### चतुर्विधि परीक्षा –

द्विविधि खलुअ सर्वं सत च असत् च तस्य चतुर्विधा परीक्षा आप्तोपदेशः प्रत्यक्षं अनुमानं युक्तिश्वेति

#### चतुर्विधि प्रमाण – पदार्थ विज्ञान नोट्स

#### त्रिविधि उपस्तंभ – आहार निदा ब्रह्मचर्य

#### त्रिविधि बल – सहज कालज युक्तिकृत

- 1) सहजं – यत् शारीर सत्त्वयोः प्राकृतं
- 2) कालज – ऋतुविभागजं वयकृतं च
- 3) युक्तिकृत – पुनः तद् आहार चेष्टायोगजम्

त्रिविधि आयतन – असात्मेद्विर्यार्थं संयोग, व्रम, काल इनका अयोग अतियोग मिथ्यायोग

#### स्पर्शनेंद्रिय का व्यापकत्व –

तत्र एकं स्पर्शनेंद्रियम् इन्द्रियानां इन्द्रियव्यापकं चेतसमवायि

सात्म्यार्थो हि उपशयार्थः ।

काल – कालः पुनः परिणाम उच्यते ।

#### त्रय रोग – निज आगंतु मानस

- 1) निज – शारीरदोष समुत्थ
- 2) आगंतु – भूत विष वाय्वादि अग्निसफ्हारादी समुत्थ
- 3) मानस – पुनः इष्टस्य अलाभात् लाभात् च अनिष्टस्य उपजायते ।

#### मानस रोग चिकित्सा सूत्र –

मानसं प्रति भैषज्यं त्रिवर्गस्य अन्वेषणम् । तदविद्यसेवा विज्ञानामात्मादिनां च सर्वशः ॥

#### त्रयो रोगमार्ग – शाखा मर्मास्थिसंधि कोष्ठ

#### त्रिविधि वैदय – छद्मचर सिध्दसाधित वैदयगुणयुक्त वैदय

- 1) छद्मचर वैदय – वैदय के भाण्ड औषध पुस्त पल्लव आदी अवलोकन कर वैदय शब्द को प्राप्त प्रतिरूपक कहा है
- 2) सिध्दसाधित – श्रीमान ज्ञानी यशस्वी सिध्द न होते हुए भी अपने को अ वैदय घोषित करता है
- 3) वैदय गुणयुक्त वैदय – प्रयोगज्ञानविज्ञान सिधिसिध्दाः सुखप्रदः ।  
इसे 'जीविताभिसर' कहा गया है ।

**त्रिविध औषध – दैवव्यपाश्रय, युक्तिव्यपाश्रय सत्त्वावजय**

- 1) दैवव्यपाश्रय – मन्त्र औषधी मणि मंगल बलि उपहार होम नियम प्रायश्चित्त उपवास स्वस्त्ययन इ.
- 2) युक्तिव्यपाश्रय – आहार औषध द्रव्यानां योजना
- 3) सत्त्वावजय – पुनः अहितेभ्यो अर्थेभ्यो मनोनिग्रहः ।

**त्रिविध औषध – अन्तःपरिमार्जन बहिःपरिमार्जन शस्त्रप्रणीथान**

- 1) अन्तःपरिमार्जन – अन्तःशरीरमनुप्रविश्य औषधम् आहारजातव्याधीन् प्रमार्जित
- 2) बहिःपरिमार्जन – अभ्यंग स्वेद प्रदेह परिषेक उन्मर्दन आद्यैः आमयान् प्रमार्जित
- 3) शस्त्रप्रणीथान – छेदन भेदन व्यधन दारण लेखन उत्पाटन प्रच्छान सीवन एषण क्षारानि जलौका

**द्वादशोऽध्याय – वातकलाकलीय**

वात पित्त व कफ संबंधी तद्विद्यसंभाषा परिषद वर्णन

**वात गुण – रूक्ष लघु शीत दारूण खर विशद**

**चतुर्विध कर्म वर्णन –**

- 1) प्राकृत वायु शरीरगत कर्म
- 2) विकृत वायु शरीरगत कर्म
- 3) प्राकृत वायु लोकगत कर्म
- 4) विकृत वायु लोकगत कर्म

**पित्त –**

**अग्नि –** अग्नरेव शरीरे पित्तान्तर्गतः कुपिताकुपितः शुभाशुभानि करोति ।

**सोम –** सोम एव शरीरे इलेष्मान्तर्गतः कुपिताकुपितः शुभाशुभानि करोति ।

**अध्याय – 13 स्नेहाध्याय व अध्याय 14 स्वेदाध्याय – पंचकर्म नोट्स**

# TIERRA

**पंचदशोऽध्याय – उपकल्पनीय अध्याय**

वमन विरेचनार्थ कल्पना संग्रह

**वमनार्थ – मधु मधुक सैंधव फाणितोपहितां मदनफल कषायमात्रां पाययेत् ।**

**मदनफल कषाय मात्रा –**

- 1) वैकारीक दोष हरणाय उपपदयते
- 2) न च अयोग अतियोगाय कल्पते
- 3) प्रतिपुरुष अपेक्षितव्यानि भवन्ति

**वमनात वेगप्रवर्थनार्थ उपाय –**

सुपरिलिखीत अंगुली /उत्पलकुमुद सौगम्यिक नाल याद्वारे कंठ स्थाने स्पर्शन

**विरेचन कर्म –**

**विरेचनार्थ – त्रिवृत कल्क 1 अक्ष मात्रा मे**

**पश्चात कर्म – धूमवर्जीत वमनोक्त विधि**

**संसर्जन क्रम –**

- 1) प्रधान शुद्धी – 12 अन्नकाल
- 2) मध्य शुद्धी – 8 अन्नकाल

3) अवर शुद्धि – 4 अन्नकाल

संशोधन लाभ –

मलापहं रोगहरं बलवर्नप्रसादनम् । पीत्वा संशोधनं सम्यगायुषा युज्यते चिरम् ॥

**षोडशोऽध्याय** – चिकित्साप्राभृतीय अध्याय

शोधन चिकित्सा श्रेष्ठता –

दोषाः कदाचित् कुप्यन्ति जिता लंघन पाचनैः ।

जिता: संशोधनैः ये तु न तेषां पुनरोद्धवः ॥

1) लंघन पाचन से जिते दोषों का पुनरोद्धव शक्य

2) शोधन से जिते दोषों का पुनरोद्धव शक्य नहीं

भेषजक्षपित रूगण –

भेषजक्षपिते पथ्यं आहारैः एव बृहणम् ।

भेषज से क्षपित रूगण में पथ्यकर आहार है बृहण होता है ।

बृःहणार्थ – धृत मांसरस क्षीर हुव्य यूष अभ्यंग उत्सादन इ.

शोधन अतियोग चिकित्सा –

अतियोगानुवधानां सर्पिःपानं प्रशस्यते । तैलं मधुरकैः सिध्मधवा अपि अनुवासनम् ॥

स्वभावोपरम वाद –

स्वभाव – स्वाभाविक रितिसे

उपरम – नाश :

जायन्ते हेतुवैषम्याद् विषमा देहधातवः । हेतुसाम्यात् समास्तेषां स्वभावोपरमः सदा ॥

देहपुष्टीकारक हेतुओं में विषमता – धातुओं में विषमता

देहपुष्टीकारक हेतुओं में समता – धातुओं में समता

धातुओं की शान्ति (नाश) स्वभाव से ही होती रहती है

स्वभावोपरमवाद का दार्शनिक आधार –

प्रवृत्तिहेतुभावानां न निरोधेऽस्ति कारणम् ।

केच्छितत्रापि अ मन्यन्ते हेतुं हेतोरवर्तनम् ॥

1) उत्पन्न होनेवाली वस्तुओं की प्रवृत्ती (उत्पत्ति) में कारण होता है

2) पर उसके निरोध (नाश) में कोइ कारण नहीं होता है

3) कुछ लोग हेतु का न होनाही नाश में कारण मानते हैं

अग्निवेश कृत प्रश्न –

प्रत्येक वस्तु स्वाभाविक रिति से नाश होती है तो ‘अग्निवैषम्य’ का भी स्वाभाविक रितिसे नाश होना चाहिए तो उसके लिए चिकित्सा प्राभृत वैद्य की आवश्यकता क्या है ?

आत्रेय द्वारा निराकरण –

न नाशकारण अभावाद् भावानां नाशकारणम् ।

ज्ञायते नित्यगस्येव कालस्य अत्ययकारणम् ॥

इस प्रकार नित्यग काल के अत्यय (नाश) का कारण ज्ञात नहीं होता उसी प्रकार (उत्पत्तीशील) प्रवृत्त भावपदार्थ के नाश के लिए भी कारण नहीं है ।

**चिकित्सा परिभाषा –**

याभिः क्रियाभिर्जायन्ते शरीरे धातवः समाः । सा चिकित्सा विकाराणां कर्म तद् भिषजां स्मृतम् ॥

**चिकित्सा उद्देश –**

- 1) धातुनां वैषम्यं न भवेत् इति । (धातुवैषम्य नहीं होता है)
- 2) समानां च अनुबन्धः । (धातुसाम्य का अनुबंध रहता है )

**धातुसाम्य प्राप्ति साधन –**

- 1) त्यागात् विषम हेतुनां
  - 2) समानां च उपसेवनात्
  - 3) विषमः न अनुबन्धाति जायन्ते धातवः समः ।
- विषमता का अनुबंध न होने से धातु सम रहते हैं

**चिकित्सा प्राभृत लाभ –**

- 1) धातुओं को सम रखता है
- 2) चिकित्साप्राभृतः तस्माद् दाता देहसुखायुषाम् ।

**अध्याय 17 क्रियन्तःशिरसीय अध्याय**

**शिर महत्व –**

प्राणाः प्राणभूतां यत्र श्रिता॒ सर्वेन्द्रियाणि च । यद् उत्तमांग शिरस्तदभिधियते ॥

शिरोरोग – पंच शिरोरोग

**कफज शिरोरोग –**

शिरे मन्दरूजं तेन सुप्तं स्तिमितभारिकम् ।

**कृमीज शिरोरोग –**

तील क्षीर गुडादी संकीर्ण भोजन

# TIERRA

असक कफ मांस स्थानी क्लेद उत्पत्ती

क्लेद से कृमी उत्पत्ती

जनयन्ति शिरोरोगं जाता बीभत्सलक्षणम्

लक्षण – व्यथेदरूजा कण्डु शोफ दौर्गत्य दुःखितम् ।

हुद्रोग – पंच हुद्रोग

**कफज हुद्रोग –**

हुदयं कफहुद्रोगे सुप्तं स्तिमितभारिकम् ।

तन्द्रा अरुची परीतस्य भवति अश्मावृतं यथा ॥

सुप्तं स्तिमितभारिकम् = कफज शिरोरोग व कफज हुद्रोग

**कृमीज हुद्रोग –**

हेतु - दुरात्मा व्यक्तीद्वारा तील क्षीरगुडादी सेवन

संप्राप्ति - हुदयस्थानी ग्रंथी उत्पत्ती

क्लेद उत्पत्ती - कृमी उत्पत्ती

मर्म एकदेशे संजाताः सर्पन्तो भक्षयन्ति च

लक्षण - तुदयमानं स हुदयं सुचीभिरिव मन्यते ।  
छिदयमानं यथा शस्त्रैर्जातिकण्डु महारूजम् ॥

वैशिष्ट्य - सुदारूण व शीघ्रकारिणम्

सान्निपातज हुद्रोग - कष्टसाध्य

दोषमानभेद विकल्प - 63

1) क्षीण दोष - 25

2) वृद्ध दोष - 25

3) सान्निपातज - 13

दोष कर्म -

1) दोषाः प्रवृद्धा स्वलिंगं दर्शयन्ति यथाबलम्

2) क्षीणाः जहति लिंगं स्वं

3) समाः स्वं कर्म कुर्वन्ति

क्षय प्रकार - 18

सप्तधातु सप्तमल त्रिदोष ओज

मलक्षय - मलायन शून्यता लघुता

ओज उत्पत्ती -

प्रथमं जायते ओजः शरीरे अस्मिन् शरिरिणाम् ।

सर्पिवर्ण , मधुरस, लाजगंधी

मधुमेह पिङ्का -

चरक - मधुमेह उपेक्षा से

सुश्रुत - प्रमेह उपेक्षा से

स्थान - मांसल अवकाश,

मर्म

संधि

संख्या - चरक - 7

सुश्रुत - 10

भोज - 9

काश्यप - 8

वर्णन –

1) शाराविका –

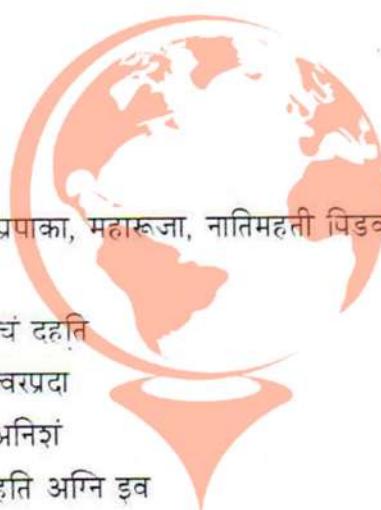
अन्ते उन्नत

मध्ये निम्न

क्लेदरुगान्विता इयाव, शारावाकृति संस्थिता

2) कच्छपिका –

3) जालिनी –



4) सर्षपी

सर्षपाभा, क्षिप्रपाका, महारूजा, नातिमहती पिडका

5) अलंजी –

उत्थाने त्वचं दहति

तृष्णामोहज्वरप्रदा

विसर्पति अनिशं

दुःखात दहति अग्नि इव

6) विनता –

पृष्ठ / उदर स्थाने

नील महती अवगाढ रूजा व क्लेदयुक्त पिडका

7) विद्रूधि – 2 प्रकार

1) बाह्य – त्वक स्नायु मांस स्थाने उत्पन्न

कण्डराभा, महारूजा

2) आभ्यंतर

पच्यमान विद्रूधी –

शस्त्रास्त्रैः भिदयत इव च उल्मुक इव दहयते

व्यम्लता – विदाह प्राप्ती

वृश्चिक इव दशयति

प्रमेहेतर पिडका –

विना प्रमेहं अपि एता जायन्ते दुष्टमेदसा:

प्रमेह के सिवा भी दुष्ट मेद से प्रमेह पिडका उत्पन्न होती है

तावत् च एता न लक्ष्यते यावद् वास्तुपरिग्रहा ।

वास्तुपरिग्रह (स्थानग्रहण) पश्चात ही प्रमेह पिडका का ज्ञान होता है

असाध्य पिङ्का –

प्रमेह पिङ्का मर्म अंस गुद हस्त स्तन संधि पाद स्थाने होनेपर प्रमेही जिवित नहीं रहता है  
चयादी गती – संचय प्रकोप प्रशम = कालकृत गती

दोष त्रिविध गती –

- |                          |          |                  |
|--------------------------|----------|------------------|
| 1) क्षय                  | 2) स्थान | 3) वृद्धी        |
| प्राकृती गती = स्थान     |          |                  |
| वैकृती गती = वृद्धी क्षय |          |                  |
| 1) उर्ध्व                | 2) अथः   | 3) तिर्यक        |
| 1) कोष्ट                 | 2) शाखा  | 3) मर्मास्थिसंधि |

प्राकृतस्तु बलं इलेष्मा विकृतो मल उच्यते । स चैवोजः स्मृतः काये स च पापोपदिश्यते ॥

प्राकृत इलेष्मा = बल = ओज

विकृत इलेष्मा = बल = पाप

**अध्याय 18 त्रिशोथीय अध्याय**

त्रिविध शोथ – वातज पित्तज कफज

द्विविध शोथ – निज आगांतुज

एक शोथ – उत्सेधसामान्यात 1 प्रकार

वातज शोथ	पित्तज शोथ	कफज शोथ
क्षिप्रोत्थानप्रशमो भवति नक्तं प्रणश्यति स्नेह उष्ण मर्दनाभ्यां च प्रणश्यति	पूर्व मध्यात प्रशूयत (मध्यस्थान से शुरूवात) तनुत्वक अतिसारी न च उष्णस्पर्श संहयति क्षिप्रोत्थान प्रशम भवति	निपिडितो न उन्नमति शस्त्रकुश छिन्नात शोणितं न प्रवर्तते । कृच्छेन पिच्छ स्त्रवति निशाबली

# TIERRA

स्थानानुसार शोथ साध्यासाध्यत्व –

- 1) पुरुष मे – पादभिः निवृत्तो सर्वांगो भवेत = कष्टसाध्य
- 2) स्त्रीयो मे – मुख से उत्पन्न व सर्वांगां भवेत = कष्टसाध्य
- 3) दोनो मे – गुद्याप्रभवज व उपद्रवयुक्त शोथ = कष्टतम

शोथ उपद्रव – 7

- 1) छर्दि
- 2) श्वास
- 3) अरुची
- 4) तृष्णा
- 5) ज्वर
- 6) अतिसार
- 7) दौर्बल्य

कर्णमूल शोथ – सान्निपातज ज्वर के अन्त मे उत्पन्न होता है

रोहिणी मारकत्व – 3 दिन

व्याधी भेद – अपरिसंख्येय = रूजावर्णसमुत्थान स्थान संस्थान नामभिः ।

समुत्थानानुसारा व्याधी विशेषत्व –

स एव कुपितो दोषः समुत्थानविशेषतः । स्तानान्तरगतच्चैव जनयति आमयान बहुन ॥

अविकारज वात कर्म –

उत्साह	उच्छ्वास	निश्चास
चेष्टा	धातुगती समा	समो मोक्षो गतीमतां

अविकारज पित्त कर्म –

दर्शन	प्रभा	प्रसाद	मेधा
पक्ति	उष्मा	देहमार्दव	
क्षुधा	तृष्णा		

अविकारज कफ कर्म –

स्नेह	बंध	स्थिरत्व	गौरव
वृष्टा	बल		
क्षमा	धृति	अलोभ	

अध्याय – 19 अष्टोदरीय अध्याय

सामान्यज व्याधी वर्णन

एकुण 48 व्याधीयो का वर्णन

षड उदावर्त – वात मूत्र पुरीष शुक्र छहि क्षवथु

पंच भक्तस्य अनशन स्थानानि (अरोचक – 5)

वातज पित्तज कफज सान्निपातज भक्तद्वेषजन्य

त्रिणि किलासाणी – 1) रक्त 2) ताम 3) शुक्रल

त्रिविध लोहितपित – 1) उर्ध्वमार्गज 2) अधोमार्गज 3) उभयमार्गज

द्वौ ज्वर – 1) उष्णाभिप्राय शीतसमुत्थ 2) शीताभिप्राय उष्णसमुत्थ

द्वौ ब्रण – 1) निज 2) आगैतुज

द्वौ आयाम – 1) वाह्यायाम 2) आभ्यन्तरायाम

द्वौ गृध्रसी – 1) वातज 2) वातकफज

द्वौ कामला – 1) कोष्ठाश्रीत 2) शाखाश्रीत

द्वौ आमदोष – 1) अलसक 2) विसूचिका

द्विविध वातरक्त – 1) उत्तान 2) गंभीर

दिविध अर्श – 1) शुष्क 2) आर्द्र

एक उरुस्तंभ इति आमत्रिदोषसमुत्थ

एक सन्त्यास त्रिदोषात्मको मनःशरीर अधिष्ठानः

एको महागद इति अतत्वाभिनिवेश

सर्व एव निज विकारा न अन्यत्र वातपित्तकफेभ्यो निवर्तन्ते ।

अध्याय 20 महारोगाध्याय

चत्वारो रोगा –

1) आगन्तु

2) वातज

3) पित्तज

4) इलेष्मनिमित्तज

रुक सामान्यात एक विकारो भवति

विकारः पुनः अपरिसंख्येयः

1) प्रकृति

2) अधिष्ठान

3) लिंग

4) आयतन

5) विकल्प

} अपरिसंख्येयत्वात्

आगंतु विकार परिभाषा –

आगन्तुहि व्यथा पूर्वं समुत्तन्नी जघन्यं वातपित्तश्लेष्माणं वैषम्यं आपादयति ।

पूर्व व्यथा = ततपश्चात् त्रिदोष वैषम्य

निज विकार परिभाषा –

निजे तु वातपित्तश्लेष्माणः पूर्वं वैषम्य आपद्यते, जघन्यं व्यथाभिनिर्वर्तन्ति ।

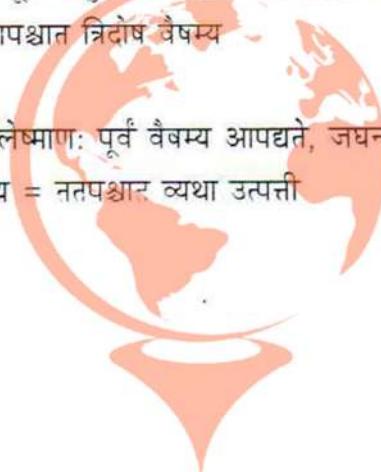
पूर्व मे दोष वैषम्य = नतपश्चात् व्यथा उत्पन्नी

दोष विशेष स्थान –

वात – पक्वाशय

पित्त – अमाशय

कफ – उर



नानात्मज विकार –

1) वात नानात्मज विकार – 80

पांगुल्य, खंजत्व, कुञ्जत्व, वामनत्व, हुन्मोह, हुद्रव, मूकत्व, कषायास्यता, अरसज्जता, बाधीर्य, अशब्दश्रवण तिमिर, अक्षिव्युदास, भ्रुव्युदास, तम, भ्रम, वेपथु, जृम्भा, हिक्का, विषाद

2) पित्तज नानात्मज विकार – 40

दवथु, अंगावदरण, शोणितक्लेद, मांसक्लेद, त्वक अवदरण, चर्मदल, तिक्कास्यता, लोहितगंधास्यता, पुतिमुखता अतृप्ति, जीवादान, तमप्रवेश

3) कफज नानात्मज विकार – 20

तृप्ती, तंद्रा, मलस्याधिक्य, बलासक, अ अपक्ति, धमनीप्रतिचय, शीताग्निता, उदर्द

वातज विकार – उरुस्तंभ, गृध्रसी, हिक्का उदार्वत इनका सामान्यज व नानात्मज विकार दोनो मे समावेश

पित्तज विकार – रक्पित्त कामला इनका सामान्यज व नानात्मज दोनो मे समावेश

रोग परीक्षा प्रथम कर्तव्य –

रोगमादौ परीक्षेत ततोऽनन्तरमौषधम् । ततः कर्म भिषक् पश्चाज्ज्ञानपूर्वं समाचरेत् ॥

अध्याय – 21 अष्टौनिन्दितीयाध्याय

अतिस्थूल दोष – 8

1) आयुषोहास – तस्य हि अतिमात्र मेदस्विनो मेद एव उपचीयते न तथा इतरे धातवः; तस्माद् आयुषो हास

2) जबोपरोध (उत्साहहानी) – शैथिल्यात् सौक्रमार्यात् गुरुत्वात् च मेदसो जबोपरोध

- 3) कृच्छव्यवायता – शुक्र अबहुत्वात् मंदसा आवृतमागत्वात् च कृच्छव्यवायता
- 4) दौर्बल्य – दैर्बल्यं असमत्वात् धातुनां
- 5) दौर्गम्य – मेदोदोषान्मेदसः स्वभावात् स्वेदनत्वात् च
- 6) स्वेदाबाध – मेदसः इलेष्मसंसर्गात् विष्णुदित्वात् बहुत्वात् गुरुत्वात् व्यायाम असहत्वात् च स्वेदाबाधः ।
- 7,8) क्षुदतिमात्रं पिपासातियोग – तीक्ष्णाग्नित्वात् प्रभूतकोष्ठवायुत्वात् च

मेदोरोग / अतिस्थूल संप्राप्ति –

मेदसा आवृतमार्गत्वात् वायुः कोष्ठे विशेषतः । चरन् संधुक्षयत्यग्निं आहारं शोषयत्यपि ॥  
तस्मात् स शीघ्रं जरयति आहारं चातिकांक्षति ॥

मेदाद्वारे वायु मार्ग अवरोध

वायु का कोष्ठ स्थाने गमन

अग्नि संधुक्षण

आहार शीघ्र जरण / शोषण

पुनः आहार आक्रांक्षा = मेदोरोग

मेदोरोग लक्षण –

- 1) चल स्फिक स्तन उटर
- 2) अयथा उपचय उत्साहो नरो अतिस्थूल उच्यते ।

अतिकृश दोष –

प्लीह कास क्षयः श्वासो गुल्माशो उदरानि च । कृश प्रायो अभिधावन्ति रोगाश्च ग्रहणीगताः ॥

**TIERRA**

अतिकृश लक्षण –

- 1) शुष्क स्फिक उदर ग्रीवा
  - 2) धमनीजालसततः
  - 3) त्वग् अस्थी शोषो
  - 4) स्थूलपर्वा
- स्थौल्य व काश्य मे काश्य वर (श्रेष्ठ )

समसंहनन पुरुष –

सममांसप्रमाणस्तु समसंहननो नरः । दृढ इन्द्रिय विकाराणां न बलेनाभिभूयते ॥

स्थूल चिकित्सा – गुरु अपतर्पण

कृश चिकित्सा – लघु संतर्पण

अतिस्थूल चिकित्सा –

वातधनानि अन्नपानानि इलेष्म मेदोहराणि च ।

रूक्षोष्णा बस्तयस्तीक्ष्णा रूक्ष उद्वर्तनानि च ॥

- 1) वातकफ्फन व मेदोधन अन्नपान
- 2) रूक्ष उष्ण तीक्ष्ण बस्ती

- 3) रुक्ष उद्वर्तन
- 4) गुडूची भद्रमुस्ता त्रिफला प्रयोग
- 5) तक्रारिष्ट
- 6) माद्धिक (मधु)
- 7) विडंग नागर क्षार काललोहरज मधु
- 8) यव आमलक चूर्ण
- 9) बिल्वादी पंचमूल (बहुत पंचमूल) + क्षोद्र
- 10) शिलाजतु + अग्निमंथ रस
- 11) प्रशातिका, प्रियंगु, इयामाक, यवक, यव, जूर्णाहा, कोट्रव, मुदग, कुलत्थ, चकमुदगक, आढकी पटोल आमलकी, अनुपानार्थ मधुदक व अरिष्ट

अतिकृश चिकित्सा –

- 1) मनसो निवृती (निवृत्ति: पुष्टिकरणां )
- 2) नव अन्न नव मदय ग्राम्य आनूप औदक रस
- 3) स्निग्ध उद्वर्तन
- 4) शुक्ल वासो
- 5) यथाकाल दोषावसेचन
- 6) रसायन.व वृष्य योग सेवन  
अचिन्तनाच्च कार्याणां ध्रुवं संतर्पणेन च ।  
स्वप्नप्रसंगाच्च नरो वराह इव पुष्टि ॥



निद्रा = स्वस्थवृत्त नोट्स

दिवास्वाप योग्य – अजीर्ण भृतक्षीण तृष्णा अतिसार शूल श्वास हिकका

रात्री जागरण व दिवास्वाप --

रात्रो जागरणं रुक्षं

दिवा स्वप्नं स्निग्धं

अरुक्ष अर्नभिष्टंदी तु आसीन प्रचलायितम् ।

निद्रानाश चिकित्सा –

- 1) अभ्यंग
- 2) उत्सादन
- 3) स्नान
- 4) ग्राम्य औदक आनूप मांस
- 5) दधिसह शाली अन्न
- 6) क्षीर स्नेह
- 7) अनुकुल मदय
- 8) संवाहन
- 9) चक्षु तर्पण
- 10) शिर व वदन स्थाने लेप

### अतिनिद्रा चिकित्सा –

- 1) कायविरेचन
- 2) शिरोविरेचन
- 3) छर्दन ( वमन)
- 4) भय चिंता ऋोध
- 5) धूमपान
- 6) व्यायाम
- 7) रक्तमोक्षण
- 8) उपवास
- 9) असुखकारक शाया
- 10) सत्व औदार्य व तमोजय

सतत व्याधीत पुरुष – अतिकृश अतिस्थूल

### अध्याय – 22 लंघनबृहणीय अध्याय

#### षडविध उपक्रम –

- 1) लंघन – यत् किंचित् लाघवकरं देहे तत् लंघनं स्मृतम् ।
  - 2) बृहण – बृहत्वं यत् शरीरस्य जनयेत् तच्च बृहणम् ।
  - 3) रूक्षण – रौक्ष्य खरत्वं वैशदयं यत् कुर्यात् तद् हि रूक्षणम् ।
  - 4) स्नेहन – स्नेहनं स्नेहं विष्वन्दं मर्द्व क्लेटकारकम् ।
  - 5) स्वेदन – स्तम्भ गौरव शीतघ्नं स्वेदनं स्वेदकारकम् ।
  - 6) स्तंभन – स्तम्भनं स्तम्भयति यद् गतीमन्तं चलं धूवम् ।
- गतीमन्त – प्रव्यक्त गतीमन्त                  उदा. अतिसार में मल की गती
- चल – किंचित् गतीमन्त                  उदा. रक्तजूती में रक्त की गती

#### शोधन प्रकार –

चतुष्प्रकारा संशुद्धिः पिपासा मारुत आतपा ।  
 पाचनानि उपवासश्च व्यायामश्चेति लंघनम् ॥  
 चतुष्प्रकारा इति अनुवासन वर्जयित्वा, तस्य बृहणत्वात् ।

#### 1) शोधनाद्वारा लंघनीय पुरुष –

- 1) प्रभुत इलेष्म पित्त अस्त्र मलाः
- 2) संसूज्ज मारुता:
- 3) बृहत शरीर
- 4) बलवान्

#### 2) पाचनाद्वारा लंघनीय पुरुष

- 1) कफपित्त समुथित रोग जिनके मध्यम बल के होते हैं
- 2) वमन, अतिसार, हुद्गोग, विसूचिका, अलसक, ज्वर विबंध, गौरव, उदगार, हुल्लास, अरोचक

3) पिपासा निग्रह व उपवासाद्वारे लंघनीय पुरुष –

उपरोक्त व्याधी (वमन अतिसार इ.) अल्प बल होनेपर सर्वव्यक्ति के लिए लंघन योग्य ऋतु –

त्वगदोषिणां प्रमीढानां स्निग्धाभिष्ठंदिबृंहिणाम् ।

शिशिरे लंघनं शास्त अपि वातविकारिणाम् ॥

सर्वव्यक्ति के लिए बृंहण योग्य ऋतु –

ग्रीष्म

बृंहण द्रव्य – स्नान, उत्सादन, स्वप्न, मधुर स्नेह बस्ती

रक्षण द्रव्य –

कटुतिक्त कषायाणां सेवनं स्त्रीषु असंयम ।

खलि पिण्याक तक्राणां मध्वादीनां च रक्षणम् ॥

रक्षण योग्य पुरुष –

1) अभिष्ठण आनन

2) महादोषा

3) मर्मस्थ व्याधी

4) उरुस्तंभ आदी व्याधी

स्तंभन द्रव्य –

द्रव, तनु, असरं, शीतीकरण

स्वादु तिक्त कषाय



स्तंभनीय पुरुष –

1) पित ध्वार अग्निदग्धा ये

2) वम्य अतिसार पिडिता

3) विषस्वेदातियोगार्ता

# TIERRA

स्तम्भन अतियोग –

इयावता, स्तब्धगात्रत्व, उद्वेग, हनुसंग्रह, हुदवर्चोनिग्रह

क्रव्यात् मांसाद्वार बृंहण – शोष, अर्श, ग्रहणी दोष आदीसे कर्तित (अज्य)

अध्याय – 23 संतर्पणीय अपतर्पणीय अध्याय

संतर्पणोत्थ व अपतर्पणोत्थ व्याधी – विकृती नोट्स

संतर्पणोत्थ व्याधी चिकित्सा –

1) उल्लेखन

2) विरेचन

3) रक्तमोक्षण

4) व्यायाम उपवास धूम स्वेदन

5) सक्षोद्र अभया प्राश (अगस्तीप्राश)

6) रुक्ष अन्न सेवन

7) कण्डू कोठ नाशक चूर्ण प्रदेह

- योग –
- 1) त्रिफलादी कषाय
  - 2) मुस्तादी क्वाथ
  - 3) कुष्ठादी चूर्ण
  - 4) न्युषणादी मंथ
  - 5) व्योषादी सतु

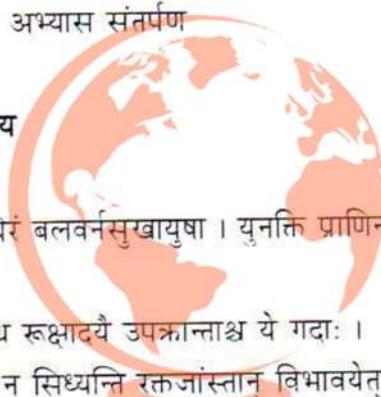
व्यायाम नित्यो जीणांशी यवगोधूम भोजनः ।

संतर्पणकृत दोषेः स्थोल्यं मुक्त्वा विमुच्यते ॥

नित्य व्यायाम, यवगोधूम भोजन, आहार जीर्न पश्चात पुनः भोजन

#### संतर्पण भेद –

- 1) सद्य संतर्पण
- 2) अभ्यास संतर्पण



#### अध्याय – 24 विधिशोणीतीय अध्याय

##### रक्त प्रशस्ती –

तद् विशुद्धं हि रूधिरं बलवर्नं सुखायुषा । युनक्ति प्राणिनां प्राणः शोणितं हि अनुवर्तते ॥

##### रक्तज रोग निर्णय –

शीत उष्ण स्निग्ध रूक्षादयै उपक्रान्ताश्च ये गदाः ।  
सम्यक साध्या न सिध्यन्ति रक्तजांस्तान् विभावयेत् ॥

##### रक्तज रोग चिकित्सा रूप्त्र –

कुर्यात् शोणितरोगेषु रक्तपित्तहरी क्रियाम् ।  
विरेक उपवासं च स्त्रावणं शोणितस्य च ॥

##### मद मूर्च्छा संन्यास संप्राप्ति –

हेतु - मलिन आहार शील व्यक्ति, रजोबहु आवृत्त मन

प्रकुपित दोष

रसवह, रक्तवह, संज्ञावह स्त्रोतस मे अधिष्ठित

मद मूर्च्छा संन्यास उत्पत्ति

मद ----- मूर्च्छा ----- संन्यास = यथोत्तर बलवान

##### 1) मद रोग –

दुर्बलं चेतसः स्थानं यदा वायुः प्रपद्यते । मनो विक्षोभयोजन्तोः संज्ञां संमोहयेत् तदा ॥

दुर्बल चेत स्थान (हुदय)

वायु प्रतिपादन

मन विक्षोभन

↓  
संज्ञा संमोहन = मद उत्पत्ती

मद संख्या – चत्वारे मदः वातज पित्तज कफज सान्निपातज  
विषज व रक्तज मद केवल उल्लेख मूर्च्छा

**मूर्च्छा – चत्वारे मूर्च्छा**

वातज मूर्च्छा	पित्तज मूर्च्छा	कफज मूर्च्छा	सान्निपातज मूर्च्छा
नील कृष्ण अरुण वर्ण देखकर तमप्रवेश	रक्त हरीत पीत वर्ण देखकर तमप्रवेश	मेघयुक्त आकाश देखकर तमप्रवेश	----
शीघ्रं च प्रतिबुध्यते	स स्वेदः प्रतिबुध्यते	चिराच्च प्रतिबुध्यते	अपस्मार इवागतः
वेपथु अंगमर्द हुटयपीडा	पिपासा संताप रक्तपीतकुलेक्षणः	प्रसेक हुल्लास	स जन्मं पातयति आशु विना बीभत्स चेष्टितैः

**संन्यास –**

वागदेह मनसां चेष्टा आक्षिपति अतिबला मलाः ।  
 संन्यास तु बलं जन्मं प्राणायतन संश्रिताः ॥  
 स ना संन्यास संन्यस्तः काष्ठीभूतो मृतोपमः ।  
 प्राणैवियुज्यते शीघ्रं मुक्त्वा सदयः फलाः क्रिया : ॥  
 अतिबलवान मलाद्वारे (दोषाद्वारे) वाक देह मन चेष्टा का आक्षेपण

↓  
संन्यस्थ मनुष्य अबल युक्त

↓  
काष्ठीभूतो मृतोपमा

सद्य क्रिया न अरनेपर शीघ्रं प्राण निकल जाते हैं ।

**संन्यास चिकित्सा –**

- 1) तीक्ष्ण अंजन, अवपीड, धूम, प्रथमन
- 2) सूचीद्वारे तोद, दाह
- 3) नखान्तरे पीडा
- 4) केश व लोम लुंचन
- 5) दन्ताद्वारे दशन
- 6) आत्मगुप्ता अवघर्षण
- 7) प्रभुत कटू तीक्ष्ण द्रव्य, मदय आदी मुख में डालना
- 8) विस्मापन, स्मारन
- 9) उन्माद प्रकरणातर्गत वर्णित 28 औषधीयुक्त पानीय कल्याणक घृत प्रयोग

**मद मूर्च्छा संन्यास भेद / वैशिष्ट्य –**

दोषषु मदमूर्च्छायाः कृतवेगेषु देहिनाम् ।

स्वयम् एत उपशाम्यति संन्यास न औषधी विना ॥

मद व मूर्च्छा मे वेग गमन पश्चात रूण श्वयम प्राकृत अवस्था मे आता है

संन्यास मे औषध विना प्राकृत अवस्था मे नही आता है

संन्यास उपमा –

दुर्गेऽम्भसि यथा मज्जत भाजनं त्वरया बुधः । गृहणीयात तलं अप्राप्तं तथा संन्यास पिडितः ॥  
जिस प्रकार जल मे ढूबने वाले पात्र को त्वरा से नही निकाला गया तो वो जल मे तल को प्राप्त होता है उसी प्रकार संन्यास रूग्ण मे त्वरीत चिकित्सा करनी चाहिए ।

अध्याय – 25 यज्ञःपुरुषीय अध्याय

राशी पुरुष उत्पत्ती व रोग उत्पत्ती विषयक संभाषा परीषद वर्णन  
हिताहारोपयोग एक एव पुरुष वृद्धीकरो भवति ।  
अहिताहार उपयोगः पृनः व्याधी निमित्त इति ।

आहार भेद –

- 1) अर्थाभेदात = 1
- 2) योनीभेद से 2 = स्थावर जांगम
- 3) प्रभाव भेदस से = 2 = हितकर , अहितकर
- 4) उपयोग भेद से = 4 पान, अशन, भृत्य लेह
- 5) आस्वाद भेद से = 6
- 6) गुण भेद से = 20
- 7) संयोग करण बाहुल्यात् अपरिसंख्येय

हिततम अहिततम – पाठांतर नोट्स

अग्न्य संग्रह –

अग्न्य निर्देश – 152

गणना – 157

पथ्य – पथोऽनपेतं यद् यच्च उक्तं मनसः प्रियम् ।

आसव संख्या – 84

आसव योनी – 9

धान्यासव – 6

मूलासव – 11

पुष्पासव – 10

पत्रासव – 2

शर्करासव – 1

फलासव – 26

काण्डासव – 4

त्वगासव – 4

अध्याय – 26 आत्रेयभद्रकाष्टीय अध्याय

रस संख्याविषयक संभाषा परिषद वर्णन

पांचभौतिक द्रव्य गुणधर्म

- 1) पार्थिव – गुरु खर कठिन मंद स्थिर विशद सान्द्र स्थूल गन्धगुण बहुलानि  
तानि उपचय संघात गौरव स्थैर्यकरणि
- 2) जलीय – द्रव शीत स्निग्ध मन्द मृदू पिच्छिल रस गुणबहुलानि  
तानि उपक्लेद स्नेह बन्ध विष्यन्द मार्दव प्रल्हादकरणि

3) तैजस – उष्ण तीक्ष्ण सूक्ष्म लघु रूक्ष विशद रूप गुण बहुलाने

तानि दाह पाक प्रभा प्रकाश वर्णकरणि

4) वायव्य – लघु शीत रूक्ष खर विशद सूक्ष्म स्पर्श गुण बहुलानि

तानि रौक्ष्य ग्लानि विचार वैशदय लाघवकरणि

5) आकाशीय – मृदू लघु सूक्ष्म इलक्षण शब्द गुण बहुलानि

तानि मार्दव सौषिर्य लाघवकरणि

**सर्व द्रव्य पांचभौतिक –**

अनेनोपदेशेन नानौषधिभूतं जगति किंचिद् द्रव्यमुपलभ्यते तां तां युक्तिमर्थं च तं तमभिप्रेत्य ।

**द्रव्य कार्यकारीत्व –**

न तु केवलं गुणप्रभावादेव द्रव्याणि कार्मुकाणि भवन्ति ;

द्रव्याणि हि –

1) द्रव्यप्रभावाद्

2) गुणप्रभावाद्

3) द्रव्यगुणप्रभावाच्य

1) यत् कुर्वन्ति तत् कर्म

2) येन कुर्वन्ति तद् वीर्यं

3) यत्र कुर्वन्ति तद् अधिकरणम्

4) यदा कुर्वन्ति स कालः

5) यथा कुर्वन्ति स उपायः

6) यत् साधयन्ति तत् फलम्

कार्मुकाणि भवन्ति

**रसभेद विकल्प – 63**

1) दो रस संयोग – 15

2) तीन रस संयोग – 20

3) चार रस संयोग – 15

4) पंच रस संयोग – 6

5) षड रस संयोग – 1

6) एक रस वाले द्रव्य – 6

इनमे 62 भेद कुपित दोष शान्त्यर्थ

63 वा भेद दोषो को प्राकृतावस्था मे बनाये रखता है ।

# TIERRA

**रस तथा दोष विकल्प ज्ञान महत्व –**

यः स्याद्रसविकल्पजः स्यात् दोषविकल्पवित् ।

न स मुह्येद्विकारणां हेतुलिंगोपशान्तिषु ॥

**रस अनुरस लक्षण – ।**

व्यक्तः शुष्कस्य चादौ च रसो द्रव्यस्य लक्ष्यते । विपर्येण अनुरसो

गुण व रस वर्णन – द्रव्यगुण 1 नोट्स

**विस्तृध वीर्य द्रव्य उदाहरण –**

1) मधुर रसात्मक द्रव्य – शीत वीर्य होने चाहिए पर – अनूप आमिष = उष्ण वीर्य

- 2) कषाय त्रिक्त रस द्रव्य शीत वीर्य होने चाहिए पर – महत पचमूल – उष्ण वीर्य
- 3) लवण रसात्मक द्रव्य उष्णवीर्य होते हैं पर – सैंधव – शीत वीर्य
- 4) अम्ल रसात्मक द्रव्य उष्ण वीर्य होते हैं पर – अम्लकी – शीत वीर्य
- 5) तिक्त रसात्मक द्रव्य शीत वीर्य होते हैं पर – अर्क अगरू गुडूची – उष्ण वीर्य

अन्य अपवाद –

- 1) कुछ अम्ल रसात्मक द्रव्य संग्राही होते हैं उदा. कपित्थ  
कुछ अम्ल रसात्मक द्रव्य भेदन होते हैं उदा. आपलकी
- 2) कटू रसात्मक द्रव्य अवृष्टि होते हैं पर पिप्ली नागर वृष्टि होते हैं
- 3) सर्व कषाय रसात्मक द्रव्य स्तंभन व शीत होते हैं अपवाद हरीतकी – उष्ण व अनुलोमन  
विपाक वीर्य व प्रभाव – द्रव्यगुण नोट्स

विरोधी आहार –

मत्स्य व क्षीर उभय मधुर रस मधुर विपाक व महाभिष्ठंदी है  
मत्स्य उष्ण वीर्य व क्षीर शीत वीर्य होने से दोनों वीर्य विरुद्ध हैं।  
विरुद्ध वीर्य होने से – शोणितप्रदूषण  
महाभिष्ठंदी होने से – मार्गोपरोध करते हैं  
सर्व मत्स्य + क्षीर विरुद्ध विशेषतः चिलचिम मत्स्य

अन्य विरुद्ध उदाहरण –

- 1) सर्षप तैल भृष्ट पांचकर वा गेहिणी शाक
- 2) कपोत मांस मधु व दुग्ध सह सेवन
- 3) मूलक लशून कृष्णगंधा अर्जक सूमुख सुरसा आदी सेवन पश्चात् क्षीरपान – कुष्ठ भय
- 4) मधु व दुग्ध सह जानुक शाक
- 5) पक्व निकुच सह माष सूप गुड सती
- 6) मधु सह उष्ण द्रव्य या उष्ण मंस्कार
- 7) मधु घृत सममात्रा में
- 8) मधु + अंतरिक्ष जल सम मात्रा में
- 9) मधु पुष्करबीज एकत्र सेवन
- 10) भल्लातक पश्चात् उष्णोदक
- 11) तक्रसिध्द कम्पिल्लक
- 12) पर्युषित काकमाची
- 13) अंगारशूल्य भास पक्षी मास

# TIERRA

विरुद्ध आहार परिभाषा –

यत् किंचित् दोषमास्त्राव्य न निर्हरति कायतः । आहारजातं तत् सर्वमहितायोपपदयते ॥

विरोधी आहार घटक – 18

- 1) देश विरुद्ध – धन्व देश या मरुभूमि में रुक्ष तीक्ष्ण आदी द्रव्य सेवन करना  
आनूप देश में स्निग्ध शीत द्रव्य सेवन करना
- 2) कालविरुद्ध – शीत काल में शीत रुक्ष आदी सेवन  
उष्ण काल में कटू उष्णादी सेवन

- 3) अग्निविरुद्ध – चतुर्विधि अग्निनुसार आहार न लेना
- 4) मात्राविरुद्ध – मधु सर्पि सम मात्रा मे सेवन
- 5) सात्यविरुद्ध – कटू उष्णादी सात्य व्यक्तीद्वारा स्वादु शीतादी सेवन
- 6) दोषविरुद्ध – वात पित्त कफ इनके समान गुण व अभ्यास विरुद्ध आहार औषध व कर्म का अभ्यास
- 7) संस्कार विरुद्ध – एरण्डसीसकासक (एरंड काष्ठ मे छेद कर भर्जित) शिखी मांस
- 8) वीर्य विरुद्ध – शीत व उष्ण वीर्य द्रव्य एकत्र सेवन
- 9) कोष्ठ विरुद्ध – कूर कोष्ठ व्यक्ती द्वारा अत्यल्प मन्दवीर्य अभेदन आहार वा औषध सेवन  
मृदू कोष्ठ व्यक्ती द्वारा गुरु भेदनीय व बहु मात्रा मे आहार वा औषध सेवन
- 10) अवस्था विरुद्ध – श्रम व्यवाय व्यायाम आसक्त व्यक्ती द्वारा वातकर आहार सेवन  
निद्रा आलसी व्यक्तीद्वारा कफकर आहार सेवन
- 11) ऋग विरुद्ध – मल मूत्र त्याग न करते हुए बिना बुभुक्षा भोजन करना
- 12) परिहार विरुद्ध – वराहादी मांस सेवन पश्चात उष्ण द्रव्य सेवन
- 13) उपचार विरुद्ध – घृत आदी स्नेहपान पश्चात शीत आहार औषध वा जल सेवन
- 14) पाक विरुद्ध – दुष्ट दुर्दारू सिध्द अथवा अपक्व अत्यर्थ पक्व तन्दुल सेवन
- 15) संयोग विरुद्ध – अम्ल सह पय सेवन
- 16) हुदय विरुद्ध – अमनोरुचीत आहार सेवन
- 17) संपद विरुद्ध – असंजात रस, अतिक्रान्तरस, विपन्नरस आहार या औषधी सेवन
- 18) विधी विरुद्ध – एपान्त भोजन न किया जाय आदी आहार विधी विधान नुसार भोजन न करना

**विरुद्ध आहार जन्य व्याधी प्रतिकार –**

- 1) वमन, विरेचन
- 2) विरोधी द्रव्यो का संशमनार्थ उपयोग
- 3) प्रथम ही विरुद्ध आहार के समान द्रव्यो से शरीर का अभिसंस्कार  
विरुद्धाशनजान् रोगान् प्रतिहन्ति विरेचनम् । वमनं शमनं चैव पूर्वं वा हितसेवनम् ॥

**विरुद्ध आहार का परिणाम न होनेवाले व्यक्ती –**

- 1) सात्य होना
- 2) अल्प मात्रा मे विरुद्ध आहार सेवन
- 3) दीप्ताग्नी होना
- 4) तरुणावस्था
- 5) स्निग्ध आहार सेवी
- 6) व्यायाम करनेवाले व बलवान

## अध्याय – 27 अन्नपानविधी

आहार उपयोगी वर्ग – 12

शूक्रधान्य – मधुर मधुर शीत , बद्ध अल्पवर्चस , बृंहण, शुक्रल व मूत्रल

शालीवर्ग मे – रक्तशाली श्रेष्ठ

महाशाली उससे न्यून व कलम शाली महाशाली से न्यून गुणात्मक

षष्ठिक वर्ग मे – गौर षष्ठिक श्रेष्ठ

षष्ठिक गुणधर्म – शीत स्निग्ध अगुरु त्रिदोषधन

ब्रिही धान्य – मधुर रस, अम्लविपक्ति, = पित्तकर

यव – रूक्ष,, शीत, अगुरु , बहुवातकृत व शक्तकृत स्थैर्यकृत श्लेष्मविकारनुत

गोधूम – संधानकर स्थैर्यकर प्रकार - 2 नान्दीमुखी व मधुली

**शामीधान्यवर्ग** –

मुटग – कषाय मधुर रूक्ष लघु शीत कटु विपाकी सूखोत्तमो मतः

माष – वृष्णि, स्निग्ध वातहर बहुमलकृत उष्णवीर्य पुस्त्वकर

कुलत्थ – कषाय रस अम्लविपाकी उष्णवीर्य वातकफध्न शुक्रध्न

मसूर – सम्प्राही

कलाय – वातलः परम्

तील – मधुर तिक्त कषाय कटू (4 रसयुक्त), त्वच्य केश्य बल्य वातध्न काकाण्डोला व आत्मगुप्ता गुणधर्म समान है

**मांसवर्ग** –

**अजमांस** –

न अति शीत गुरु स्निग्धं मांसं आजम् अदोषलम् ।

शारीरधानुसामान्याद् अनभिष्यन्ति बृहणग् ॥

अजा व आवि – मिस्त्र गोचरत्व (मिस्त्र लक्षण) के कारण योनी अनिश्चित

मयुर मांस – दर्शन श्रोत्र मेधा अग्नि वय वर्ण स्वर व आयुष्यकर

चटक मांस – मधुर स्निग्ध बल शुक्र विवर्धन

गव्य मांस – केवल वातविकार विषमज्वर शुष्क कास अत्यग्नि मांसक्षय

**मांस श्रेष्ठत्व** –

शारीरबृहणे न अन्यद् खादयं मांसाद् विशीष्यते ।

**शाकवर्ग** –

वास्तुक शाक – त्रिदोषधन

काकमाची – त्रिदोषधन वृष्णि रसायन

चांगेरी – ग्रहणी नाशन

त्रपुस – मूत्रल

सर्वप – त्रिदोषकर, बद्धविटमूत्रकर

**फलवर्ग** –

पारावत – अत्यग्नि नाशन

आम कपित्थ – कंठधन

बाल बिल्व फल – दीपन कफवातजित, स्निग्ध उष्ण तीक्ष्ण

पक्व बिल्व फल – दूर्जर दोषल पूतीमारुतकृत

बिभित्क – रस असृक मांसमेदोजान् दोषान हन्ति बिभीतकं ।

अंकोट फल – अग्निजीत (अत्यग्निनाशन)

शामीफल – केशधन

आम्र फल – बाल – रक्तपित्तकर

अपक्व – पित्तवर्धन

पक्व – मांसशुक्रबलप्रद

**मूलक –**

- 1) बाल मूलक – त्रिदोषहर
- 2) वृद्ध मूलक – त्रिदोषकर
- 3) स्निग्ध सिद्ध मूलक – मारुतापह
- 4) विशुष्क मूलक – कफावातधन

**पलांडू** – श्लेष्मलो मारुतधनश्च पलांडुः न च पितनुत् ।

आहारयोगी बल्यश्च गुरुः वृष्य अथ रोचनः ॥

**लशुन** – क्रिमी कुष्ठ किलासध्नो वातध्नो गुल्मनाशनः ।

स्निग्धः उष्णश्च वृष्यश्च लशुनः कटुको गुरुः ॥

**सुरा** – स्तन्य व रक्तक्षय मे हितकर                    सुरा प्रशस्ता वातधनी

**धान्याम्ल / कांजी / आरनाल –**

दाहज्वरापहं स्पर्शात्

पानात् वातकफापह

दीपन विस्त्रिंसी विवंधन

नदीजल गुणधर्म – स्वस्थवृत्त नोटस

**दिव्य उदक** - 6 गुण = शीत शूची शिव मृष्ट विमल लघु

सामुद्र जल – विस्त्र त्रिदोषकर

**गोरस वर्ग –**

क्षीर – प्रवरं जीवनीयानां क्षीरं उकं रसायनम् ।

**माहिषी व गव्य दुग्ध तुलना –**

माहिषी दुग्ध गोदुग्ध से शीततर व गुरुतर

स्नेहात् अन्यून – न्यून नहीं (स्नेह अधिक्य)

गुणधर्म – अनद्रा व अत्यग्नि के लिए हितकर

उष्टृ दुग्ध – रूक्ष उष्ण इषत लवण

कृमी शोफ उदर अर्शोच्चन

एकशफ प्राणी – शाखावातहर

हस्तीनी दुग्ध – स्थैर्यकर

डन्नीदुग्ध – जीवनं बृहणं सात्म्यं स्नेहनं मानुषं पयः ।

नावनं रक्पितं च तर्पणं च अक्षिशूलिनाम् ॥

**दधि –** पीनस अतिसार शीतक विषमज्वर

मन्दक दधि – त्रिदोषकर

जात दधि – वातधन शुक्रल सर

दधिमंड – स्त्रोतोविशोधन

दधि सेवन अयोग्य ऋतु – शरद ग्रीष्म वसंत

दधि सेवन योग्य ऋतु – वर्षा शिशir हेमंत

**घृत –** सर्व स्नेह उत्तमं , सहस्रवीर्यं विधिभिघतं कर्मसहस्रकृत्।

पुराण घृत – मद अपस्मार मूर्च्छा शोष उन्माद ज्वर

योनी कर्ण शिरः शूल

इक्षु - पौड़क श्रेष्ठ                    वंशिक कनिष्ठ

गुड - प्रभूतकृमीमज्जा असृक मेदोमांसकर परः ।

मधु - प्रकार -4

1) माध्मिक - तैल वर्ण

2) पौत्रिक - धृतवर्ण

3) क्षोद्र - कपिल वर्ण

4) भ्रामर - श्वेत वर्ण

श्रेष्ठ प्रकार - माध्मिक

मधु गुणधर्म - शीत गुरु वातकर रक्तपित्तधन कफधन - अल्प सेवन ही हितकर है

सन्धान छेदन रूक्ष कषाय मधुर

उष्ण संस्कार उष्ण ऋतु मे सेवन निषेध

मधु अजीर्ण - कष्टतम

विषकर

उपक्रम विरोधी

मधु योगवाहीत्व - नानाद्रव्यात्मकत्वात् च योगवाही परं मधु

मण्ड - दीपनत्वात् लघुत्वात् च मण्ड स्याद् प्राणधारणः ।

सत्तु - वातल रूक्ष बहुवर्चो अनुलोमी

तर्पयन्ति नरं सद्यः पीताः सद्योबलाक्ष ये ।

सत्तु पान करनेपर सद्य बलकर होते हैं ।

आहारयोगी वर्ग -

तैल - मधुर प्रधान कषाय अनुरस

सूक्ष्म व्यवायी बध्दविण्मूत्र, मेधा अग्निवर्धक

पित्तकर, न कफवर्धक, वातधन

संयोग संस्कारात् सर्व रोगापह

**TIERRA**

सर्षप तैल - कंडू कोठ विनाशन

कुसंभ तैल - सर्वदोषप्रकोपक

आर्द्र पिप्पली - गुरु व स्निग्ध मधुर रस इलेष्मकर

शुष्क पिप्पली - कटू रस व कफवातधन

सैधव - चक्षुष्य वष्य त्रिदोषधन लवणोत्तम

यवक्षार - हुत पांडू रोग प्लीहधन गलग्रह कास कफज अर्श

शूक धान्यं शामीधान्यं समातीतं प्रशस्यते ।

अनुपान -

वात	स्निग्ध उष्ण	कृश	सुरा
पित्त	मधुर शीत	स्थूल / काश्यर्थी	मधुदक
कफ	रूक्ष उष्ण	क्षय	मांसरस
उपवास अध्व भाष्य स्त्री मारुत आतप कर्म से क्लान्त	पय	अल्पाग्नि अनिद्रा तंद्रा शोक भय क्लम मदयमांसोचितानां	मदय

अनुपान निषेध – उर्ध्वांगज मारुतज रोग, हिकका श्वास कास, गीत भाष्य अध्ययन प्रसक्त  
अन्नपान विषयक परीक्ष्य भाव –

चरः शारीरावयवः स्वभावो धातवः क्रिया । लिंगं प्रमाणं संस्कारो मात्रा च अस्मिन् परीक्ष्यते ॥  
चर – देश

अन्न महती –

प्राणः प्राणभृतानां अन्नम लोको अभिधावति । च.सू. 27

प्राणिनां प्राणः शोणितं हि अनुवर्तते ।

सर्वे हि चेष्टा वातेन स प्राणः प्राणिनां स्मृत – वायु

### अध्याय 28 विविध अशीतपीतिय अध्याय

धातवो हि धात्वाहारः प्रकृतिम् अनुवर्तते ।

चतुर्विध आहार – 1) अशित 2) पीत 3) लीढ 4) खादीत

धातुपदोषज विकार – पाठांतर नोट्स + विकृती

### अध्याय – 29 दशप्राणायतनीय अध्याय

देश प्राणायतन – रचना नोट्स

द्विविध भिषक –

1) प्राणभिसर – हन्तारो रोगानां (रोग का हरन करनेवाले)

2) रोगाभिसर – हन्तारः प्राणानां (प्राण का हरण करनेवाले)

### अध्याय – 30 अर्थदशमहामूलीय अध्याय

हुदय यर्याय – महत् व अर्थ

दश धमनी – महामूला महाफला

हुदय – पर ओज स्थान , चैतन्य संग्रह

धमनी स्त्रोतस व सिरा निरूक्ती –

ध्मानात् धमन्यः स्त्रवणात् स्त्रोतांसि

सरणात् सिरा

हुदय रक्षण –

तन्महत् ता महामूलास्तच्छौजः परिक्षता । परिहार्या विशेषेण मनसो दुःखहेतवः ॥

आयुर्वेद विद् लक्षण –

अ) वाक्यशः – तन्म आर्ष कात्स्नेन यथाम्नायं उच्यमानं वाक्यशो भवति उक्तम्।

आर्ष ऋषियो द्वारा कथित तंत्र को जिस रूप में दिया है उस रूप में सर्वशः कहना

ब) वाक्यार्थशः – बुध्या सम्यक् अनुप्रविश्य अर्थतत्वं वाग्भिर्व्यास समास प्रतिज्ञा हेतु उदाहरण उपनय

निगमन युक्तिभिः त्रिविध शिष्य बुद्धिगम्य उच्यमानं वाक्यार्थशो भवति उक्तम् ॥

बुद्धिपूर्वक शास्त्र के अर्थ को भली प्रकार जान कर विस्तार से या प्रतिज्ञा हेतु उदाहरण उपनय निगमन इन वाक्यावयवों से समझा कर तथा तीनों प्रकार के शिष्य बुद्धी को गम्य

अर्थात् समझने योग्य वाक्यों द्वारा कहना ।

क) अर्थात् वाक्यवशः – तन्न नियतानाम् अर्थदुर्गाणां पुनः विभावनैः उक्तं अर्थात् वाक्यवशो भवति उक्तम् ।  
तन्न में कहे गये कठिन अर्थों को पुनः समझा कर अपने वचनों द्वारा कहना ।

आयुर्वेद प्रयोजन – स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणं आतुरस्य विकारप्रशमनं

आयुर्वेद शाश्वतत्व – 3 कारण

- 1) अनादित्वात्
- 2) स्वभावसंसिध्दलक्षणत्वात् – स्वाभाविक रिती से सिध्द
- 3) भावस्वभाव नित्यत्वात् – उत्पत्तीशील पदार्थ नित्य होते हैं

प्रश्नाष्टक // तन्न आदी 8 प्रश्न =

- |           |               |
|-----------|---------------|
| 1) तन्न   | 2) तन्नार्थ   |
| 3) स्थान  | 4) स्थानार्थ  |
| 5) अध्याय | 6) अध्यायार्थ |
| 7) प्रश्न | 8) प्रश्नार्थ |

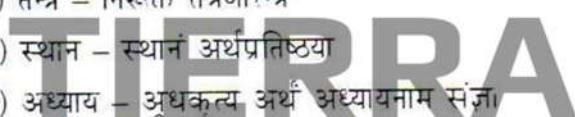
चरक संहितांतर्गत अध्याय विवरण

- |  |   |
|--|---|
| 1) सूत्रस्थान – तन्नस्य अस्य शिरः शुभम्<br>वर्णन – इलोकार्थ / संग्रहार्थ<br>पर्याय – इलोकस्थान | 3) अरिष्टस्थान – इंद्रियस्थान<br>5) आश्रयस्थान – शारीरस्थान |
| 2) औषधस्थान – चिकित्सास्थान  |   |
| 4) विकल्पस्थान – कल्पस्थान   |   |

तन्नादी शब्दों की निरूपी –

- 1) तन्न – निरूपतं तन्त्रणाल्लंत्रं
- 2) स्थान – स्थानं अर्थप्रतिष्ठया
- 3) अध्याय – अध्यकृत्य अर्थं अध्यायानाम् संज्ञा

- 1) एक वैद्य ने दुसरे वैद्य के ज्ञान परीक्षार्थ – प्रश्नाष्टक
- 2) ज्ञानाभियोगसंहर्षकारी – तद्विद्यसंभाषा
- 3) एक वैद्य ने दुसरे वैद्य से शास्त्रपूर्वक संभाषा – वाद



## रसायन व वाजीकरण

### चरक संहिता -

प्रथम पाद – अभ्यामलकीय रसायनपाद

भेषज पर्याय – 9	चिकित्सित	औषध	हित
	व्याधीहर	प्रायोक्तिशेत	
	पथ्य	प्रशमन	
	साधन	प्रकृतिस्थापन	

- भेषज प्रकार – 2
- 1) स्वस्थस्य उर्जस्कर
  - 2) आर्तस्य रोगनुत्

### अभेषज प्रकार – 2

- 1) बाधन – अल्प बाधाकर / अपथ्यकर / तत्काल बाधा करणेवाला उदा. विष
- 2) सानुबाधन – चिरकाल से बाधा करनेवाला उदा. दूषिविष

अष्टांगसंग्रह – 1) बाधन 2) अनुबाधन

रसायन पारेभाषा – स्वस्थस्योर्जस्करं यतु तद् वृष्यं तद् रसायनम् ।

प्रायः, प्रायेण रोगाणां द्विनीयं प्रशागे मतम् ॥

प्रायः शब्दो विशेषार्थो ह्युभयं ह्युभयार्थकृत् ॥ च. चि. 1/1/5

जो औषधी स्वस्थ मे उर्जस्कर होती है वही प्रायः वृष्य व रसायन होती है ।

द्विनीय औषध (आर्तस्य रोगनुत्) रोगो को शान्त करनेवाली होती है ।

प्रायः शब्द का विशेष अर्थ उभय औषधी उभयार्थकृत होती है ।

उभय औषधी = 1) चक्रपाणी – स्वस्थस्य उर्जस्कर व आर्तस्य रोगनुत्

2) गंगाधर – रसायन व वृष्य

उभयार्थकृत – दोनो प्रकार के कार्य 1) रसायन 2) वाजीकरण कार्य करती है ।

रसायन लाभ – दीर्घमायुः स्मृतिं मेधां आरोग्यं तरुणम् वय । प्रभावर्णस्वरोदार्यं देहेन्द्रियं बलं परम् ॥

वाक्सिद्धिं प्रणतिं कान्तिं लभते ना रसायनात् । लाभोपायो हि शस्तानां रसादीनां रसायनात् ॥

वाजीकरण उपमा – प्रभूतशाखः शाखीव येन चैत्यो यथा महान् ।

वाजीकरण फल – यश श्रिय (शोभा/लक्ष्मी) बल पुष्टी, प्राप्ती

रसायन भेद – 2 1) कुटीप्रावेशिक 2) वातातपिक

#### 1) कुटिप्रावेशिक –

कुटी निर्माण – 1) विस्तार उत्सेध संपन्न 2) त्रिगर्भा 3) सूक्ष्म लोचनयुक्ता

4) स्त्रीविवर्जिती 5) सज्जवैद्य औषधद्विजाम्

रसायन पूर्व शोधनार्थ – हरीतक्यादी चूर्ण – एक सप्ताह तक या पूराण मल की शुद्धी होने तक

1) प्रथम ब्राह्म रसायन – पंचपंचमूल – 10 पट जल मे क्वाथ

2) हरीतकी – 1000 3) आमलकी – 3000

4) शर्करा – 1100 पल

5) तीलतैल – 2 आढक 6) घृत – 3 आढक

2) द्वितीय ब्राह्म सायन - 1000 आमलकी - पयसह सुस्विन्न - निरस्थी कर - चूर्ण - उसे आमलकी स्वरस भावना

पुनः स्थिरा, पुनर्वा जीवनी इ. मिस्त्रीत कर 1000 पल नागबला स्वरस भावना + मधुघृत

3) च्यवनप्राश -

दशमूलादी द्रव्य प्रत्येकी - 1 पल = 1 द्रोण जल में क्वाथ

↓  
पोटटली में 500 आमलकी का उक्त उपरोक्त क्वाथ में स्वेदन

ज्ञात्वा गतरसान्वेतान्योषधान्यथ तं रसम् । (क्वाथ्य द्रव्य का रस क्वाथ में आता है )

चक्रपाणी - गतरसत्व - चतुर्थांश शेष

निरस्थी किये हुए आमलकी को 1) गोधृत - 6 पल में भर्जन

2) तीलतैल - 6 पल

अर्धतुला (50 पल) मत्स्यन्डिका से लेह निर्माण + उपरोक्त आमलकी मिलाए = मंदाग्नि पर पाक प्रक्षेप - मधु - 6 पल

वंश - 6 पल

पिप्पली - 2 पल

त्वक

एला

1 पल

पत्र, केशर

शारंगधर - केवल गोधृत में भर्जन व अष्टवर्गोत्तम 5 द्रव्य समावेश ; चरक - 7 द्रव्य

गुणधर्म - कासश्वासहरेश्वैव विशेषेण उपर्दिश्यते । क्षीणक्षतानां वृद्धानां बालानां च अंगर्धन ।

स्वरक्षयमुरोरोगं हुद्रोगं वातशोणितम् । पिपासां मूत्रशुक्रस्थान दोषाश्वाप्यपकर्षति ॥

मात्रा - अस्य मात्रां प्रयुंजित यो उपरूप्यान्न गोजनम् ।

4) आमलकी रसायन - चार रसायन -

1) आमलकी हरितकी

इनमें से एक योग पलाश त्वक क्वाथ में बांधकर पुटपाक

2) आमलकी बिभितकी

विधि से स्वेदन कर दधि घृत आदी में मिलाकर सेवन

3) हरितकी बिभितके

4) हरितकी आमलकी बिभितकी

5) हरितक्यादी रसायन -

त्रिफला + पंचपंचमूल क्वाथ - क्वाथ में पिप्पली यष्टी काकोली क्षीरकाकोली इ. कल्क

+ विदारी स्वरस + अष्टगुण क्षीर मिलाकर घृत सिध्दी (1 कुंभ)

**द्वितीय पाद - प्राणकामीय रसायनपाद**

शारीरिक दोष / रोग ग्राम्याहार से उत्पन्न होते हैं।

1) आमलक घृत - अमलकी 4 आढक + पुनर्वा कल्क (1/4) + विदारी कंद स्वरस + जीवनी कल्क चतुर्गुण गोदुग्ध + बला व अतिबला क्वाथ + शतावरी कल्क से घृतसिध्दी

गुणधर्म - बृहत् शरीरं गिरीसारसारं स्थिरेन्द्रियं चातिबलेन्द्रियं च ।

कान्ति, वर्ण घन स्वर आदी प्राप्ति

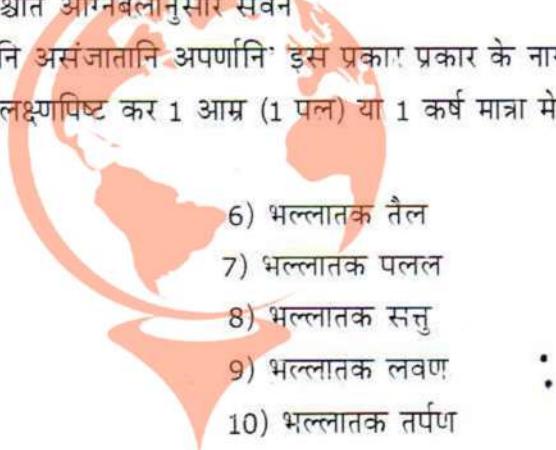
2) आमलकावलेह - 1000 आमलकी + 1000 पिप्पली = तरूण पलाश क्षारजल में तिष्ठन क्षारजल शोषण पश्चात आमलकी निरस्थी कर चूर्ण

उक्त चूर्ण मे 4 गुण मधुसर्पी + 4 गुण शर्करा मिस्त्रीभूत करे  
घृतभाजनस्थ पात्र मे 6 मास पर्यंत आस्थापन

- 3) आमलक चूर्ण – 1 आढक आमलकी चूर्ण 21 दिन तक 1000 आमलकी स्वरस मे भावीत कर रखे  
चायाशुष्क कर चूर्ण + 2 आक मधुघृत , 8 भाग पिप्पली, 4 भाग शर्करा  
इनको भस्मराशी मे आस्थापन कर 1 वर्षपरान्त सेवन

- 4) विडंगावलेह – विडंगतंडुल चूर्ण – 1 आढक  
पिप्पली – 1 आढक                    सितोपला – 1 1/2 आढक  
सर्पि तैल मधु – 2 आढक इन्हे एकीकृत कर घृतभाजनस्थ पात्र मे रखकर भस्मराशी  
मे आस्थापन = ततपश्चात अग्निबलानुसार सेवन
- 5) आमलकावलेह – 1000 आमलकी आर्द्ध पलाश द्रोणी मे रखकर स्वेदन – निरस्थी कर – चूर्ण  
उक्त चूर्ण मे विडंग पिप्पली सिता तीलतैल मधु इ. डालकर घृतभावीत पात्र मे 21 दिन  
आस्थापन – ततपश्चात अग्निबलानुसार सेवन
- 6) नागबला रसायन – शीर्णपुराण पर्णनि असंजातनि अपर्णनि इस प्रकार प्रकार के नागबला का मूल  
प्रक्षालीत कर शलक्षणपिष्ट कर 1 आम्र (1 पल) या 1 कर्ष मात्रा मे सेवन

#### भल्लातक योग – 10

- 
- 1) भल्लातक सर्पि
  - 2) भल्लातक क्षीर
  - 3) भल्लातक क्षोद्र
  - 4) भल्लातक गुड
  - 5) भल्लातक यूष
  - 6) भल्लातक तैल
  - 7) भल्लातक पलल
  - 8) भल्लातक सत्तु
  - 9) भल्लातक लवण
  - 10) भल्लातक तर्पण

#### 7) भल्लातक क्षीर –

अनुपहतानि, आपूर्णरसप्रमाणवीर्याणि, पक्वजम्बुप्रकाशानि – भल्लातक

# TIERRA

यव / माष राशी मे 4 मास तक आस्थापन



- शीतस्निग्धमधुरोपस्कृत शरीर कर उपरोक्त भल्लातक क्रमवृद्ध से सेवन  
10 भल्लातक – अष्टगुण जल मे पाक – अष्टमांश शेष – पुनः क्षीरसह पाक  
क्रमवृद्धी – 10 से 30 व पुनः 30 से 10 तक  
एकुण भल्लातक प्रयोग – 1000

#### 8) भल्लातक क्षोद्र –

जर्जरीकृत भल्लातक का पिष्टस्वेदन यंत्र मे स्वेदन



स्वरस (तैल ) प्राप्ति ; उसमे अष्टभाग मधु व द्विगुण घृत मिलाकर सेवन

#### 9) भल्लातक तैल –

- उपरोक्त विधि से तैल प्राप्ति + 1 आढक गोदुग्ध व यष्टी डालकर पाक  
इस तरह 100 पाक – अग्निबलानुसार सेवन

भल्लातक गुण – भल्लातकानि तीक्षणानि पाकीन्यग्निसमानि च । भवन्त्यमृतकल्पानि प्रयुक्तानि यथाविधि ॥

**भल्लातक – कफज रोग शत्रु**

कफजो न स रोगोऽस्ति न विबन्धोऽस्ति कश्चन । यं न भल्लातकं हन्याच्छीघ्रं मेधाग्निवर्धनम् ॥

### **तृतीय पाद – करप्रचितीय रसायनपाद**

**करप्रचितीय** – हस्त से संग्रहीत किये हुए आमलकी

1) आमलकायस ब्राह्म रसायन –

करप्रचित आमलक – निरस्थी कर चूर्ण – उसे आमलकी स्वरस की 21 भावना

आमलकी चूर्ण + जीवनीय, बृंहणीय स्तन्यजनन आदी गण औषधी + चंदन, अगुरु ध्वल

आदी द्रव्य से 10 आढक जल मे क्वाथ – 1 आढक शेष

पूर्वोक्त अमलकी चूर्ण मे पाक – लोहपात्र मे आस्थापन

उक्त आमलकी चूर्ण + अष्टभाग आयस चूर्ण व मधुसर्पिसह सेवन

रसायन असिध्दीकर हेतु –

- 1) ग्राम्य कार्य मे रत होनेपर
- 2) रसायन सेवन समये अन्य कार्य ए व्यग्र
- 3) अप्रयतात्मनम् ( आत्मा पवित्र न होना )

2) केवलामलक रसायन –

संवत्सरं पयोवृतीर्गां मध्ये वसेत् सदा । (एक वर्ष गोओ मे रहकर पग सेवन )

पश्चात तीन दिन तक उपवास – ततपश्चात शरीरशुद्धी कर – वन मे प्रवेश कर

आमलकी के फल को हात मे पकड़कर ओंमकार जप करे – अमलकी मे अमृत

आ जानेपर उक्त आमलकी को सेवन

3) लोहादी रसायन –

चतुरंगुल दीर्घ तीक्ष्ण आयस पत्र वन्हितप्त

त्रिफला क्वाथ

ज्योतिष्मती क्षार

गोमूत्र

इंगुदी क्षार इ.

मे निर्वापण – अजनाम होने पर चूर्ण

लवण

किंशुक क्षार

मधु + आमलकी स्वरस मिस्त्रीत कर धृतभावीत पात्र मे आस्थापन – भस्मराशी मे पात्र स्थापन

एक वर्ष पश्चात उक्त लेह मधु व धृत सह सेवन )-

गुण – वाक्सिधी, यशस्वी श्रुतधारी, धीमान, महाधनयुक्त

4) ऐंद्र रसायन –

ऐंद्री, मस्त्याखी, ब्राह्मी, वचा, ब्रह्मसुवर्चला, पिप्पली, सैंधव, हेम (सुवर्ण)–2 यव मात्रा मे,

विष तिलसमान मात्रा मे मिस्त्रीत कर सेवन – पाचन होने पर धृतप्रभूत सक्षोद्र भोजन

गुणधर्म – जराव्याधीप्रशमन स्मृतीमेधाकर आयुष्य पौष्टिक धन्य स्वर्वर्णप्रसादनम परमोजस्कर

## 5) मेध्य रसायन –

- 1) मण्डुकपर्णी – स्वरस
- 2) यष्टीमधु चूर्ण – क्षीरसह
- 3) गुडूचि स्वरस
- 4) शंखपुष्पी – मूलपुष्पयुक्त कल्क ।

गुणधर्म – आयुःप्रदान्यानि आमयनाशनानि बलाग्निस्वर वर्णस्वरवर्धनानि ।  
मेध्यानि चैतानि रसायनानि मेध्या विशेषेण शंखपुष्पी ॥

## 6) पिप्पली रसायन –

- अ) 5 या 7 या 8 या 10 पिप्पली का चूर्ण मधु घृत सह सेवन
- ब) तीन – तीन पिप्पली प्रातः भोजनपूर्व व भोजनपश्चात सेवन

काल – 1 वर्षपर्यंत सेवन

अनुपान – मधु + घृत

वैशिष्ठ्य – पिप्पली किंशुक क्षारभावीत व घृत भर्जीत हो ।

गुणधर्म – जेतुं कासं क्षयं शोषं श्वासं हिककां गलामयान् । अशांसि ग्रहणीदोषं पाण्डुतां विषमज्वरम् ॥  
वैस्वर्यं पीनसं शोफं गुल्मं वातबलासकम् ॥

## 7) वर्धमान पिप्पली रसायन –

- |                        |                            |
|------------------------|----------------------------|
| संख्या – प्रतिदिन – 10 | अनुपान – गोदुग्ध           |
| काल – 10 दिन           | एकुण पिप्पली प्रयोग – 1000 |

रुग्ण दलानुसार पिप्पली स्वरूप – :

- 1) बलवान् पुरुष – पिष्ट (कल्क)
- 2) मध्यम बल पुरुष – शृत (क्वाथ)
- 3) हस्त बल पुरुष – चूर्ण

**TIERRA**

पिप्पली संख्यानुसार –  
1) उत्तम बल – 10 पिप्पली      2) मध्यम बल – 6 पिप्पली      3) दुर्बल – 3 पिप्पली

फलश्रृती – बृंहणं स्वर्यमायुष्यं प्लीहोदरविनाशनम् । वयसः स्थापनं मेध्यं पिप्पलीनां रसायनम् ॥

## 8) त्रिफला रसायन – एकुण – 4

अ) प्रथम त्रिफला रसायन –

- 1) जरणान्ते – 1 अभया
  - 2) प्राग्भुक्तात् – 2 बिभित्की
  - 3) भुक्त्वा – 4 आमलकी
- अनुपान – मधुसर्पि

ब) द्वितीय त्रिफला रसायन –

- 1) त्रिफला पेषण कर आयस पात्र को लेप – अहोरात्र रखकर उक्त लेप निकालकर  
क्षोद्र उदक आप्लुत कर सेवन  
जीर्ण होनेपर प्रभूत मात्रा में स्नेहपान

क) तृतीय त्रिफला रसायन –

मधुक तुगाक्षीरी पिप्पली क्षोद्रसर्पि व सितासह त्रिफला सेवन

## ड) चतुर्थ त्रिफला रसायन –

सर्वलोह, सुवर्ण वचा मधुमर्पि विडंग पिपली लवण इनके साथ 1 वर्ष तक त्रिफला सेवन गुण – मेधास्मृतीबलप्रद, आयुःप्रद, जगरोगनिबर्हणी

## 9) शिलाजतु रसायन –

उत्पन्नी – हेमाद्या: सूर्यसंतप्ता: स्त्रवन्ति गिरीधातवः ।

जत्वाभं मृदूमृत्स्नाच्छं यन्मलं तत् शिलाजतु ॥

1) जत्वाभं – लाक्षा समान 2) मृदू 3) मृत्तिका समान अच्छ मल का स्त्राव

## शिलाजतु गुण –

प्रकार	वर्ण	रस	वीर्य	विपाक
सुवर्ण	जपापुष्पनिभ (रक्तवर्ण)	मधुर तिक	शीत	कटु
रजत	श्वेत	कटु	शीत	मधुर
ताम्र	बर्हिकंठाभ	तिक	उष्ण	कटु
लौह	गुगुलकाभास (कृष्ण)	तिक लवण	शीत	कटु

अनम्लं च कषायं च कटु पाके शिलाजतु । नात्युष्णशीतं धातुभ्यश्वतुर्भ्यस्तस्य संभव : ॥

## शिलाजतु प्रयोग –

प्रयोग	कालावधी	मात्रा
उत्तम	7 सप्ताह	1 पल ( 4 तोला)
मध्यम	3 सप्ताह	1/2 पल (2 तोला)
अवर	1 सप्ताह	1 कष ( 1 तोला)

शिलाजतु सेवन समय आहार मे दुग्धप्रधानता व कुलत्थ वर्ज्य

शिलाजतु प्रयोगेषु विदाहिनी गुरुणि च । वर्जयेत् सर्वकालं तु कुलत्थान् परिवर्जयेत् ॥

रसायनार्थ शिलाजतु प्रकार श्रेष्ठता –

गोमूत्रगन्ध्यः सर्वे सर्वकर्मसु यौगिकाः । रसायनप्रयोगेषु पश्चिमस्तु विशिष्टते ॥

रसायनप्रयोगार्थ लोह शिलाजतु श्रेष्ठ

सुवर्ण शिलाजतु – वातपित्तघ्न रजत शिलाजतु – कफपित्तघ्न

ताम्र शिलाजतु – कफघ्न

लोह शिलाजतु – वात पित्त कफ जन्य विकारो मे श्रेष्ठ

शिलाजतु आलोडनार्थ (द्रावणार्थ) द्रव – पय तक्र मांसरस यूष तोय मूत्र विविध कषाय

शिलाजतु महत्ता –

न सोऽस्ति रोगो भुवि साध्यरूपः शिलाह्यं यं न जयेत् प्रसद्य ।

भूमी पर ऐसा कोइ भी रोग नहीं जो शिलाजतु से साध्य न हो सके ।

## चतुर्थ रसायनपाद – अयुर्वेदसमुत्थानीय

प्राचीन ऋषि – 1) शालीन – गृह मे रहने वाले 2) यायावर – भ्रमणशील

## 1) इन्द्रोक्त रसायन –

दिव्य औषधी ऐन्द्री ब्राह्मी पयस्या क्षीरपुष्पी श्रावणी महाश्रावणी विदारी जिवन्ती पुनर्नवा नागबला स्थिरा वचा छत्रा अतिछत्रा मेदा महामेदा व जीवनीय गण औषधी क्षीरसह 6 मासपर्यंत सेवन

विद्या समाप्ति पश्चात वैद्य मे ब्राह्मण सत्त्व (ब्रह्म ज्ञानसंपन्न सत्त्व) व आर्ष (ऋषीयो के मन) समान सत्त्व ज्ञान के कारण निश्चित रूप से प्रवेश करता है : अतः उसे द्विज कहा जाता है ।

जीवनदान महत्व - न हि जीवितदानाधिद दानमन्यद्विशिष्यते ।

अभ्यामलकीय रसायनपाद (6)	प्राणकामीय रसायनपाद (37)	करप्रचितीय रसायनपाद (16)	आयुर्वेद समुत्थानीय रसायनपाद (4)
प्रथम ब्राह्म रसायन द्वितीय ब्राह्म रसायन च्यवनप्राश आमलक रसायन हरीतक्यादी योग (प्र.) हरीतक्यादी योग (द्वि.)	शतपाक आमलक धृत, सहस्रपाक आमलक चूर्ण, आमलकावलेह, विडंगावलेह, नागबला रसायन, बला रसायन, अतिबला रसायन, चन्दन रसायन, अगुरु रसायन, धव रसायन, तिनीश रसायन, खदिर रसायन, शिंशापा रसायन, अमन रसायन, अमृता रसायन अभ्या रसायन, धात्री रसायन, मुक्ता रसायन, श्वेता रसायन, जीवन्ती रसायन, अतिरसा (शतावरी) रसायन, मण्डूकपर्णी रसायन, स्थिरा (शालपर्णी) रसायन, पुनर्नवा रसायन, भल्लातक दश योग	आमलकायस ब्राह्म रसायन, केवलामलक रसयन, लौहादी रसायन, ऐन्द्र रसायन, मण्डूकपर्णी मेध्य रसायन, पिप्पली रसायन, वर्धमान पिप्पली रसायन, त्रिफला रसायन (4), शिलाजतु रसायन	इन्द्रोक रसायन द्रोणीप्रावेशिक रसायन, इन्द्रोक रसायन, आचार रसायन

### सुश्रुत संहिता - सर्वोपघातशमनीय रसायन (सु. चि. 27)

रसायन योग्य - पूर्वे वयसि मध्ये वा मनुष्यस्य रसायनम् । प्रयंजित भिषक प्राज्ञः स्तिर्घशुद्धितनोः सदा ।  
नाविशुद्धशरीरस्य युक्तो रसायनो विधिः ॥

पूर्वे - 25 वर्ष पूर्व मध्ये - 50 वर्ष पूर्व

डल्हणानुसार रसायन भेद - 3

# TIERRA

- 1) काम्य रसायन - बल दुष्टि आदि की विशिष्ट क्रासना से सेवन किया हुआ रसायन
- 2) नैमित्तिक रसायन - किसी व्याधीविशिष्ट को नष्ट करने के निमित्त शिलाजतु भल्लातक आदी सेवन
- 3) आजस्त्रिक रसायन - दुग्ध धृत आदी का निरन्तर सेवन

1) विडंग तंडुल रसायन - विडंग तंडुल व यच्छी चूर्ण मधुसह सेवन

फलश्रृती-कृमीधन, अर्शोधन, ग्रहण धारणशक्ति जनन.

2) गम्भारी रसायन - रक्त व पित्तज व्याधीयो के लिए

3) बलामूल रसायन - बलामूल अर्धा पल एक पल क्षीर के साथ सेवन

उपयोग - बलवधक, शोष व रक्तपित्तनाशक

4) वाराहीकन्द रसायनयोग - वाराहीमूल एक तुला चूर्ण मधुसह दुग्ध से आलोडन कर पान

5) विजयसारादी रसायनयोग - बीजक (विजयसार) व अग्निमंथ मूल क्वाथ व माषक्वाथ सह सेवन  
फलश्रृती- चक्षुकाम व प्राणकाम द्वारा सेवन

6) शणफल रसायन योग - क्षीरसह पक्व शण फल सेवन - वय शीर्यमाण नहीं होता

### 2) मेधायुष्कामीय रसायनचिकित्सा ( सु. चि. 28)

1) श्वेत बाकुची रसायन - मेधा व आयु कामीय व्यक्ति आतप मे शुष्क श्वेत बाकुची बीज का चूर्ण गुड व धृत

युक्त कुम्भ मे सात रात्रीपर्यन्त रखकर शोधनपश्चात् सेवन

- 2) मण्डुकपर्णी स्वरस रसायन – मेधावी व शतायु भवति
  - 3) ब्राह्मी स्वरस रसायन योग – श्रुतधर भवति
  - 4) ब्राह्मीघृत रसायन – कुष्ठ विषमज्वर अपस्मार उन्माद नाशन
  - 5) वचा शतपाक घृत – गलगण्ड अपची इलीपद स्वरभेद नाशन
  - 6) आयुर्वर्धक रसायन – पुष्प नक्षत्र पर सुवर्ण सह बिल्व चूर्ण मधु घृतसह सेवन
- बुधिमेधावर्धक गण –**

सतताध्ययनं वादः परतन्नावलोकनम् ।  
तद्विद्याचार्यसेवा च बुधिमेधाकरो गणः ॥

**आयुर्वर्धक गण –**

आयुष्यं भोजनं जीर्णे वेगानां चाविधारणम् ।  
ब्रह्मचर्यमहिसा च साहसानाम च वर्जनम् ॥

### 3) स्वभावव्याधीप्रतिषेधनीयं रसायनपाद

सोम वनस्पति वर्णन – एक एव खलु भगवान् सोमः स्थाननामाकृति वीर्यविशेषे श्रतुर्विशतिधा भिदयते ।  
प्रकार .. 24

सर्वेषामेव सोमानां पत्राणि दश पृच्छ च । तानि शुक्ले कृष्णे च जायन्ते निपतन्ति च ॥

15 पत्र युक्त शुक्ल पक्ष मे पत्र उत्पत्ती व कृष्ण पक्षमे पत्र पतन

**सौमसेवन विधि वर्णन**

### 4) निवृत्तसन्तापीय रसायन

रसायन सेवनार्थ अयोग्य पुरुष – 7

अथ खलु सप्त पुरुषा रसायनं नोपयुण्जीर्ण !

- |                                      |                                |
|--------------------------------------|--------------------------------|
| 1) अनात्मवान् – अज्ञानात्            | 2) आलसो – अनारम्भाद्           |
| 3) दरिद्रः - दासिद्याद्              | 4) प्रमादी – अस्थिरचित्तत्वाद् |
| 5) व्यसनी – अनायत्तत्वात् (पराधीनता) | 6) पापकृत् – अधर्मात्          |
| 7) भेषजापमानी – औषध अलाभात्          |                                |
- औषध उधरण पूर्व मंत्र पठन

**TIERRA**

**अष्टांग हृदय – उत्तरतंत्र – 39**

रसायनपूर्व शोधन – ततपश्चात् तीन पाच या सात दिन घृतान्वित यव सेवन

- 1) नागबला रसायन – पुष्प शरद ऋतु मे नक्षत्र पर नागबला मूल उद्धरण कर क्षीरसह वा मधु घृत श सेवन
- 2) गोक्षुर रसायन 3) वाराही रसायन
- 4) चित्रक रसायन – चित्रक प्रकार – 3 पीत असित सित .

चित्रकमूल पय वा मधुसर्पिसह सेवन

गुण – मेधावी बलवान् कान्तो वपुष्मान दीप्तपावकः ।

एक मासपर्यन्त चित्रक तैलसह लेहन – दुस्तर वातरोग नाशक

चित्रक गोमूत्रसह पान – श्वितकुष्ठनाशन

- 5) भल्लातक रसायन- संग्रहण- ग्रीष्म ऋतु में , सेवन हेमंत ऋतु में
- 6) तुवरक तैल रसायन- 1 तोला प्रातकाली सेवन. - कुष्ठधन
- 7) बाकुचि रसायन – कुष्ठनाशन
- 8) रसोन रसायन – रसोन उत्पत्ति – अमृतबिंदु से  
कफोल्बण व्यक्ती शीत व वसंत काल में नित्य सेवन करे ।  
वाताधिक्य व्यक्ती वर्ष ऋतु में सेवन करे  
पित्तावृत व रक्तावृत वात छोड़कर इतर सर्व आवत्त वात में रसोन श्रेष्ठ है ।
- 9) शिलाजतु रसायन – गोमूत्रगंधी कृष्ण व गुगुल्वाभ स्निग्ध, अनम्लकषाय (अम्लकषारहीत) शिलाजतु श्रेष्ठ शिलाजतु सेवन समये पथ्य – काकमान्ती कपोत कुलत्थ निषेध
- 10) पुनर्नवा रसायन- पुनर्नवा मूल अर्धा पल क्षीरसह अर्धमास मास मासद्वय सेवन – इंद्रियों को नविनता प्राप्ते
- 11) शतावरी धृत 12) अश्वगंधा रसायन 13) कृष्णतील शीत जल अनुपानासह सेवन – दृत दृढ़ीकरण
- 14) भृंगराज रसायन- स्वरस एक मासपर्यन्त पान – शत वर्ष जीवन प्राप्ति
- 15) वचा रसायन- क्षीर तैल वा धृतसह सेवन – वाणी निर्मल व मधुर
- 16) नारसिंह रसायन- वाजीकर, केश्य, वाणी मेधा समृद्धीकर  
परिपूर्ण रसायन – शास्त्रानुसारिणी चर्या चित्तज्ञा: पार्श्ववर्तिनः ।  
बुधिरस्खलितार्थेषु परिपूर्ण रसायनम् ॥

**वाजीकरण**

### चरक संहिता –

#### **प्रथम पाद – संयोगशरमूलीय**

वाजीकरणमनिच्छेत् पुरुषो नित्यमात्मवान् । तदायत्तौ हि धर्मार्थो प्रितिश्च यश एव च ।

पुत्रस्यायतनं ह्येतद् गुणाश्वैते सुताश्रया ॥

आत्मवान् पुरुष रसायन सेवन बाद वाजीकरण सेवन की इच्छा करे ।

वाजीकरन के अधीन धर्म अर्थ प्रिति यश की प्राप्ति है ।। वाजीकरण का सेवन पुत्र की उत्पत्ति में आयतन है।

वाजीकरणार्थ अग्न्य- स्त्री – वाजीकरणमग्रयं च क्षेत्रं स्त्री या प्रहर्षिणी ।

#### **संभोग योग्य स्त्री –**

अतुल्यगोत्रां वृष्याम च प्रहुष्टां निरूपद्रवाम् ।

शुद्धस्नातां व्रजेन्नारीमपत्यार्थी निरामयः ॥

संताहीन के लिए उपमा – एकशाख निष्फल छायारहीत द्रुम

चित्रदीप, तृणपूली

संतानयुक्त के लिए उपमा- बहुमुर्ति, बहुमुख, बहुव्यूह, बहुक्रिय, बहुचक्षु, बहुज्ञान, बहु आत्मा.

1) बृंहणी गुटिका- शरमूल, इक्षुमूल, काण्डेक्षु, इक्षुवालिका, शतावरी, पयस्या विदारी, जीवन्ती जीवक. मेदा इ. प्रत्येकी 3 पल + 1 आढक नवमाष – धृतसिध्दी – वंश पिप्पली इ. प्रक्षेप डालकर गुटिका

2) वाजीकरण धृत – माष आत्मगुप्ता प्रत्येकी 1 आढक, जीवक ऋषभक काकोली मेदा शतावरी यष्टि अश्वगंधा प्रत्येकी 1 कुडव, चतुर्गुण जल में क्वाथ – चतुर्थांश शेष इसमें विद्वारीकंद स्वरस, इक्षुरस इ. गोदुरग्ध डालकर धृतसिध्दी + प्रक्षेप

- 3) वाजीकरण पिण्डरस – शर्करा पय माष तुगाक्षीरी घृत गोधूम इ. सह उत्कारिका निर्माण – उक्त उत्कारिका में कुकुट रस डालकर घनत्व
  - 4) वृष्य माहिष रस – घृत माष बस्तांड – माहिष मांसरस में पाक – गोघृत में भर्जन+ फलाम्ल नवसर्पि प्रक्षेप
  - 5) चार वृष्य रस – 1) चटक मांस – तित्तिर मांस रस में
    - 2) तित्तिर मांस – कुकुट मांसरस में
    - 3) कुकुट माम्स – बर्हिण मांसरस में
    - 4) बर्हिण मांस – हंस मांसरस में – पकव करे
  - 6) वृष्य अंडरस – 1) मत्स्याण्ड रस
    - 2) हंस अंड रस
    - 3) बर्हिण अंड रस
    - 4) कुकुट अंड रर – गोघृत में भर्जन कर सेवन
- वाजीकरण प्रयोग – शोधन पश्चात ही करे।



### द्वितीय पाद – आसिक्कीरिकं वाजीकरण पाद

- 1) अपत्यकरी षष्ठीकादी गुटिका –

आसिक्कीरमापूर्ण अशुष्कं शुद्धषष्ठिकम्  
(क्षीर से पूर्ण अशुष्क शुद्ध षष्ठिक)

गोक्षीग्रसह मर्दन – कवचबीज चूर्ण डालकर पाक (जीवन्ती, काकोली इ. क्वाथ)

सांद्रीभूत होनेपर मधुअशर्करा प्रक्षेप – गुटिका निर्माण

- 2) वृष्य पूपलिकादी योग –

चटक, हंस, दक्ष, शिखी, शिशुमार, नक्त इनका शुक्र

गव्य सर्पि, षष्ठिक चूर्ण, इ. सह पाक = पूपलिका निर्माण

- 3) अपत्यकर स्वरस –

आत्मगुप्ता फल, माष, खर्जुर, शतावरी, शङ्गाटक, मृद्विका – प्रयेकी 1 प्रसृत

गोक्षीर -1 प्रस्थ, जल -1 प्रस्थ इनके सह पाक – क्षीरवशेष

वंशलोचन इ. प्रक्षेप डालकर मधुसह पान

- 4) वृष्य क्षीर –

खर्जूरीमस्तक, माष, पयस्या, शतावरी, मधुक, मृद्विका, कवचबीज

1 आढक जल में पाक – 1/4 शेष

पुनः क्षीरसह पाक – क्षीरमात्र शेष – घृत व शर्करा सह सेवन

5) वृष्य धृत –

जीवक, ऋषभक, मेदा, श्रावणीद्वय, खर्जुर, मधुक द्राक्षा, पिप्पली, विश्वभेषज, इ. कल्क



नवसर्पि, पय, जल सह पाक – धृतमात्र शोष – चतुर्थांश शर्करा मधु सह सेवन

6) वृष्यदधिसर प्रयोग –

शरदचन्द्रसन्निभ, दोषरहीत दधिसर लेकर उसमे शर्करा, क्षोद्र मरिच इ. मिलाकर

पुनः एला चूर्ण मिलाकर – वस्त्र से छानकर धृताद्य षष्ठिकोदन सह सेवन

7) वृष्यषष्टिकौदन प्रयोग –

चन्द्रांशुकल्प (चन्द्रकिरण समान) षष्टिकोदन मे शर्करा मधु मिलाकर पय सह प्रतिदिन सेवन

8) वृष्यपूपलिका –

ताम्रचूडांड को नक्क शुक्र मे मिलाकर सर्पि मे भर्जित कर षष्टिक चूर्ण मिलाकर

नूतन धृत मे पूपलिका निर्माण – उक्त पूपलिका सेवन कर पश्चात वारूणी मंड सेवन

उपरोक्त सर्व वाजीकरण योग सेवन से वीर्योपपन्न, बलवर्णयुक्त, व अष्टवर्ष के वाजी समान मैथुन सामर्थ्य

औषधेतर वाजीकरण –

मनप्रिय द्रव्य, रम्य वन, पुलीन (नटीतट), शैल, भूषण गंध माला इ.

**तृतीय पाद – माषपर्णभृतीय वाजीकरण पाद**

1) तीन वृष्य गोदुग्ध –

1) माषपर्णभृता

:

2) इक्षु

सेवन कर पुष्ट हो एसी धेनु (गो)

3) अर्जुनपत्र

उक्त गो (धेनु) –

1) गृष्टि (सकृतप्रसूता)

ऐसी धेनु का सान्द्र क्षीर

2) चतुस्तनी

श्रृत / अश्रृत

3) समानवर्णवत्सा

शर्करा, क्षोद्र सर्पि सह सेवन

4) जीवदवत्सा

5) रोहिणी / कृष्ण

6) उर्ध्वशंगी, अदारूण

**TIERRA**

2) पाच वृष्य क्षीर प्रयोग –

1) शुक्रल

2) जीवनीय

3) बृंहणीय

4) बल्य

5) क्षीरसंजनन

इनमेसे एक वर्ग की औषधी को क्षीर मे पक्व कर गोधूम चूर्ण शर्करा मधु व धृत सह सेवन

3) अपत्यकर क्षीर –

मेदा पयस्या विदारी कंटकारी स्वदंष्ट्रा क्षीरिका माष गोधूम शालीषष्टिक – पय व क्षीरसह पाक –

क्षीरवशेष – उक्त क्षीर मधु व सर्पिसह सेवन

**4) अपत्यजनन क्षीर प्रयोग –**

मण्डलैर्जातरूपस्य तस्या एव पयः श्रृतम् । अपत्यजननं सिधं सधृतक्षोद्रशकरम् ॥

इक्षु या अर्जुनपत्र या माष सेवन किए हुए गो के क्षीर को सुवर्ण का मण्डल डालकर पक्व कर उस

क्षीर में धृत शर्करा मधु डालकर पान – अपत्यजनन

जातरूपस्य मण्डलै – मण्डलाकार सुवर्ण / सुवर्ण वर्ख

**5) वृष्य पिपली योग –**

30 पिप्पली पिष्ट कर 1 पल तीलतैल, व गोधृत में भर्जन कर 1 पल शर्करा व 1 पल मधु मिलाकर क्षीर दोहन पात्र में रखकर उसी पात्र में माष आदी से पुष्ट गो का क्षीर दोहन कर उस क्षीर को बलानुसार सेवन

**6) वृष्य पायस –**

गोक्षुर क्वाथ या रस विदारी क्वाथ या रस गोक्षीर से चतुर्गुण लेकर माष व षष्ठिक मिलाकर पायस(खीर) पकावे ; गोधृत अष्टमांश डालकर भर्जन कर पान

**7) दृष्य पूपलिका योग –**

जीवनीय स्निग्ध रूचिकर फलचूर्ण , कवचबीज चूर्ण, माषचूर्ण + तील मुदग गोधूम शाली चूर्ण इनको मिलाकर पूपलिका निर्माण

**8) वृष्य शतावरी धृत –**

गोधृत – 1 प्रस्थ, क्षीर – 10 प्रस्थ, शतावरी कल्क – 1 कुडव – धृतसिध्दी – शर्करा मधु पिपली सह

**9) वृष्य मधुक योग --.**

यष्टि चूर्ण, गोधृत मधु प्रत्येकी 1 कर्ष एकत्र कर सेवन पश्चात क्षीरपान

**वाजीकर आहार विहार –**

धृतक्षीरशनो निभिर्निव्याधी नित्यगो युवा । संकल्प प्रवणो नित्यं नरः स्त्रीषु वृषायते ॥

**वाजीकर विहार –**

अभ्यंग उत्सादनं स्नानं गंध माला भूषण उत्तम गृह शाय्या आसनं मनोनुकूल वस्त्र, संवाहन इ.

**TIERRA**

**चतुर्थ पाद – पुमाण्जातबलादिकं वाजीकरण पाद**

**शरीरबल तथा सन्तानोत्पत्ति संबंध –**

नहि जातबला सर्वे नराश्रापत्यभागिन । बृहत शरीर बलिनः सन्ति नारीषु दुर्बलाः ॥

सन्ति चाल्पश्रया स्त्रीषु बलवन्तो बहुप्रजाः ॥

सभी बलवान मनुष्य अपत्यभागी नही होते । बृहतशरीर मनुष्य कभी कभी नारी स्थाने दुर्बल होते हैं व अल्प

बल पुरुष नारी के साथ बलवान होते हैं ।

**वृष्य बस्ती –** धृत तैल क्षीर शर्करा मधु संयुक्त बस्ती वृष्य मानी जाती है ।

**1) वृष्य मांस गुटिका –** वराह मांस पक्व कर उसमे मरीच सैंधव मिलकर पिष्ट कर धृत में भर्जीत कर गुटिका निर्माण कर उक्त गुटिका दधि दाढिम सार मे छोडकर पुनः पक्व करे ।

**2) वृष्य माहिष रस –** जलाप्लुत माष को तुष निकालकर उसमे निस्तुष आत्मगुप्ता बीज मिलाकर माहिष मांस व दधि दाढिम रस के साथ पक्व करे – उक्त मांसरस को धान्यजीरकनागर मिलाकर पान

**3) वृष्य धृतभृष्ट मत्स्यमांस –**

आर्द्र शफरी वा रोहित मत्स्य गोधृत में भर्जन कर सेवन करना

4) वृष्य माषादी पूपलिका –

माष आत्मगुप्ता गोधूम शालीषष्ठिक इनका चूर्ण विदारी इक्षुरक चूर्ण मे मिलाकर गोक्षीर मे  
मसृण कर पूपलिका निर्माण

5) अपत्यकर धृत –

शर्करा 1 तुला, गोधृत 1 तुला, विदारी चूर्ण, पिपली चूर्ण प्रत्येकी 1 प्रस्थ , वंश व मधु  
प्रतेकी 1 आढक इनको धृतभावीत पात्र मे एकत्र रखकर अग्निबलानुसार सेवन

6) वृष्य गुटिका –

गोधृत 1 पात्र – शतगुण विदारी कन्द स्वरस मे पाक – पुनः उसमे शतगुण गव्य पय मिलाकर  
धृतसिध्दी – वंश आदी प्रक्षेप – गुटिका निर्माण

7) वृष्य उत्कारिका –

सितोपला – 100 पल , 50 पल नूतन गोधृत, 25 पल मधु – पाक – पकते समय गोधूम  
चूर्ण मिलाकर उत्कारिका निर्माण

वृष्य द्रव्य गुण –

यत् किंचित् स्निग्धं जीवनं बृहणं गुरुः ।

हर्षणं मनसश्वैव सर्वं तद् वृष्यमुच्यते ॥

मैथुन योग्य आयु – 16 – 70 वर्ष

बाल्यावस्था मे मैथुन निषेध –

अतिबालो हि असंगूर्ण धातुः स्त्रीयो व्रजन् । उपशुष्टेत् सहसा तडागमिव काजलम् ॥

वृद्धावस्था मे मैथुन निषेध –

:

शुष्कं रूक्षं यथा काष्ठं जन्तुदग्धं विजर्जरम् । स्पृष्टमाशु विशेयेत् तथा वृद्धः स्त्रीयो व्रजन् ॥

शुक्रक्षय के कारण – 6

- 1) जरया 2) चिन्तया 3) व्याधी 4) कर्मकर्षणात् 5) अनशस 6) स्त्रीणाम च अतिनिषेवणात्

अल्प मैथुन शक्ति हेतु – 8

- |  |                                 |
|--|---------------------------------|
| 1) क्षयात्                                 | 5) स्त्रीदोषदर्शनात्            |
| 2) भयात्                                   | 6) नारीणामरसज्जत्वात्           |
| 3) अविस्त्रमभात् (स्त्रीयो प्रति अविश्वास) | 7) अभिचारात्                    |
| 4) शोकात्                                  | 8) असेवनात् (मैथुन सेवन न करना) |

शुक्र प्रवृत्ति के कारण – 8

- |                                 |  |
|---------------------------------|--|
| 1) हर्षात्                      | 5) गौरवात्                             |
| 2) तर्षात् (स्त्रीयो की इच्छा ) | 6) अणुभावात्                           |
| 3) सरत्वात्                     | 7) प्रवणभावात् (बाहर निकलने का स्वभाव) |
| 4) पैच्छिल्यात्                 | 8) द्रुतत्वात् मारुतस्य                |

शुक्र – रूप द्रव्य

चरतो विश्वरूपस्य रूपद्रव्यम् यदुच्यते ।

सन्तानोत्पादक शुक्र लक्षण –

बहलं मधुरं स्निग्धं आविस्त्रं गुरुं पिच्छिलम् ।

शुक्लं बहुं च यच्छुक्रं फलवत्तदसंशयम् ॥

**वाजीकरण नीरूल्की –**

येन नारीषु सामर्थ्यं वाजिवल्लभते नरः ।  
व्रजेच्याभ्याधिकम् येन वाजीकरणमेव तत् ॥

**त्रिविधि वृष्टि –**

वृष्टि	चक्रपाणी	डल्हण
1) शुक्रस्त्रुतिकर	संकल्पादी	स्त्रीसंस्पर्श
2) शुक्रवृद्धीकर	माषादी	क्षीरादी
3) शुक्रस्त्रुतिवृद्धीकर	क्षीरादी	माषादी

### सुश्रुतोक्त वाजीकरण

अध्याय – 26      क्षीणबलीय वाजीकरन चिकित्सितं

**सुश्रुतोक्त क्लैब्स भेद – 6**

- 
- 1) मानसिक
  - 2) शुक्रक्षयज
  - 3) अत्याधिक मैथुनज
  - 4) मेढ्रोगज / मर्मच्छेदज
  - 5) सहज
  - 6) शुक्रवेगावरोधज

1) वाजीकरण पादाभ्यंग योग –

नक्रमूषिकमण्डूकचटकाण्डकृत घृत से पादाभ्यंग

2) उच्चटा प्रयोग –

उच्चटा (क्षेतदुर्वा / गुंजा) चूर्ण धारोष्णा दुग्ध के साथ सेवन  
शतावरी + उच्चटा चूर्ण क्षीरसह पान

**वाजीकरणार्थ श्रेष्ठ –**

क्षीरमांसगणा: सर्वे काकोल्यादिश्च पूजितः ।

वाजीकरणहेतोहि तस्मात्तु प्रयोजयेत् ॥

सर्व प्रकार के क्षीर, सर्व प्राकार के मांस व काकोल्यादी गण वाजीकरण होने के कारण श्रेष्ठ

### ज्वर चिकित्सा

**ज्वर विशेषता –**

देहेन्द्रिय मनस्तापी सर्वरोगाग्रजो बली । ज्वरः प्रधानो रोगाणामुको भगवता पुरा ॥

**ज्वर पर्याय –** विकार, रोग, व्याधी , आतंक

**ज्वर प्रकृति (कारण) –** शारीर दोष – वातपित्तकफ                          मानस दोष – रज तम

**ज्वर स्वभावरूप प्रकृति –** क्षय तम ज्वर पाप्मा मृत्यु, यह यम के रूप

**ज्वर प्रवृत्ती (प्रथमोत्पत्ती ) –** प्रवृत्तिस्तु परिग्रहात्

निदानस्थान मे रूद्रकोप से ज्वर की प्रवृत्ती निर्देशीत है ।

**ज्वर उत्पत्ती –** द्वितीय युग अर्थात त्रेता युग मे . दक्ष के यज्ञ मे

**ज्वर प्रभाव –** संताप , अरुचि, तृष्णा अंगमर्द , हुदि व्यथा

**ज्वर पूर्वरूप –** अलस्य, नयन सास्त्रता, जृम्भा, गौरव, क्लम, ज्वलनातपवाय्म्बु भक्तिद्वेष अनिश्चितता

अविपाक, आस्यवैरस्य, बलवर्ण हानी, शीलवैकृत  
ज्वर अधिष्ठान – केवल समनस्कं च ज्वराधिष्ठानमुच्यते ।  
ज्वर प्रत्यात्म लक्षण – ज्वर प्रत्यात्मिकम् लक्षणं संतापो देहमानसः ।

**ज्वर भेद –**

- |                       |                              |                                      |
|-----------------------|------------------------------|--------------------------------------|
| 1) विधीभेदाने – 2     | 1) शारीर 2) मानस             | 1) सोम्य 2) आग्नेय                   |
|                       | 1) अन्तर्वेंगी 2) बहिर्वेंगी | 1) प्राकृत 2) वैकृत                  |
|                       | 1) साध्य 2) असाध्य           |                                      |
| 2) काल बल अबल भेद – 5 | 1) संतत 2) सतत               | 3) अन्येद्युष्ट 4) तृतीयक 5) चतुर्थक |
| 3) आश्रयभेद से – 7    |                              |                                      |
| 4) कारण भेद से – 8    |                              |                                      |

**मनसंताप लक्षण** – वैचित्यमरतिगल्लानि: मनसंतापलक्षणम् ।

**इंद्रियतापलक्षण** – इंद्रियाणां च वैकृतं ज्ञेयं संतापलक्षणम् ।

**सोम्य** – आग्नेय ज्वर / वायुयोगवाहित्व –

योगवाहः परं वायुः संयोगादुभयार्थकृत् ।  
दाहकृत् तेजसा युक्तं शीतकृत् सोमसंश्रयात् ॥

अंतर्वेंगी ज्वर	बहिर्वेंगी ज्वर
अन्तर्दाह, तृष्णाधिक्य, ऋलाप, श्वसन, भ्रम, सन्धिअस्थिशूल, अस्वेद दोषवर्चोविनिग्रह	संतापो अश्यदिको बाह्यः तृष्णादीनां च मार्दवम्

**प्राकृत व वैकृत ज्वर** – प्राकृतः सुखसाध्यस्तु वसन्तशरदुद्धवः ।

- 1) वसंत ऋतुजन्य – कफज ज्वर सुखसाध्य
- 2) शरद ऋतुजन्य – पित्तज ज्वर
- 3) वर्षा ऋतुजन्य – वातज ज्वर – कष्टसाध्य

**वैकृत ज्वर** –

- 1) वसंत ऋतुव्यतिरिक्त उत्पन्न कफज ज्वर कष्टसाध्य
- 2) शरद ऋतुव्यतिरिक्त उत्पन्न पित्तज ज्वर

**साध्यज्वर लक्षण** – बलवत्स्वल्प दोषषु ज्वरः साध्यः अनुपद्रवः ।

बलवान् रूग्ण, स्वल्पं दोष व उपद्रवरहीत ज्वर – साध्य

**ज्वर कालमर्यादा** – वातज – 7 दिन पित्तज – 10 दिन कफज – 12 दिन

**असाध्य ज्वर लक्षण** – 1) क्षीण व्यक्तीयो का शोथयुक्त ज्वर

- 2) गम्भीर व दैर्घ्यरात्रीक ज्वर (दीर्घ कालतक रहनेवाला)
- 3) बलवान् ज्वर व केशसीमन्तकृत ज्वर

**निष्प्रत्यनीक के कारण संतत ज्वर दुःसह** –

कालप्रकृतिभिर्दोषस्तुल्यो हि सन्ततम् ।

निष्प्रत्यनिकः कुरुते तस्माज्ज्ञेयः सुदुःसह ॥

अविपाक, आस्यवैरस्य, बलवर्ण हानी, शीलवैकृत  
ज्वर अधिष्ठान – केवल समनस्कं च ज्वराधिष्ठानमुच्यते ।  
ज्वर प्रत्यात्म लक्षण – ज्वर प्रत्यात्मिकम् लक्षणं संतापो देहमानसः ।

**ज्वर भेद –**

- |                       |                            |                                    |
|-----------------------|----------------------------|------------------------------------|
| 1) विधीभेदाने – 2     | 1) शारीर 2) मानस           | 1) सोम्य 2) आग्नेय                 |
|                       | 1) अन्तर्वेगी 2) बहिर्वेगी | 1) प्राकृत 2) वैकृत                |
|                       | 1) साध्य 2) असाध्य         |                                    |
| 2) काल बल अबल भेद – 5 | 1) संतत 2) सतत             | 3) अन्येयुष्क 4) तृतीयक 5) चतुर्थक |
| 3) आश्रयभेद से – 7    |                            |                                    |
| 4) कारण भेद से – 8    |                            |                                    |

**मनसंताप लक्षण** – वैचित्यमरतिगर्लानि: मनसंतापलक्षणम् ।

**इंद्रियतापलक्षण** – इंद्रियाणां च वैकृतं ज्ञेयं संतापलक्षणम् ।

**सोम्य** – आग्नेय ज्वर / वायुयोगवाहित्व –

योगवाहः परं वायुः संयोगादुभयार्थकृत् ।  
दाहकृत् तेजसा युक्तं शीतकृत् सोमसंश्रयात् ॥

अंतर्वेगी ज्वर	बहिर्वेगी ज्वर
अन्तर्दाह, तृष्णाधिक्य, ऋलाप, श्वसन, भ्रम, सन्धिअस्थिशूल, अस्वेद दोषवर्चोविनिग्रह	संतापो अभ्यटिको बाह्यः तृष्णादीनां च मार्दवम्

**प्राकृत व वैकृत ज्वर** – प्राकृतः सुखसाध्यस्तु वसन्तशरदुद्धवः ।

- |  |          |
|--|----------|
| 1) वसंत ऋतुजन्य – कफज ज्वर               | सुखसाध्य |
| 2) शरद ऋतुजन्य – पित्तज ज्वर             |          |
| 3) वर्षा ऋतुजन्य – वातज ज्वर – कष्टसाध्य |          |

**वैकृत ज्वर** –

- |  |           |
|--|-----------|
| 1) वसंत ऋतुव्यतिरिक्त उत्पन्न कफज ज्वर   | कष्टसाध्य |
| 2) शरद ऋतुव्यतिरिक्त उत्पन्न पित्तज ज्वर |           |

**साध्यज्वर लक्षण** – बलवत्स्वल्प दोषषु ज्वरः साध्यः अनुपद्रवः ।

बलवान् रूगण, स्वल्पं दोष व उपद्रवरहीत ज्वर – साध्य

**ज्वर कालमर्यादा** – वातज – 7 दिन पित्तज – 10 दिन कफज – 12 दिन

**असाध्य ज्वर लक्षण** – 1) क्षीण व्यक्तीयों का शोथयुक्त ज्वर

- |  |
|--|
| 2) गम्भीर व दैर्घ्यरात्रीक ज्वर (दीर्घ कालतक रहनेवाला) |
| 3) बलवान् ज्वर व केशसीमन्तकृत ज्वर                     |

**निष्प्रत्यनीक के कारण संतत ज्वर दुःसह** –

कालप्रकृतिभिर्दोषस्तुल्यो हि सन्ततम् ।

निष्प्रत्यनिकः कुरुते तस्माज्ज्ञेयः सुदुःसह ॥

काल, दूष्य, और प्रकृति के तुल्य होने से और जिसका कोड भी विरोधी न हो एसे बातादी दोष संतत ज्वर को उत्पन्न करते हैं अतः यह ज्वर दुसह होता है।

संतत ज्वर के आश्रय - द्वादश (सप्त धातु, त्रय दोष, मूत्र व मल)

विषम ज्वर लक्षण -

- 1) संतत ज्वर - द्वादश आश्रय शुद्ध होनेपर छुटता है।
- 2) सतत ज्वर - अषेरात्र में दो काल अनुवर्तन (दो बार उत्पन्न होता है )
- 3) अन्येद्युष्क ज्वर - अहर्निश में एक बार उत्पन्न होता है।
- 4) तृतीयक ज्वर - एक दिन के अन्तर से उत्पत्ति
- 5) चतुर्थक ज्वर - दो दिन के अन्तर से ज्वर उत्पत्ति विषम।

विषमज्वर धातुगतत्व	चरक	सुश्रुत
संतत	रसगत	संतत - रसगत
सतत	रक्तगत	सतत - रक्तगत
अन्येद्युष्क	मेदोगत	अन्येद्युष्क - मांसगत
तृतीयक - चतुर्थक	अस्थीमज्जागत	तृतीयक - मेदोगत
-----	-----	चतुर्थक - अस्थीमज्जागत

विषमज्वर वेग आने के हेतु मे उपमा -

अधिशोते यथा भूमि बीजं काले च रोहति ।

अधिशोते तथा धातुं दोषः काले च कुप्यति ॥

तृतीयक ज्वर प्रकार - 3

- 1) शिरोग्राही - वातपित्तज
- 2) पृष्ठग्राही - वातकफज
- 3) त्रिकग्राही - पित्तकफज

चतुर्थक ज्वर प्रकार - 2

- 1) वातप्रधान - शिरपिडा
- 2) कफप्रधान - जंघापिडा

चतुर्थक विपर्यय विषम ज्वर - त्रिविध दोष द्विधातु ( अस्थी व मज्जा) मे आश्रीत होते हैं तो चतुर्थक विपर्यय

प्रथम दिन ज्वर न आकर दो दिना ज्वरवेग व पुनःचतुर्थ दिन ज्वर विश्राम

विषमज्वर (संतत सततादी) प्रायः सान्निपातज होते हैं।

धातुगत ज्वर लक्षण -

धातुगत ज्वर	लक्षण
1) रसगत	गुरुत्व, दैन्य, उद्वेग, छर्दि, अरोचक, बहिस्ताप, अंगमर्द, विजृम्भणम्
2) रक्तगत	पिडका, तृष्णा, मुहु सरक्त ष्ठीवन, दाह, राग, भ्रम, मद, प्रलाप,
3) मांसगत	अंतर्दाहि, तृष्णा, मोह, ग्लानी, सृष्टविटकता, दौर्गैर्ध्य, गात्रविक्षेप,
4) मेदोगत	तीव्रस्वेद, पिपासा, प्रलाप, वम्यभीक्षणशः(पुनःपुनःवमन), स्वगन्धस्य असहत्वं, ग्लानी अरोचक
5) अस्थीगत	विरेक (अतिसार), वमन, अस्थीभेद, प्रकूजन, विक्षेपणं च गात्राणां, श्वास
6) मज्जागत	हिकका, श्वास, कास, तमोदर्शन, मर्मच्छेद, बहिशैत्य दाह अन्त
7) शुक्रगत	शुक्रनाश, प्राणं वाय्वग्निसोमैश्च सार्थं गच्छत्यसौ विभुः

धातुगत ज्वर साध्यासाध्यता –

- 1) रस रक्त मांस मेंदगत ज्वर – साध्य
- 2) अस्थीमज्जागत ज्वर – कष्टसाध्य
- 3) शुक्रगत ज्वर – असाध्य

द्वंद्वज ज्वर लक्षण –

- 1) वातपित्तज ज्वर – शिरोरूक, पर्वणां भेद, दाह, रोमहर्ष, कण्ठास्यशोष, वमथु, तृष्णा, मूर्च्छा, भ्रम, अरुचि, स्वप्ननाश, अनिवाग, जृम्भा.
- 2) वातकफज ज्वर – शीतक, गौरव, तन्द्रा, स्तैमित्य, पर्वणाम रूक, शिरोग्रह, प्रतिश्याय, कास, स्वेदाप्रवर्तन सन्ताप, मध्यवेगी ज्वर
- 3) कफपित्तज ज्वर – मुहुर्दाह मुहुः शीत, स्वेदस्तम्भ मुहुर्मुहु, मोह, कास, अरुचि, तृष्णा, इलेघपित्तप्रवर्तन, लिप्तिकास्यता, तन्द्रा.

सान्निपातज ज्वर प्रकार – 13

सम सान्निपातज ज्वर लक्षण – क्षणे दाह क्षणे शीत, सन्धिअस्थिशिरोरूजा ।

सास्त्रावे कलुषे रक्ते निर्भुगे चापि दर्शने। सस्वनौ सरूजौ कण्ठः शूकैरिवावृत ॥  
 तन्द्रा मोह प्रलापश्च कासः श्वासोऽरुचिर्भूमः । परिदग्धा खरस्पर्शा जिव्वा स्त्रस्तांगता परम् ॥  
 छीवनं रक्तपित्तस्य कोठतोन्मिश्रितस्य च । शिरसो लोठनं तृष्णा निद्रानाशो हुदि व्यथा ॥  
 स्वेदमूलपुरीषाणां चिरादर्शनं अल्पशः । कृशत्वं नातिगत्राणां प्रततं कण्ठकूजनम् ॥  
 कोठानां श्यावरकानां मण्डलानां च दर्शनम् । मूकत्वं स्त्रोतसां पाको गुरुत्वमुदरस्य च ॥  
 चिरात् पाकश्च दोषाणां सन्निपातज्वराकृतिः ।

सान्निपातज ज्वर साध्यासाध्यता –

दोषे विबद्धे नष्टेऽग्नौ सर्वसंपूर्णलक्षणः ।  
 सान्निपातज्वरोऽसाध्यः कृच्छसाध्यस्त्वतोऽन्यथा ॥

- 1) दोष विबद्धता
- 2) अनि नष्ट होना
- 3) सर्व लक्षण व्यक्त होना

असाध्य . इसके विपरीत लक्षण – कष्टसाध्य

आगांतुज ज्वर – 4

1) अभिधातज ज्वर –

हेतु – इस्त्र, लोष्ट, कशा, काष्ठ, मुष्टि, अरनितल, द्विज (दंत), आदी से आधात  
 लक्षण – व्यथा, शोफ, वैवर्ण्य, रूजायुक्त ज्वर दोषाधिक्य – वात + रक्त

2) अभिषंगज ज्वर –

हेतु – विषवक्षानिलस्पर्श,

कामशोकभयात् – वायु क्रोधात् – पितं भूताभिषंगात् – त्रयो मला

3) अभिचारज ज्वर – (मारण, मोहन, उच्चाटन आदी से उत्पन्न ) ] सान्निपातज

4) अभिशापज ज्वर – शाप द्वारा उत्पन्न ]

अभिषंगज ज्वर लक्षण –

- 1) कामज ज्वर – ध्यान निश्चासबहुलं कामज्वरे स्मृतम् ।
- 2) शोकज ज्वर – शोकजे बाष्पबहुलं

- 3) भयज ज्वर - त्रासप्रायं भयज्जरे ।
- 4) क्रोधज ज्वर - क्रोधजे बहुसंरम्भं ।
- 5) भूतावेशज ज्वर - भूतावेशे तु अमानुषम् ।
- 6) विषजन्य ज्वर - मूर्च्छामोहमदग्लानिभूयिष्ठं विषसंभवे ।

तरुण ज्वर मे स्वेद न आने का कारण - स्त्रोतस सन्निरोध व स्पस्थान से प्रच्युत अग्नि

आम ज्वर लक्षण	पच्यमान ज्वर लक्षण	निराम ज्वर लक्षण
अरुचि अविपाक, उदरगुरुत्व, हुदयस्याविशुद्धी, तन्द्रा, आलस्य, ज्वरोऽविसर्गी, बलवान ज्वर, दोषाणामप्रवर्तन, लाताप्रसेक, हुल्लास, क्षुन्नाश, मुखविरसता, बहुमूत्रता स्तब्धसुप्तगुरुत्वं च गात्राणां, न विड जीर्णा, न च ग्लानी	ज्वरवेगोऽधिकः, तृष्णा प्रलाप, श्वसन, भ्रम, मलप्रवृत्ती (अतिसार) उत्क्लेश	धृत (अग्निदीप्ती) क्षामता (कृशता), लघुत्व च गात्राणां, ज्वरमार्दवं, दोष प्रवृत्तीः, अष्टाहो

नवज्वर मे निषेध - दिवास्वाप, स्नान, अभ्यंग, मैथुन, अन्नसेवन, क्रोध, प्रवात, व्यायाम, कषाय प्रयोग

ज्वर मे सर्वप्रथम चिकित्सा - लंघन

अपवाद - क्षयानिलभयक्रोधकामशोकश्रमोद्भवज ज्वर, पुराणज्वर, क्षेत्रज ज्वर - शमने तम उपाचरेत (272)

लंघन फल - 1) दोष क्षय 2) अग्निसंधुक्षण 3) विज्वरत्व 4) लघुत्व

लंघन मर्यादा - प्राणाविरोधिना चैद लंघनेनोपपादयेत् । बलाधिष्ठानमारोग्य यदर्थोऽयं क्रियाक्रमः ॥

तरुण ज्वर चिकित्सा सूत्र (दोषपाचक साधन) -

लंघन स्वेदनं कालो यवागुः तिक्को रसः ।

पाचनानि अविपक्वानां दोषाणां तरुणे ज्वरे ॥

ज्वर मे जलप्रयोग -

1) वातकफज ज्वर - उष्णोदक

2) मद्योत्थ व पित्तज ज्वर - तिक्करस सिद्ध शीत जल

उपरोक्त उभय जल गुणधर्म - दीपन, पाचन, ज्वरधम, स्त्रोतोशोद्धन, बल्य, रूचिकर, स्वेदकर, शिव (लाभकर)

षडंगपानीय -

मुस्तपर्षटकोशीर चंदनोदिच्यनागरैः । श्रृतशीतं जलं देयं पिपासा ज्वर शांतये ॥

ज्वर मे वमन कर्म - 1) कफप्रधान ज्वर

2) उत्क्लिष्ट दोष

3) आमाशयस्थित दोष

तरुण ज्वर मे वमन निषेध अवस्था - तरुण ज्वर मे अनुपस्थित दोष होनेपर वमन करने से हुद्रोग श्वास इ.

ज्वर मे यवागु प्रयोग अवस्था - 1) यावद् ज्वर मृदू भावात् 2) अथवा 6 दिन तक

यवागु प्रयोग से लाभ - 1) भेषजसंयोगात् लघुत्वात् अग्निदीपन

2) वातमूत्रपुरीष व दोषानुलोमन

3) द्रव व उष्ण होने के कारण स्वेदन करती है

4) द्रवत्वात् तृट शांती

5) आहारभावात् प्राणाय (प्राणवर्धक)

6) सरत्वात् लाघवाय

7) ज्वरधन्यो ज्वरसात्म्यत्वात् तस्मात् पेयाभिरादितः ।

यवाग् प्रयोग अपवाद -

1) मदात्यय 2) मद्यनित्य 3) पित्तकफाधिक्य ज्वर 4) ग्रीष्म ऋतु 5) उर्ध्वग रक्तपित्त  
ज्वर मे कषाय देने की अवस्था – 6 दिन व्यतीत होने पर अपक्व दोष मे पाचन व निराम दोष मे शमनीय कषाय  
तरुण ज्वर मे कषाय से हानी – 1) दोष स्तम्भन

2) स्तम्भित दोष बध्द होने से विषमज्वर उत्पत्ती

न तु कल्पनमुद्दिश्य कषायः प्रतिषिध्यते । यः कषायकषायः स्यात् स वर्ज्यस्तरुणज्वरे ।

नवज्वर मे श्रृत शीत आदी कषाय का निषेध नहीं पर कषाय रसात्मक क्वाथ का निषेध है ।

ज्वर मे घृतपान देने की अवस्था -

अतः उर्ध्व कफे मन्दे वातपित्तोत्तरे ज्वरे ।

परिपक्वेषु दोषेषु सर्पिष्यानं यथाऽमृतप् ॥

घृतपान मे अपवाद – 1) दश दिन पश्चात भी कफ प्रधानता होनेपर

2) लंघन के पूर्ण लक्षण उपस्थित न होनेपर

इस अवस्था मे कषाय पान करना चहिए

ज्वर मे क्षीरपान अवस्था – 1) दाहत्यापगैतस्य 2) वातपित्ताधिक ज्वरत 3) बध्दप्रच्युत दोष 4) निरामावस्था

उपरोक्त चिकित्सा से ज्वर शान्ति न होनेपर अक्षीणबलमांसाग्नि अवस्था मे विरेचन चिकित्सा करे ।

ज्वरक्षीण व्यक्ति मे क्षीर द्वारा निरूह -

ज्वरक्षीणस्य न हितं न वर्मनं न विरेचनम् ।

कामं तु पयसा तस्य निरूहरैर्वा हरेन्मलान् ॥

1) ज्वर मे स्त्रंसन (विरेचन) – पित्तशायगत पित्त वा कफपित्त निर्हरण

2) ज्वर मे निरूह – पक्वाशयगत वात पित्त कफ निर्हरण

ज्वर मे अनुवासन अवस्था -

ज्वरे पुराणे संक्षीणे कफपित्ते दृढाग्नये ।

रूक्षबध्द पुरीपाय प्रदद्याद् अनुवासनम् ॥

# TIERRA

ज्वर मे नस्य योग्य अवस्था -

गौरवे शिरसः शूले विबद्धेषु इन्द्रियेषु ।

जीर्णज्वरे रूचिकरं कूर्यान्मूर्धविरेचनम् ॥

ज्वर मे यूष योग्य द्रव्य – मुदग, मसूर, चणक, कुलत्थ, मकुष्ठक.

ज्वर मे शाक – पटोलपत्र, कुलक, पापचेलिक (पाठा), कर्कोटक, कठिल्ल

ज्वर मे पाक्य या शीतकषाय – मुस्तपर्पटक / नागरपर्पटक / किराततिक मुस्ता गुडूचि विश्वभेषज

विषमज्वरनाशक पाच कषाय -

1) कलिंगका: पटोलस्य पत्रं कटुकरोहिणी

2) पटोल: सारिवा मुस्तं पाठा कटुकरोहिणी

3) निम्बः पटोल: त्रिफला मृद्विका मुस्तवत्सकौ

4) किराततिकं अमृता चन्दनं विश्वभेषजम्

5) गुडूच्यामलकं मुस्ता अर्धश्लोकसमापना:

ज्वर घृतप्रयोग का आधार -

ज्वरः कषायैः वमनैः लंघनैः लघुभोजनैः रूक्षस्य ये न शाम्यन्ति – सर्पिः तेषां भिषग्जितम्

- 1) रुक्षं तेजो ज्वरकरं [रुक्ष तेज (द्रवहीन पित्त) ज्वर को उत्पन्न करता है] इससे बाद मे प्रकुपित  
2) तेजसा रुक्षितस्य च [ तेज से शरीर रुक्ष होता है ] वात स्नेह सेही साध्य

### जीर्ण ज्वर मे क्षीर श्रेष्ठता -

जीर्णज्वराणाम् सर्वेषां पयः प्रशमनं परम् । पेयं तदुष्णं शीतं वा यथास्वं भेषजैः श्रृतम् ॥  
ज्वर के दाह मे – चन्दनादी तैलाभ्यंग वा शतधौत घृत अभ्यंग हितकर  
शीतज्वर नाशनार्थ – अगुर्वादी तैल  
उष्ण ज्वर नाशनार्थ – चन्दनादी तैल

### निराम ज्वर प्राप्ति काल -

सप्ताहेन हि पच्यन्ते सप्तधातुगता मलाः ।  
निरामश्चाप्यतः प्रोक्तो ज्वरः प्रायो अष्टमेऽहनि ॥

**ज्वर मे लंघन योग्य अवस्था** – 1) सामज्वर 2) कफज ज्वर 3) कफपित्तज्वर

### सान्निपातज ज्वर चिकित्सा सूत्र -

वर्धनेन एकदोषस्य क्षणेन उच्छ्रुतस्य वा ।  
कफस्थानानुपूर्व्या वा सन्निपातज्वरं जयेत् ॥

**सान्निपातज ज्वर उपद्रव** – सान्निपातज ज्वर के अन्न मे – कर्णमूल शोथ उतारी

चिकित्सा- 1) रक्तावसेचन 2) सर्पिपान 3) कफपित्तज्वर प्रदेह, नावन, कवलग्रह

### ज्वर मे रक्तमोक्षण -

शीतोष्णस्निग्धरुक्षादयैः ज्वरे यस्य न शाम्यति ।  
शाखानुसारी रक्तस्य सोऽसेकात् प्रशाम्यति ॥

ज्वर मे घृतपान – विसर्पोत्तन्न ज्वर, अभिघातोत्पन्न ज्वर, विस्फोटज ज्वर, कफपित्ताप्राधान्य न हो – आदौ सर्पिपान

### जीर्णज्वर सम्प्राप्ती व चिकित्सा सूत्र -

दौर्बल्याद् देहधातूनां ज्वरे जीर्णनुवर्तते ।  
बल्यः संबृहणैः तस्मात् आहारस्तमुपाचयेत् ॥

**विषमज्वर वैशिष्ट्य** – आगन्तुरनुबन्धो हि प्रायशो विषमज्वरे ।

### विषमज्वर चिकित्सा सूत्र - कर्म साधारणं जह्यात् तृतीयचतुर्थकौ ।

- 1) वातप्रधान विषमज्वर – सर्पि, बस्ती, अनुवासन, स्निग्धौष्ण अन्नपान
- 2) पित्तप्रधान विषमज्वर – विरेचन, तिक्त शीत सिद्ध पय व सर्पि
- 3) कफप्रधान विषमज्वर – वमन, पाचन, रुक्षान्नपान, लंघन, कषायोष्ण द्रव्य प्रयोग

### विषमज्वर मे इतर चिकित्सा -

- 1) नस्य – वैयाघ्री वसा सैंधव व हिंगु तुल्य भाग नस्य, किंवा सिंह वसा सैंधव व पुराणसर्पि नस्य
- 2) अंजन- सैंधव, पिप्पली तण्डुल, मनःशिला तैलपिष्ट कर अंजन
- 3) धूप – पलंकषा, निम्बपत्र, वचा, कुष्ठ, हरीतकी, सर्षप, इ> द्वारा
- 4) दैवव्यापाश्रय – मणि, औषध, मांगलिक द्रव्य, विष व अगद धारण. विष्णुसहस्रनाम पाठ

### सप्तधातुगत ज्वर चिकित्सा सूत्र -

ज्वरे रसस्थे वमनमुपवासं च कारयेत्  
सेकप्रदेहौ रक्तस्थे तथा संशमनानि च ।  
विरेचनं सोपवासं मांसमेदःस्थिते हितम् ।

अस्थीमज्जागते देया निरुहाः सानुवासनाः ॥

### आगंतुज ज्वर चिकित्सा –

- 1) अभिचारज, अभिशापज, अभिषंगज ज्वर – दैवव्यपाश्रय चिकित्सा
  - 2) अभिधातज ज्वर – सर्पि पान व अभ्यंग, रकावसेचन, सात्य मांसरसौदन सेवन, क्षत व द्रवण मे क्षतव्रणचिकित्सा
  - 3) काम शोक भयज ज्वर – आश्वासन, इष्टलाभ, वायु प्रशमन, हर्षण
  - 4) क्रोधज ज्वर – काम्यैः मनोज्ञैः, पित्तघ्न उपक्रम, सद्वाक्य
- कामात् क्रोधज्वरो नाशं क्रोधात् कामसमुद्भव। याति ताभ्यामुभ्यां च भयशोकसमुत्थितः ॥

### ज्वर मोक्ष लक्षण –

ज्वर प्रमोक्षे पुरुषः कूजन् वमति चेष्टते । श्वसन्विवर्णः स्विन्नाङ्गो वेपेते लीयते मुहुः ॥  
प्रलपति उष्णासर्वांगः शीतांगश्च भवत्यपि । विसंज्ञो ज्वरवेगार्तः सक्रोध इव वीक्ष्यते ॥  
सदोषशब्दं च शकृद्रवं स्त्रवति वेगवत् ॥

दारूण मोक्ष	अदारूण मोक्ष
बलवान् व्यक्तीमे बहुदोषयुक्त नूतन ज्वर सल्लिया द्वारा दोष के पचन होने से मोक्ष हो जाता है।	जो ज्वर दोष अपना समय पूर्ण कर लेने के बाद क्रमशः कम होता है, चीरकारी ज्वर मे अदारूण मोक्ष होता है।

### पुनरावर्तक ज्वर –

हेतु – ज्वरमुक्ती पश्चात् असंजातबल अवस्था मे स्वल्प अपचार से ही ज्वर का पुनः आगमन होता है ।

### चिकित्सा –

- 1) मृदू शोधन
- 2) यापन बस्ती
- 3) लघुअ यूष, जांगल पशु पक्षी मांसरस
- 4) अभ्यंग, उद्वर्तन, स्नान, धूप, अंजन, तिक्त द्रव्य सिद्ध घृत

**TIERRA**

## रक्तपित्त

**वैशिष्ट्य** – महागदं महवेगं अग्निवत् शीघ्रकारी च ।

**सम्प्राप्ति** – तस्योष्मणा द्रवो धातुर्धातोः प्रसिद्धते । स्विदयस्तेन संवृद्धिं भूयस्तद् अधिगच्छति ॥

**रक्तपित्त आश्यस्थान** – यकृत् प्लीहा , रक्तवाही धमन्या

**प्रकानुरूप लक्षण** –

- 1) वातज – इयाव अरूण सफेन तनु रूक्ष रक्तपित्त
- 2) पित्तज – कषायाभं कृष्ण गोमूत्रसन्निभ मेचक (अनेक वर्ण मिश्रीत), अगारधूमाभ अंजनाभ
- 3) कफज – सान्द्र पांडू सस्नेह पिच्छिल

**साध्यासाध्यता** –

- 1) साध्य – एक दोषानुग
- 2) द्विदोषज – याप्य
- 3) त्रिदोषज – असाध्य

मन्दाग्ने: अतिवेगवत्

व्याधिभिः क्षीणदेहस्य

वृद्धस्य अनश्नतस्य (आहार ने लेनेवाला वृद्ध व्यक्ती



असाध्य

**रक्तपित्त गति** – द्विधा

- 1) उर्ध्व – सप्तविध द्वाग
- 2) अधोग – द्विद्वारा

**मार्गानुसार साध्यासाध्यत्व** –

- 1) उर्ध्वग – साध्य
- 2) अधोग – याप्य
- 3) उभय मार्गज – असाध्य

**आन्तिकी गति** – सर्व छिद्र / रोमकूप से होनेवाली रक्तपित्त की प्रवृत्ती = ताम् असंख्येयाम् ।

**लक्षणानुसार साध्यासाध्यता** –

- 1) साध्य – एक मार्गज, बलवान् व्यक्तीमें, नवोत्थित, न अतिवेगवान् (हेमंत व शिशिर ऋतु में,) सुखकर काल में, उपद्रवरहीत
- 2) याप्य – यद् द्विदोषानुगं यद्वा शान्तं शान्तं प्रकुप्यति ।  
मार्गान्मार्गं चरेद् यदा याप्यं पित्तम् असृक च तत् ॥  
  - 1) प्रकोप होकर पुनः शान्त होनेवाला
  - 2) मार्ग बदलकर विचरण करनेवाला
- 3) असाध्य – कुणपगंधी, कंठेसज्जती, सर्व उपद्रवयुक्त  
क्षीण व कासमान व्यक्तीका

**रक्तपित्त विशेष हेतु** –

- 1) उर्ध्वग – स्निग्ध उष्ण अन्नपान
- 2) अधोग – रूक्ष उष्ण अन्नपान

**दोष अनुबंध** –

- 1) उर्ध्वग – कफानुबंधी

- 2) अधोग – वातानुबंधी
- 3) द्विमार्गग – कफवातानुबंधी

चिकित्सासूत्र –

अक्षीणबलमांसरय रक्तपित्तं यदश्नतः । तदोषदुष्टं उत्क्लिष्टं न आदौ स्तंभनमहति ॥

- |  |   |              |
|--|---|--------------|
| 1) बल व मांस क्षीण न हो एसे व्यक्ती मे | ] | स्तंभन निषेध |
| 2) सम्प्रक रूप मे भोजन करनेवाला        |   |              |
| 3) दोष उत्क्लिष्ट हो                   |   |              |
- आम दोष से दूषीत रक्त उत्क्लिष्ट होता है इसलिए – सर्वप्रथम लंघन करना चाहिए
- उर्ध्वग रक्तपित्त – तर्पण
- अधोग रक्तपित्त – पेया
- तर्पणार्थ योग – खर्जुरादी तर्पण, लाज तर्पण
- मन्दाग्नि व अम्लसात्य व्यक्ती मे – अम्ल रस प्रयोग – दाढ़िम आमलकी

दोषानुसार पथ्य –

- 1) कफानुग मे – यूषशाक
- 2) वातानुग मे – मांसरस

रक्तपित्त मे शोधन / वमन विरेचन अवस्था –

- 1) बहुदोष व बलवान रूगण
- 2) अक्षीणबलमांस रूगण
- 3) समर्पणोत्तित्व रक्तपित्ती रूगण
- 4) उपद्रवरहीत व संशोधन अर्ह हो

उर्ध्वग मे – विरेचन

अधोग मे : वमन

संशमनार्थ अवस्था –

- 1) बलमांसपरिक्षीण
- 2) शोक भार अध्व कर्णीति
- 3) गर्भिणी बाल स्थविर
- 4) रुक्ष अल्प प्रमिताशिन
- 5) अवाम्य अविरेच्य
- 6) शोष अनुबंधी (शोष से ग्रस्त हो)

ग्रथीत रक्तपित्त मे – पारावत शकृत मधु सह लेहन

रक्त प्रयोग – धन्व मृग का असूक मधुसह लेहन

मूत्रमार्गगत रक्तपित्त मे –

- 1) शतावरी गोक्खुर सिद्ध पय
- 2) पर्णिनी (शालपर्णी पृश्निपर्णी मुद्रपर्णी माषपर्णी) इनमेसे एक सिद्ध पय

गुदमार्गगत रक्तपित्त –

- 1) मोचरस सिद्ध क्षीर
- 2) वटप्ररोह वटशुंग सिद्ध पय
- 3) हीबेर नीलोत्पल नागर सिद्ध पय

कफानुबंधी कंठगत ग्रथीत रक्तपित्त मे – उत्पलनाल क्षात मधुसर्पिसह प्रयोग

नासागत रक्तपित्त –

दुष्ट दोष होनेपर उपेक्षा  
अवपीड नस्य प्रयोग

विहार चिकित्सा –

धारगृह भूमीगृह सुशीत वन रम्य शीतजल उपवन इ.  
वैदूर्य मुका मणी स्पर्शन

योग –

- 1) उशीरादी चूर्ण
- 2) किराततिकादी चूर्ण
- 3) वासाधृत
- 4) शतावर्यादी धृत

प्रशस्त शाक – पटोल निम्ब गण्डीर

### गुल्मचिकित्सा

संप्राप्ति –

कफं च पितं च स दुष्टवायुरुद्धूय मार्गान् विनिष्ठ्य ताभ्याम् ।

लक्षण – ह्रुत नाभी पार्श्व बस्ती उदरशूल

आश्रय – पक्वाशय वा पित्ताशय स्वंतंत्र वा परतंत्र आश्रय

स्वरूप – स्पर्शोपलभ्य परिपिंडीतत्वात् गुल्मो यथा दोषं उपैति नाम ।

सुश्रुतोक्त स्वरूप – ह्रुदयोन्तरे ग्रन्थिः संचारि यदि वा अचलः ।

चयापचयवान वृत्तः स गुल्म इति कीर्तिः ॥

गुल्म पञ्च स्थान – बस्ती नाभी ह्रुदय उभय पार्श्व

प्रकार – 5

1) वातज गुल्म – यः स्थानसंस्थान रूजा विकल्प (स्थान आश्रय, सस्थान – आकृती ) विकल्प – विषम

इयाव अरुन्त्व शिशिरज्वर, ह्रुत पार्श्व रूजा

जीर्णे अभ्यधिकं प्रकोपं भुक्ते मृदूत्वं

2) पित्तज गुल्म – ज्वर पिपासा बदन अंगराग

शूलं महत जीर्यति भोजने च

स्वेद व्रणवत विदाह, स्पर्शासह

3) कफज गुल्म – शीतज्वर गात्रसाद स्तैमित्य हुल्लास अरुची

कठिन उन्नत गुल्म

4) सान्निपातज/ निचय गुल्म – महारूजं, दाहपरितं अश्मवत घन उन्नतं

शीघ्रविदाही दारूण

मनःशरीरबलापहारीणं

असाध्य

5) रक्तज गुल्म –

हेतु – ऋतावनाहारतया (ऋतुकाल मे भोजन न करना )

विरुद्धण वेगनिग्रह स्तंभन उल्लेखन योनीदोष

- रूप – यः स्पंदते  
 पिंडीत एव  
 न अंगैः  
 सशूल  
 समगर्भ लिंग

चिकित्सा – मासे व्यतीते दशमे चिकित्स्य

चिकित्सा –

1) वातज गुल्म – तीव्रवेदनायुक्त बध्दविष्मूत्रमारुत – स्नेहन स्वेदन

- 1) उर्ध्वनाभीज गुल्म – स्नेहपान  
 2) पक्ताशयास्त्रीत – बस्ती  
 3) जठराश्रीत – उभय उपक्रम

बृहण – दीपाग्नि अवस्था मे परतु बधानिलवर्चस होनेपर

पुनः पुनः स्नेहपानं निरूहाः सनुवासनः । प्रयोज्या वातगुल्मेषु कफपित्तानुरक्षिणः ॥

वातज गुल्म मे वातरक्षण –

आदावन्ते च मध्ये च मारुतं परिरक्षता । चि 5/28

वातज गुल्म मे वमन – कफाधिक्य से अग्निहनन हो व हृल्लास गौरव तंद्र होनेपर

वर्ती प्रयोग – शूल आनाह विबंध होनेपर

रक्तमोक्षण – इतर सर्व उपाय से वातादी शांत ने होनेपर

2) पित्तज गुल्म –

स्त्रंसन – स्निग्ध उष्ण उदिते गुल्मे पैत्तिके स्त्रसनं हितम् ।

सर्पि चिकित्सा – रुक्ष उष्ण से उत्पन्न गुल्म मे

क्षीरबस्ती – पक्वाशयस्थित पित्तज गुल्म मे तिक्तसिध्द क्षीरबस्ती हितकर

रक्तमोक्षण – तृष्णाज्वर परिदाहशूल स्वेद अग्निमार्दव व अरुची मे हितकर

रक्तमोक्षण उपयोगिता –

छिन्नमूला विद्वान्ते न गुल्मा यान्ति च क्षयम् । रक्त हि व्यम्लतां याति तच्च नास्ति च अस्ति रूक् ॥

1) छिन्नमूला – गुल्म समूल नष्ट होता है

2) न विद्वान्ते – विदाह नहीं होता है

3) गुल्मा यान्ति च क्षय – गुल्म का क्षय होता है

4) रक्तम्लता उत्पन्न करनेवाला रत निर्हरण होने से रुजा नाशन

रक्तमोक्षण पश्चात – जांगल मांस द्वारा तर्पण, शेष अर्ति नाशनार्थ – सर्पि अभ्यास

पित्तज गुल्म मे शस्त्रकर्म –

रक्तपित्तातिवृद्धत्वात् क्रियामनुपलभ्य च । यदि गुल्मो विद्वैत शस्त्रं तत्र भिषणितम् ॥

1) रक्त व पित्त अतिवृद्ध हो

2) इतर क्रिया से लाभ न हो

3) पित्तज गुल्म मे विदाह हो

शस्त्र चिकित्सा

## पित्तज गुल्म अवस्था

आमावस्था	पच्यमानावस्था	पक्वावस्था
गुरु कठिन संस्थान	दाह शूल अर्ति	मध्य इयाव व बाह्य रक्तवर्ण
गूढमांसान्तराश्रयी	क्षोभ स्वप्ननाश	संस्पर्शे बस्तीनिभे
अविवर्ण व स्थिर	ज्वर	निपिडेते उन्नते पिंदीत स्तब्ध

पक्व गुल्म चिकित्सा – तत्र धान्वन्तरीयाणा अधिकारः – तत्र व्यधन शोधन रोपण

आभ्यंतर पक्व गुल्म उपेक्षा – 10 – 12 दिनापर्यन्त

अन्तःपक्व गुल्म चिकित्सा – विद्रधीवत् करे ।

विशोधन द्रव्य सिध्द सर्पिंपान

पूयनिर्हरण पश्चात तिक्त सर्पि प्रयोग मधुसह

अन्तविध्रधिवत् च अस्य कार्ये शोधन रोपणे

### 3) कफज गुल्म चिकित्सा –

1) लंघन – शीत गुरु स्निग्ध आदी हेतु से उत्पन्न कफज गुल्म मे जाठराग्नि मंद हो व  
वमन योग्य अवस्था हो तो लंघन करे

2) वमन – मंदाग्निता, वेदना भी मंद हो, गुरुस्तिमितकोष्ठता, उन्क्लेश अरूची होनेपर

3) स्वेदन व विलयन – आनाहयुक्त सविबन्ध कठिन उन्नत गुल्म मे  
स्थानादपसृत गुल्म मे – विरेचन व बरती प्रयोग

4) क्षार अरिष्ट अग्निकर्म – कृतमूल महावस्तु कठिन स्तिमित गुरु गुल्म मे  
क्षारप्रयोग कर्म – पित्ता छित्वा आशयात् क्षारः क्षरत्वात् क्षारयति अथः ।

5) अरिष्ट प्रयोग – मन्दाग्नि अरूची मद्यसेवी व स्नेहसेवी गुल्मी मे – मार्गशुद्ध्यर्थ

6) दाह / अग्निकर्म – लंघन उल्लेखन स्वेदन सर्पि विरेचन बस्ती गुटिका चूर्ण आदी से  
कृतमूलवान गुल्म शान्त न होनेपर दहन कर्म

### एंडडैल प्रयोग –

**TIERRA**  
वातज गुल्म मे कफज अनुबंध होनेपर – वारूणी मंडसह

वातज गुल्म मे पित्त का अनुबंध होनेपर – क्षीरसह

### गुल्म मे बस्तीकर्म श्रेष्ठता –

बस्तीकर्म परं विद्याद् गुल्मधनं तद्वि मारूतम् । स्वे स्थाने प्रथमम जित्वा सद्यो गुल्मं अपोहति ॥

### गुल्म मे अग्निरक्षण –

मन्देग्नौ वर्धते गुल्म दीप्ते चाग्नौ प्रशास्यति । तस्मान्ना नातिसौहित्यं कुर्यात् न अतिविलंघनम् ॥

### गुल्म मे अग्निरक्षण व निदानपरिवर्जन –

समप्रकोपौ दोषाणां सर्वेषामग्निसंश्रितौ । तस्मादग्निं सदा रक्षेद् निदानानि च वर्जयेत् ॥

### कफज गुल्म मे घटप्रयोग –

वमन अर्ह गुल्मी मे वमन पश्चात गुल्म शिथीलीकरण

गुल्म परिवेष्टन ततपश्चात घट मे अग्नि प्रदीप्त कर वह घट गुल्म पर स्थापन

वस्त्र मे गुल्म प्रवेशीत कर गुल्म मे भेदन करे । पीडन कर गुल्म दोष निहरण

### सर्व गुल्म सामान्य चिकित्सा –

सर्वत्र गुल्मे प्रथमं स्नेहस्वेदोपपादिते । या क्रियते सिद्धिं सा याति न विरुक्षिते ॥ च.चि. 5/113

### असाध्य गुल्म लक्षण –

- 1) महावास्तु परिग्रह
- 2) कृतमूल
- 3) सिरानध्द (सिराजाल आवरित)
- 4) कूर्म इव उन्नत
- 5) दौर्बल्य हुल्लास अरुची कास वम्य अतिसार ज्वर आदी उपद्रव युक्त
- 6) हुन्नाभी हस्तपादेषु शोफ

### योग / कल्प –

- 1) वातज गुल्म – न्यूषणादय घृत, हिंगुसौवर्चलादी घृत, हपुषादय घृत  
हिंगवादी चूर्ण या गुटिका, शत्वादी चूर्ण  
लशुन क्षीर  
तेलपंचक – एरंडतैल, प्रसन्ना, गोमूत्र, आरनाल, यवक्षार  
शिलाजतु – पंचमूली (लघुपंचमूल) यवक्षारसह
- 2) पित्तज गुल्म – रोहिण्यादी घृत, त्रायमाणाद्य घृत, आमलकादय घृत, बारा घृत
- 3) कफज गुल्म – दशमूली घृत, भल्लाकादय घृत,  
क्षीरधृष्टपल घृत – पिप्पली पिपलमूल, चब्य चित्रक नागर यवक्षार प्रत्येकी 1 पल  
मिश्रक स्नेह  
दन्ती हरीतकी – 25 हरीतकी, 25 पल दन्तीमूल, 25 पल चित्रकमूल गुडसह पाक

### रक्तज गुल्म चिकित्सा –

रौधिरस्य तु गुल्मस्य गर्भकालव्यतिक्रमे । स्नाधस्विन्न शरीरायै ददयात् स्नेहविरेचनम् ॥

गुल्मशिथिलीकरणार्थ – पलाश क्षार प्रयोग ततपश्चात – योनीविशोधन

योनीविशोधनार्थ – रक्तपित्तहर क्षार मधुसर्पिसह लेहन, लशुन तीक्ष्ण मदिरा, मत्स्य सेवन

- 1) अदृश्यमाने रूधिरे – दद्यात् गुल्मप्रभेदनम् ।
- 2) प्रवर्तमाने रूधिरे – दल्यात् मांसरसौदनम्, घृततैलेन चाभ्यंगं पानार्थ तरुणीं सुराम्
- 3) रूधिरे अतिप्रवृत्ते – रक्तपित्तहरी क्रियाम् ।
- 4) अतिप्रवृत्ते रूधिरे – सतिकेन अनुवासनम् ।

### प्रमेह चिकित्सा

#### प्रमेह हेतु –

आस्यासुखं स्वप्नसुखं दधिनी ग्राम्योदकानुपरसा । नवान्नपानं गुडवैकृतं च प्रमेहहेतुः कफकृत च सर्वम् ॥

#### कफज प्रमेह संप्राप्ती –

मेदश्च मांसं च शारीरजं क्लेदं कफो बस्तीगतं प्रदूष्य ।

#### पित्तज प्रमेह संप्राप्ती –

समुदीर्ण उष्णौः तानेव पित्तं परिदूष्य चापि ।

**वातज प्रमेह संप्राप्ति –**

क्षीणेषु दोषेषु अवकृष्य धातुन् प्रमेहानिनलः करोति ।

कफ व पित्त ये दोष वात की अपेक्षा क्षीण होते हैं व वायु वर्धन होता है वह वसा मज्जा ओज को बस्ती में आकृज्य कर प्रमेह की उत्पत्ति करता है ।

**प्रमेह साध्यासाध्यत्व –**

- 1) कफज प्रमेह – साध्य – समक्रियत्वात
- 2) पित्तज प्रमेह – याप्य – विषमक्रियत्वात
- 3) वातज प्रमेह – असाध्य – महात्ययत्वात

**प्रमेह दोष – दूष्य**

दोष – त्रिदोष

दूष्य – रस रक्त मांस मेद मज्जा शुक्र 6 } 10  
वसा ओज अम्बु लसिका 4 }

प्रमेह प्रकार = कफज – 10 पित्तज – 6

वातज – 4

- 1) मज्जामेह
- 2) वसामेह
- 3) लसिका मेह – हस्तीमेह
- 4) ओजोमेह – मधुमेह

**वातज प्रमेह में असाध्य लक्षण – :**

मूत्र का वर्ण – इयाव अरुण हो शूल हो व मूत्र में मज्जा ओज लसिका वसा का मिश्रण हो

**पूर्वरूप –**

- |                              |                              |                                |
|------------------------------|------------------------------|--------------------------------|
| 1) स्वेदो                    | 2) अंगर्ध                    | 3) शिथिलांगता                  |
| 4) शाय्यासनस्वज्जसुखे गतिश्व | 5) हुन्नेत्रजिक्षाश्रवणोपदेह | 6) घनांगता                     |
| 7) केशनखातिवृद्धी            | 8) शीतप्रियत्व               | 9) गलतालुशोष                   |
| 10) माधुर्यमास्ये            | 11) करणाददाह                 | 12) मूत्रे अभिधावन्ति पिपिलाका |

**चिकित्सा –**

- 1) स्थूल व बलवान रूग्ण – संसोधन
- 2) कृश व दुर्बल – संबृहण

**प्रमेह में संतर्पण –**

उर्ध्व तथा अधश्च मले अपनीते मेहेषु संतर्पणं एव कार्यम् ।

उर्ध्व व अध मल शोधन पश्चात – संतर्पण

संतर्पण न देने से – गुल्म क्षय मेहनबस्तीशूल मूत्रग्रह

**संशमन चिकित्सा – शोधन अनर्ह रूग्ण में मन्थ कषाय चूर्ण द्वारा**

आहार – मुदगादी यूष, तिक शाक, पुराण शाली ओदन, षष्ठीक, तृणधान्य,

दंती इंगुटी वा अतसी सर्षप तैलयुक्त भोजन

यवप्रधानस्तु भवेत् प्रमेही

संतर्पण योग – यव त्रिफला क्वाथ में रात्रभर संस्थीत कर मध व सिधुसह सेवन

वातज प्रमेह मे स्नेहकल्पना –

- 1) कफानुबंध होनेपर – कफधन कषाय सिद्ध स्नेह
- 2) पित्तानुबंध होनेपर – पित्तधन कषाय सिद्ध स्नेह

प्रमेह मे उदकपान –

- 1) सारोदक (विजयसार सिद्ध जल)
- 2) कुशोदक
- 3) मधुदक
- 4) त्रिफला रस
- 5) सीधु
- 6) माध्वीक मदय

आहार – भृष्ट यव, शुष्क सातु, मुदग आमलक प्रयोग

रक्तपित्त व प्रमेह निदान निश्चिती –

हारिद्रवर्ण रूधिरं च मूत्रं विना प्रमेहस्य पूर्वरूपैः ।  
यो मूत्रयेत्तं न वदेत् प्रमेहं रक्तस्य पित्तस्य हि स प्रकोपः ॥

हारिद्रवर्ण व सरूधिर मूत्रप्रवृत्ती – प्रमेह या रक्तपित्त निदान

- 1) प्रमेह के पूर्वरूप विद्यमान हो – प्रमेह
- 2) प्रमेह पूर्वरूप विद्यमान न हो – रक्तपित्त

प्रमेह मे मधुर सपिच्छ मधूपमं मूत्रप्रवृत्ती

द्विविध विचार

क्षीणेषु दोषेषु अनिलात्मकः:

(कफादी क्षीण होनेसे होनेवाला वातज प्रमेह) (सन्तर्पण आहार विहार का इतिहास – कफज प्रमेह)

प्रमेह साध्यासाध्यता –

- 1) पूर्वरूपसह उत्पन्न कफपित्तज प्रमेह – न साध्य
- 2) क्रम से उत्पन्न वातज प्रमेह – न साध्य
- 3) पित्तज प्रमेह – याप्य परंतु मेद अधिक दुष्ट न हो तो साध्य

बीजदोषज प्रमेह –

जातः प्रमेही मधुमेहिनो वा न साध्य उक्तः स हि बीजदोषात् ।  
य चापि केचित् कुलजा विकारा भवन्ति तांश्च प्रवदन्ति असाध्यान् ॥  
जात प्रमेही वा मधुमेही – न साध्य = बीजदोष के कारण  
अन्य भी कुलज विकार बीजदोष के कारण – असाध्य

प्रमेह पिङ्का चिकित्सा – शल्यविद का अधिकार = व्यथ शोधन रोपण

योग – 1) त्रिकण्टकादय स्नेह (तैल धृत) – वातज प्रमेह

2) फलत्रिकादी क्वाथ – फलत्रिक (हरीतकी विभितकी आमलकी), दारूनिशा, विशाला, मुस्ता  
इनके क्वाथ मे हरिद्रा कल्क व मधु सह सेवन = सर्वप्रमेहहर

3) लोधासव / मध्वासव – मात्रा 2 पल

4) दन्त्यासव, भल्लातकासव

### कुष्ठ चिकित्सा

कुष्ठ नाम – स्पर्शधननानाम् (स्पर्शनेंद्रियनाशन)

हेतु –

- 1) शीत उष्ण व लंघन आहार = क्रमं मुक्त्वा निषेवण
- 2) विप्रान् गुरुं घर्षयतां पापं कर्म च कुर्वताम्

संप्राप्ति –

वादायस्त्रयो दुष्टात् त्वक रक्त मासं अम्बु च । दूषयन्ति स कुष्ठानां सप्तको द्रव्यासंग्रहः ॥

कुष्ठ सप्तद्रव्यसंग्रह – वात पित्त कफ = 3

त्वक रक्त मास अम्बु = 4

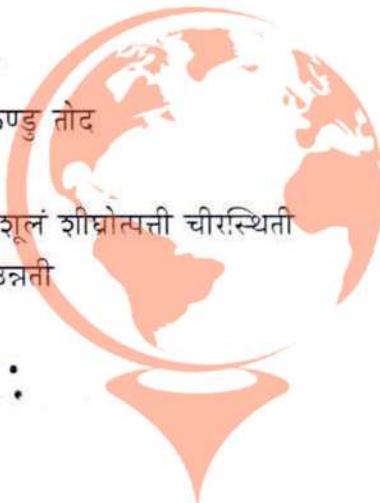
कुष्ठ त्रिदोषज्ञत्व – न च एकदोषजं किञ्चित् कुष्ठं समुपलभ्यते ।

पूर्वरूप –

- 1) स्पर्श अज्ञत्व
- 2) अनिस्वेदो न वा
- 3) कोठ लोमहर्ष कण्डु तोद
- 4) श्रम क्लम
- 5) व्रणानां अधिकं शूलं शीघ्रोत्पत्ती चीरस्थिती
- 6) दाह सुप्तांगता उन्नती

महाकुष्ठ – 7

- 1) कापाल कुष्ठ



# TIERRA

2) औदुम्बर लुष्ठ –

3) मण्डल कुष्ठ

4) ऋषजिव्ह कुष्ठ

5) पुण्डरीक कुष्ठ



6) सिध्म कुष्ठ

**TIERRA**

7) काकणक कुष्ठ

क्षुद्र कुष्ठ - 11

1) एककुष्ठ

2) चर्माख्य -



3) किटिभ -

किणखरस्पर्श  
श्याव परूष

4) विपादिका -

पाणिपादस्फुटनं  
तीव्रवेदना

5) अलसक -

कण्डुमर्दिदः सगगैश्च गण्डं अलसकं चितम्

# TIERRA

6) ददु -

सकण्डु रागपिडकं ददु मण्डलं उद्रतम् ।

7) चर्मदल -

रक्तं सकण्डु सस्फोटं सरूगदलति चापि यत् ।  
तच्च चर्मदलं आख्यातं संस्पर्शासहं उच्यते ॥

सकण्डु व रक्त

↓  
सस्फोट

सरूगदलति (त्वक दलन) = चर्म + दल = स्पर्शासहत्व

8) पामा -

पामा: श्वेतं अरूण श्यावाः कण्डूला पिडका भृशम् ।

9) विस्फोट – स्फोटा: श्वेतारूणभासा विस्फोटा: स्युः तनुत्वचः ।

10) शतारू –

रक्तं श्यावं सदाहार्ति शतारूः स्याद् बहुव्रणम् ।



11) विचर्चिका –

सकण्डु पिडका श्यावा बहुस्त्रावा विचर्चिका

वात + कफ	पित्त + कफ	कफ
एककुष्ठ	पामा	विचर्चिका
चर्मकुष्ठ	शतारू	
किटिभ	विस्फोट	
विपादेका	दद्र	
अलसक	चर्मदल	

सर्व कुष्ठ त्रिदोषज

कुष्ठ व दोषसंबंध –

कुष्ठ विशेषः दोषा दोषविशेषः पुनश्च कुष्ठानि । ज्ञायन्ते तैर्हेतुर्हेतुस्तांश्च प्रकाशयति !!

कुष्ठ विशेषानुसार (लक्षणानुसार) = दोष ज्ञान होता है

दोष विशेषानुसार (दोष लक्षणानुसार) = कुष्ठ ज्ञान होता है

तत तत कुष्ठ वा दोषानुसार – हेतु का प्रकाशन होता है

1) वाताधिक कुष्ठ – रौक्ष्य शोष तोद शूल संकोच आयाम पारूष्य खरभाव श्याव अरूणत्व

2) पित्ताधिक कुष्ठ – दाह राग परिस्त्राव पाक विस्त्रगंध क्लेद अंगपतन

3) कफाधिक कुष्ठ – श्वैत्य शैत्य कण्डु स्थर्य उत्सेध गौरव स्नेह जन्तुभिः अभिभक्षण क्लेद

चिकित्सा –

1) वातोत्तरेषु – सर्पि

2) इलेघोत्तरेषु – वमनं

3) पित्तोत्तरेषु – मोक्षो रक्तस्य विरेचनं च अग्रे ।

अल्प कुष्ठ – प्रच्छान

महती कुष्ठे – सिराव्यधन

रक्तमोक्षण पश्चात स्नेहपान –

स्नेहस्य पानं इष्टं शुध्दे कोष्ठे प्रवाहिके रक्ते ।

आस्थापन बस्ती –

दार्वा बृहती सेव्य (उशीर) पटोल पिचुमर्द

**कुष्ठ मे अनुवासन योग्य –**

- 1) वातोल्बण
- 2) विरिक्त – विरेच किया हुआ
- 3) निरूढ
- 4) अनुवासन अर्ह

इनमे फल मधुक निम्ब कूटज यूक्त अनुवासन

धूमपान – उत्तमांगस्थ कृमी किलास कुष्ठ शान्त्यर्थ = वैरेचनिक धूम

रक्तमोक्षण – स्थिर कठिन मंडलयुक्त कुष्ठ मे कूर्च शस्त्र द्वारा विघटटन पश्चात रक्तमोक्षण

**क्षार प्रयोग योग्य कुष्ठ –**

- 1) येषु न शस्त्रं क्रमते स्पर्शनेंद्रिय नाशनानि स्युः ।  
तेषु निपात्यः क्षारो रक्तं दोषं च विस्त्राव्य ॥
- शस्त्रकर्म अनर्ह कुष्ठ व स्पर्शनेंद्रिय नाशन करनेवाले कुष्ठ मे

**कुष्ठ मे अगद प्रयोग –**

पाषाण कठिन परूष सुप्त स्थिर कुष्ठ मे

**लेलितक प्रयोग –**

गंधक द्वा उल्लेख लेलितक नाम से जाती (आमलकी) व मधुमह

**सिध्दार्थक स्नान –**

मुस्ता मदन त्रिफला करंज आगवध कलिंगक यव दार्वी सप्तपर्ण इनसे सिध्द जल से स्नान  
सिध्दार्थक (सर्षप) घटक द्रव्य नहीं

**घृत प्रयोग –**

खदिर घृत, दार्वी घृत, निम्ब घृत, पटोल घृत,  
तिक्त षटपल घृत, महातिक्तक घृत, महाखदिर घृत

**योग –**

- 1) पटोलादी क्वाथ
- 2) कनकबिन्दुरिष्ट – खदिर कषाय 1 द्रोण, त्रिफला व्योष, विडंग, रजनी मुस्ता इ.  
कनकवर्ण समान त्वक कांती होती है

**लेप –** त्रप्वादी लेप, चित्रकादी लेप, मांस्यादी लेप, एडगजादी लेप

**तैल योग –**

- |                  |                       |
|------------------|-----------------------|
| 1) कुष्ठादय तैल  | 2) श्वेत करवीरादय तैल |
| 3) कनकक्षीरी तैल | 4) विपादोकाहर घृत तैल |

**कुष्ठ मे खदिर व विडंग महत्व –**

पान आहार प्रसेचन धूपन प्रदेहे च ।  
कृमीनाशनात् विडंग विशिष्टते कुष्ठहा खदिर ॥

**किलास –**

पर्याय – दारूण चारूण शित्र

धातुनुसार वर्ण –

- 1) रक्त – रक्तवर्णी
- 2) मांसगत – ताम्रवर्णी
- 3) मेदोगत – श्वेतवर्णी

उत्तरोत्तर गुरु(चिकित्सार्थ कठिन)

साध्य श्वित्र	असाध्य श्वित्र
मध्य अवकाशे च उच्छूनं (मध्य स्थाने उभारयुक्त) अरक्त लोम न अति चिरोत्थितम् तनु , पाण्डु	यत परस्परतो अभिन्न (परस्पर संसक्त) रक्तलोमवत वर्षगणोत्पन्न बहु
वाग्भटोक अशुक्ल रोम, अबहुल, असंशिष्ट, अनग्निदग्धज नवम	---- गुह्य पाणितल ओष्ठे; जातं अपि अचिरन्तनं

श्वित्र हेतु –

- 1) अतथ्य (असत्य वचन), कृतघ्न भाव, देवता निंदा, गुरुर्घर्षण, पापक्रिया, पूर्वकृत कर्म

श्वित्र चिकित्सा –

स्त्रांसन – स्त्रांसनार्थ मलपूरस (ककोदुम्बर) --- तत्पश्चात आतप सेवन  
आतपसेवन से त्वक स्थाने विस्फोट उत्पत्ती – विस्फोट का कटकद्वारे भेदन – स्त्राव  
स्त्राव उपेक्षा

15 दिनपर्यंत प्रातकाले मलपूरस असन प्रियंगु क्वाथ पान अथवा पलाश क्षार पाणितसह सेवन  
मनःशिलादी धूम

इतर उपाय – शोणितमोक्षण, विरुक्षण, सत्तु पान,

खदिरोदक श्रेष्ठ

#### 8) राजयक्षमा चिकित्सा

पर्याय – ऋोध, यक्षमा, ज्वर, दुःख

हेतु – चतुर्विध शोष आयतन

- |                 |               |
|-----------------|---------------|
| 1) अयथा बल आरंभ | 2) वेग संधारण |
| 3) क्षय         | 4) विषमाशन    |

पूर्वरूप –

- 1) प्रतिशयाय, दौर्बल्य
- 2) अदोषेषु भावेषु दोषदर्शन
- 3) काये बीभत्स दर्शन
- 4) घृणीत्वम (घृणा करना)
- 5) अश्नतश्चिपि बलमांसक्षय (आहार सेवन करनेपर भी बलमांसक्षय)
- 6) स्त्री मदय मांसप्रियता
- 7) प्रियता च अवगुंठने (शरीर ढकने की इच्छा)
- 8) माक्षिकाघृणकेशानां तृणानाम पतनानि च प्रायो अन्नपाने
- 9) केशानां नखानां च अभिवर्धनम

- 10) स्वप्ने पतनिभिः पतंगैश्च श्वापदैश्च अभिघर्षणम् (स्वप्न में पतंग श्वापद पक्षी आदी द्वारा पराजय)
- 11) स्वप्ने केश अस्थी राशीनां भस्मनश्च अधिरोहण
- 12) स्वप्न में जलाशय शैल वन ज्योतिष यह शुष्क देखना
- 13) स्वप्न में प्रकाशमान वस्तु क्षीयमाण /पतन होते देखना

**संप्राप्ति –**

स्त्रोतसां सन्निरोधाच्च रक्तादिनां च संक्षयात् ।

धातुष्मणं च अपचयाद् राजयक्षमा प्रवर्तते ॥

**राजयक्षमा मे विडरक्षण –**

अग्निद्वारे कोष्ठ संश्रित अन्न के पचन पक्षात्

मलीभवति तत् प्रायः

(प्रायः मलभाग उत्पत्ती)

- सर्वधातुक्षयार्तस्य बलं तस्य हि विडबलम् ।

- तस्माद् पुरीषं संरक्ष्य विशेषाद् राजयक्षिमणम् ।

कल्पते किंचित् ओजसे

( अल्प ओज / सारभाग उत्पत्ती )



त्रिरूप राजयक्षमा	षडरूप राजयक्षमा	एकादश राजयक्षमा
अंसपार्श्वाभिताप	कास	कास
मन्त्रापः करपादयो		अंसताप
	स्वरगद	वैस्वर्य
ज्वरः सर्वांगश्चेति	ज्वर	ज्वर
	पार्श्वशूल	पार्श्वशूल
		शिरःशूल
		रक्तछर्दन
		कफछर्दन
	वर्चोगद	वर्चोगद
		श्वास
	अरुची	अरुची

प्रतिशयाय संप्राप्ति स्थान – घ्राणमूल (सुश्रुत – मूर्धा)

यक्षमा मे ‘पार्श्वशूल’ अनियत संकोच व आयामयुक्त होता है

**पीनस चिकित्सा –**

पीनसे स्वेदमध्यंगं धूममालेपनानि च ।

परिषेक अवगाहागाश्च यावकं वाटयमेव च ॥

**शिरपार्श्वशूल व अंसशूल चिकित्सा –**

1) नस्य , धूमपान

2) औत्तरभक्तिक स्नेह

3) तैल अभ्यंग योग, बस्तीरोग,

4) सिरावेध

**दाहशमनार्थ –** चंदनादी तैल अभ्यंग, शतधौत घृत अभ्यंग

**शोधन –**

दोषाधिकानां वमनं शस्यते सविरेचनम् । सेनहस्वेदोपपन्नं च सस्नेह यन्त्र कर्शनम् ॥  
 शोषी मुंचति गात्राणि पुरीषसंस्त्रणादपि । अबलापेक्षिणी मात्रां किं पुनर्यो विरिच्यते ॥  
 दोषाधिक्य होनेपर – वमन वा विरेचन  
 कर्शन न होने पाय इस प्रकार मृदू शोधन  
 शोषी व्यक्ति मे पुरीष स्त्रंसन से प्राण मुंचन हो सकता है  
 इसलिए बलानुसार विरेचन देना चाहिए ।

**राजयक्षमा मे मांसप्रयोग –**

शुष्ठ्यता क्षीणमांसानां कलितानि विधानवित् । ददयात् मांसाद् मांसानि बृहणानि विशेषतः ॥

**जुगुप्सा चिकित्सा –**

गृध्र उलुक चाष मांस – बहिं के नाम से, काक मांस तितिर मांस के नाम से देना चाहिए ।  
 उत्तम मांस – बहिं तितिर दक्ष हंस शूकर उष्ट्र खर गो माहिष  
 वातप्रधान रूगण मे – प्रसह भूशय आनूप वारिज मांस  
 पित्तप्रधान रूगण मे – प्रतुद विष्क्रिर धन्वज मांस

**प्रसेक चिकित्सा – बलवान व कफप्रधान रूगण मे वमन****मदय प्रयोग –**

मांसमेवाशनतः शोषो माधिकं पिबते अपि च । नियतान् अल्पचित्स्य चिरं काये न तिष्ठति ॥  
 मांस सेवनासह ‘माधिक मदय’ सेवन  
 इतर मदय – प्रसन्ना, दारूणी सिधु अरिष्ट आरव मधुमदय

**मदय कार्यकारित्व –**

उष्ण तीक्ष्ण विशद सूक्ष्म गुण से – स्त्रोतोमुख विवरण = सप्तधातु शीघ्र पोषण

**वारूणी मंड प्रयोग –**

वारूणी मंड नित्यस्य बहिर्माजनसेविनः । अविधारितवेगस्य यक्षमा न लभते अन्तरम् ॥

1) वारूणी मंड नित्य सेवन	] यक्षमा दीर्घकाल नहीं रहता है ।
2) वारूणी मंड से बहिर्माजन सेवन	
3) वेग धारन न करना	

**राजयक्षमा मे क्षतक्षीण व्याधी का पथ्य –**

यच्च उपदेक्ष्यते पथ्यं क्षतक्षीणं चिकित्सिते । यक्षिमणं तत् प्रयोक्तव्यं बलमांसाभिवृद्धये ॥

क्षतक्षीण व्याधी पथ्य = राजयक्षमा पथ्य

**योग –****1) सितोपलादी चूर्ण –**

सिता – 16	वंशलोचन – 8	पिप्पली – 4
एला – 2	त्वच – 1	

गुणधर्म – सुप्तजिह्वा अरोचक मन्दाग्नि पार्श्वासशूल

**2) दुरालभादी घृत****3) जीवन्त्यादी घृत****4) यवानीषाडव चूर्ण – मुखवैरस्य नाशनार्थ , जिह्वाकंठविशोधन, हृदय, दीगनं परम्**

5) तालीसादी चूर्ण –

गुटिका हि अग्निसंयोगात् चूर्णात् लघुतरा स्मृतः ।

9) उन्माद चिकित्सा

हेतु –

देवता गुरु द्विज प्रधर्षण, भय, हर्षपूर्वक मनोभिघात, विषम चेष्टा

संप्राप्ति –

तैः अल्प सत्वस्य मलाः प्रदुष्टा बुद्धेर्निवासं हुदयं प्रदूष्य ।

स्त्रोतांस्य अधिष्ठाय मनोवहानि प्रमोहन्त्याशु नरस्य चेतः ॥

अल्पसत्य मनुष्य मे मल प्रदुष्टी

बुद्धि निवास स्थान हुदय प्रदुष्टी



रूप –

धीविभ्रम	सत्वपरिप्लव	मनोभ्रम
पर्याकुला दृष्टीधीरता (दृष्टी चंचलता)		
अबृद्ध वाक्यत्व		
हुदयं च शून्यं		

प्रकार – पंच उन्माद (वा पि क सा आगंतुज)

आगंतुज उन्माद हेतु –

- 1) देवस्थि गन्धर्व पिश्चाच यक्ष पितृगण अभिर्षण
- 2) नियम व्रतादी मिथ्या स्त्री से पालन
- 3) पूर्वदेहकृत कर्म

भूतोन्माद –

- 1) अमर्त्य वाक विक्रम वीर्य चेष्टा (अमर्त्य – मनुष्य समान न होना)
- 2) ज्ञान विज्ञान बलादी अमर्त्य समान
- 3) अनियत उन्माद काल

भूतादी का मनुष्य मे प्रवेश – गुणप्रभाव से होता है

देवादी ग्रह आवेश हेतु – 3

- 1) रति
- 2) अर्चना
- 3) हिंसा

चिकित्सा –

- 1) वातज उन्माद – स्नेहन, स्स्नेह मृदू रेचन  
आचार विभ्रंश होनेपर – तीक्ष्ण नावन, तीक्ष्ण अंजन, ताडन,  
मनोबुद्धीसंवेजन

त्रासन, हर्षण, सान्त्वन, भय, विस्मय  
संज्ञाप्रबोधक द्रव्य प्रयोग

योग –

- 1) हिंगवादय घृत
- 2) कल्याणक घृत – कल्याणकं इदं सर्पि: श्रेष्ठं पुंसवनेषु च ।
- 3) महाकल्याणक घृत – बंहणीय विशेषण सन्निपातहरं परम् ।
- 4) महापैशाचिक घृत – बुधिस्मृतीकरं चैव बालानां अंगवर्धनम् ।
- 5) लशुनादय घृत
- 6) द्वितीय लशुनादय घृत

उपरोक्त घृत उत्तम मात्रा में पान

पुराण घृत –

- 1) त्रिदोषघ्न
- 2) ग्रहनाशन – पवित्र होनेसे
- 3) रस – कटु तिक्क



पुराण घृत गुणधर्म –

- 1) उग्रगंथं पुराणं स्याद् दशवर्षशितं घृतम् ।
- 2) वीर्य – शीत
- 3) कार्य – सर्व ग्रहापह

प्रपुराण घृत – :

- 1) शतवर्षस्थित
- 2) लाक्षारस निभ
- 3) न असाध्यं नाम तस्य अस्ति रोगं
- 4) दृष्टं स्पृष्टं आध्रातं तर्क्षिं सर्वग्रहापम्
- 5) विरेचनेषु अग्र्यं

सिध्दार्थकादी अगद – सिध्दार्थक वचा हिंगु करंज देवदारु,

भावना – बस्तमूत्र में पेषण

प्रयोग – पान अंजन नस्य आलेपन स्नान उद्धर्तन

सिध्दार्थकादी घृत – उपरोक्त द्रव्यो से सिध्द घृत

पित्तज उन्माद चिकित्सा –

- 1) कुष्ठ अधिकारोक्त तिक्कक घृतः
- 2) वातरक्त अधिकारोक्त 'जीवनीय घृतः'
- 3) गुल्म अधिकारोक्त 'मिश्रक स्नेहः'

सिरावेद – शंख केशान्त स्थाने

उन्माद में त्रासन / ताडन चिकित्सा आधार –

देहदुःखभ्यो हि प्राणभयं स्मृतम् । तेन याति शमं तस्य सर्वतो विप्लुतं मनः ॥

देहदुःख भय से प्राणभय ज्यादा होने से ताडन से उन्माद शमन होता है

परस्पर प्रतिद्वंद्व चिकित्सा –

कामशोकभयक्रोध हर्ष इर्षा लोभसम्भवान् ।

परस्पर प्रतिद्वंद्व एभि एव शमं नयेत् ॥

क्रोध = काम

शोक = हृष

इष्टा = लोभ

इन प्रतिद्वंद्व चिकित्सा का उपयोग

देवर्षि पितृ गंधर्व द्वारे उन्मत्त व्यक्ति की चिकित्सा -

- 1) अंजनादी तीक्ष्ण क्रूर कर्म निषेध
- 2) सर्पिणादी स्नेहन व मृदू भेषज देय
- 3) शान्तीकर्म जप स्वस्त्ययन होम मंत्रकर्म  
उन्माद मे - रुद्रपूजा

10) अपस्मार चिकित्सा -

स्मृती अपगम

तमः प्रवेशां बीभत्सचेष्टं धीसत्वसंप्लवात् ॥

हेतु - विभ्रान्तबहुदोषाणां अहित अशुची भोजनात् ।  
रजस्तमोभ्यां विहते सत्वे दोषावृते हुदि ॥

संप्राप्ती -

धर्मनीभिः श्रिता दोषा हुदयं पीडयन्ति हि ।  
सम्पीड्नामानो व्यथते मूढो भ्रान्तेन चेतसा ॥

रूप -

- 1) पश्यति असन्ति रूपाणि पतनि प्रस्फुरत्यपि ।
- 2) जिह्वा अक्षिभू (विक्षेपण)
- 3) स्त्रवल्लालो
- 4) हस्तौ पादौ च विक्षिपन
- 5) दोषवेगे च विगते सुप्तवत् प्रतिबुध्यते ॥

प्रकार - चत्वारो अपस्मारः वा पि क सा

वेगकाल - पक्षाद्वा द्वादशाहाद्वा मांसाद् कुपिता मला: ( 12 – 15 – 30 )

चिकित्सा सूत्र -

तैः आवृतानां हुत्सोतोमनसां संप्रबोधनम् ।

तीक्ष्णै आदौ भिषक कुर्यात् कर्मभिः वमनादिभिः ॥

दोषानुसार चिकित्सा -

वातिके बस्तीभूयिष्ठेः पैत्तं प्रायो विरेचनम् ।

इलैषमिकं वमन प्रायं अपस्मारं उपाचरेत् ॥

अभ्यंग -

सर्षप तैल, पलंकषादी तैल, कटभ्यादी तैल

उत्सादनार्थ - गोशकृत

स्नानार्थ - गोमूत्र

नस्य - कपिलवर्ण गो के मूत्र का नस्य

शृगाल विडाल सिंहादी मूत्र नस्य

योग –

1) पचगव्य घृत

गोशकृत, गोमूत्र गोदधि, गोदुग्ध गोघत – समभाग लेकर घृत सिध्दी

2) महापंचगव्य घृत –

अलक्ष्मी ग्रह रोगधन, चातुर्तिक विनाशन

3) ब्राह्मी घृत

4) वचा घृत

धूपन – पिप्पली लवण हिंगु शीगृ

प्रथमन नम्य – कायस्थादी वर्ती, मुस्तादी वर्ती

अत्त्वाभिनिवेश –

हेतु –

1) मलीन आहार शील व्यक्ती

2) वेगनिग्रह

3) शीत उष्ण स्निग्ध रूक्षादी अतिसेवन

संप्राप्ति –

हुदयं समुपाश्रित्य मनोबुधिवहा सिग। दोषा संटूष्य तिष्ठन्ति रजोमोह आवृतात्मनः।

रजस्तमोभ्यां वृद्धाभ्यां बुद्धौ मनमि च आवृते। हुदयं व्याकुले दोषेश्र मूढो अल्पचेतसः॥

वैशिष्ट्य –

विषमां कुरुते बुधिं नित्यानित्ये हिताहिते।

अत्त्वाभिनिवेशं तामाहुराप्ता महागदम्॥

चिकित्सा सूत्र –

स्नेहस्वेदोपपन्नं तं संशोध्य वमनादिभिः।

कृतसंसर्जनं मेध्य अन्नं उपाचरेत्॥

स्नेहन स्वेदन वमनादी संशोधन

मेध्य अन्नपान

आश्वासन चिकित्सा

ब्राह्मी प्रयोग, रसायन प्रयोग

उन्मादी व्यक्ती का रक्षण –

जल अग्नि द्रुम शैल विषम स्थान इनसे उन्मादी व्यक्ती का रक्षण करना चाहिए।

11) उरःक्षत चिकित्सा –

उर स्थाने रूजा भेद समान पिडा

दुष्ट श्याव दुर्गंध पीत विग्रथीत बहु इलेष्मा का रक्तज काससह वेगसमये प्रवर्तन

पूर्वरूप –

– अव्यक्तं लक्षणं तस्य पूर्वरूपं इति स्मृतम्।

– उरोरुक, शोणित छर्दि, कास, क्षीणी सरक्त मूत्रत्व, पार्श्वपृष्ठकटीग्रह

साध्यासाध्यत्व –

1) अल्प लिंग व बलवान दीप्ताग्नी व्यक्ती का उरःक्षत – साध्य

- 2) पारंसंवत्सर – याप्य
- 3) सर्वलिंग युक्त – असाध्य (वर्ज्य)

चिकित्सा –

लाक्षा चूर्ण क्षीर व मधुसह पान  
 लाक्षादी क्षीर  
 रक्तप्रवृत्ति होनेपर चटक अंड रस सिद्ध यूष  
 छग रक्त यूषसह

योग –

- 1) एलादी गुटिका – मात्रा 1 अक्ष प्रतिदिन 1 अक्ष मात्रा वर्धन
  - 2) अमृतप्राश घृत
  - 3) श्वदंष्ट्रादी घृत
  - 4) प्रथम सर्पि गुड – धात्री स्वरस विदारी स्वरस इक्षु रस जीवनीय गण गोदुग्ध अजादुग्ध – घृत  
 वाताधिक्य – पान  
 पित्ताधिक्य – लेहन  
 (घृत कल्पना है; गुड नहीं, घटक में शर्करा है गुड नहीं)
  - 5) द्वितीय सर्पि गुड
  - 6) तृतीय सर्पि गुड
  - 7) चतुर्थ सर्पि गुड
  - 8) पंचम सर्पि मोटक
- नागबला कल्प – नागबला मूल प्रतिदिन 1 कर्ष वर्धमान मात्रा में सेवन = 1 मास पर्यंत सेवन  
 अनुपान – क्षीर

संतर्पण चिकित्सा –

यद यद संतर्पणं शीतम् अविदाही हितं लघु । अन्नपानं निषेव्यम् तत् क्षतक्षीणं सुखार्थिभिः ॥

इतर व्याधी पथ्य निर्देश –

यच्च उक्तं यक्षमिणां पथ्यं कासिनां रक्तपित्तिनाम् ।

तच्च कुर्तात् अवेक्ष्याग्निं व्याधीं सात्यम् बलं तथा ॥

- |              |   |   |
|--------------|---|---|
| 1) यक्षमा    | } | इन व्याधी के पथ्य का उरक्षण में निर्देश |
| 2) कास       |   |   |
| 3) रक्तपित्त |   |   |

क्षतक्षीण की उपेक्षा से राजयक्षमा उत्पत्ती (यक्षमा का अनुबंध)

पार्श्वबस्तीरुजा में – लाक्षा + सुरा

भिन्नविट (अतिसार) में – लाक्षा + मुस्ता + पाठा + अतिविषा

12) शोथ चिकित्सा –

शोथ निज हेतु – शोधन व्यापद, गरोपविष सेवन अर्श, अचेष्टा, न च देहशुद्धी, मर्मोपघात  
 विषम प्रसुती, पंचकर्मोपसमये मिथ्योपचार

निज शोथ प्रकार – 3

- 1) सर्वांगज

- 2) एकांगज  
3) एक अवयवाश्रीत

संप्राप्ति –

बाह्या सिगः प्राप्य यदा कफ असृक पित्तानि संदूषयतीह वायुः ।  
तैर्बध्द मार्गः स तदा विसर्प उत्सेधलिंगं श्वयथु करोति ॥  
शोथ संप्राप्ती दोष दूष्य – निदोष + रक्त

पूर्वरूप –

- 1) उष्मा  
2) दवथु (चक्षु आदी इंद्रिय ताप)  
3) सिरणाम् आयाम

रूप-

- 1) गौरव  
2) अनवस्थितत्व  
3) उत्सेध  
4) उष्मा  
5) सिरा तनुत्व  
6) लोम हर्ष  
7) अंग विर्वर्णता



	वातज शोथ	पित्तज शोथ	कफज शोथ
स्वरूप	चल तनु	असित पीत रागवान	गुरु स्थिर
रूप	त्वक परूषता प्रसुप्ती हर्ष	भ्रम ज्वर तृष्णा स्वेद मद	अरुची प्रसेक वमी निद्रा
वैशिष्ट्य	प्रोन्नमति प्रपिडितो		नीपिडितो न च उन्नमती
बलवानता	दिवाबली		रात्रीबली
इतर	नक्तं प्रणश्यती	उव्यते स्पर्शित्वं भृशामाक	रात्रीबली, कृच्छ्रजन्मप्रशमन

चिकित्सा

- 1) आम दोष उत्पन्न शोथ – प्रथम लंघन पाचन  
2) दोषाधिक्य जन्य शोथ – शोधन  
3) शिरोगत शोथ – शिरोविरेचन  
4) शरीर अधोभागत शोथ – विरेचन  
5) शरीर उधर्भागज शोथ – वमन  
6) स्निग्ध कारणोत्पन्न शोथ – विरुक्षण  
7) रुक्ष कारणोत्पन्न शोथ – स्नेहन  
8) वातज शोथ मे बध्द विट अवस्था – निरूह  
कफज शोथ – गोमूत्र हरीतकी

गुड आर्द्रक योग –

- 1) आर्द्रक /नागर – कल्क

2) गुड - 1/2 पल

विधि - प्रथम दिन 1/2 पल, प्रतिदिन 1/2 पल वर्धन = 10 वे दिन 5 पल  
हासविधि से पुनः 10 से एक दिन तक  
एकुण प्रयोग - 1 मास  
शिलाजतु प्रयोग - त्रिफला रससह, - त्रिदोषज शोथनाशन

योग -

- 1) गण्डीरायारिष्ट
- 2) अष्टशत अरिष्ट
- 3) पुनर्नवायारिष्ट
- 4) फलत्रिकादी अरिष्ट
- 5) क्षारगुटिका
- 6) कंस हरीतकी (दशमूल हरीतकी )  
द्विपंचमूल (बृहत व लघु पंचमूल) - क्वाथ 1 कंस (1आढक)  
हरीतकी - 100 - इन का अवलेह निर्माण
- 7) चित्रक धृत
- 8) सर्व प्रकार के शोथ में विभिन्नकी मज्जा लेप - दाह अर्तिहर

शोध / उत्सेध होनेवाले अन्य विकार -

- 1) मसूरिका - पित्त + कफ
- 2) ब्राधन् - व्रगस्थानज वृद्धी
- 3) भगंदर - गुदस्य पार्श्व पिडका - पक्व होनेपर भगंदर में परिवर्तन  
चिकित्सा - विरेचन, एषण पाटन, मार्गशुद्धीपश्चात तैल द्वारे दाह, पक्व होनेपर क्षारसूत्र बंधन
- 4) श्लीपद - जंघासु पिण्डीप्रपदोपरिष्टात् स्याद् श्लीपदं मांस कह असूक दोषात् ।  
चिकित्सा - सिगाकफघ्न विधि, सर्षप लेप

14) उदर चिकित्सा -

हेतु - अर्श बाल शक्त रोधन  
आंत्रस्फुटन भेदन  
अतिसंचीत दोष  
पापं कर्म च कुर्वताम्  
उदराणी उपजायन्ते मन्दाग्निनां विशेषतः ।

पूर्वरूप -

क्षुन्नाश  
स्वादु अतिस्निग्ध गुरु अन्नं पच्यते चीरात्  
भुक्तं विदहयते सर्वम्  
जीर्णजीर्णं न वेत्ती  
सहते न अतिसौहित्यम्  
इषत् शोफश्च पादयोः  
शश्वद् बलक्षय (निरंतर बलक्षय)

अल्पेऽपि व्यायामे श्वासमृच्छति  
 वृद्धिः पुरीषनिचयो रूक्ष उदावर्त हेतुका  
 बस्तीसधौ रूजा, आध्मान  
 वर्धते पाटयते च आतन्यते च जठरम् अपि लघु अल्प भोजनात्  
 राजीजन्म वलीनाश

### संप्राप्ती –

रूध्वा स्वेदाम्बुवाहिनी दोषाः स्त्रोतांसि संचीतः । प्राण अग्नि अपानान् मन्दूष्य जनयन्ति उदरं नृणाम् ॥  
 डत्रोतोरोध – स्वेदवह व अम्बुवह  
 दूष्टी – प्राण, अग्नि, अपान

### रूप-

कुक्षे: आध्मान, आटोप

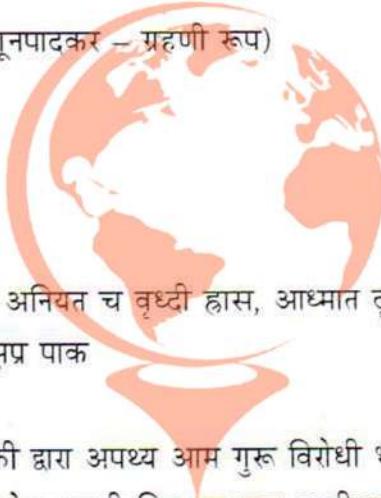
शोफः पादकरस्य च (शूनपादकर – ग्रहणी रूप)

मन्दोग्निः

श्लक्षणगंडत्व

काश्य

प्रकानुरूप संप्राप्ती व लक्षण



- 1) यातोदर – उदर विपात्ति, अनियत च वृद्धी हास, आध्मात दृतीवत शब्द भवती
- 2) पित्तोदर – मृदू स्पर्श, क्षिप्र पाक
- 3) सान्त्रिपातज उदर –

हेतु – दुर्बलाग्नि व्यक्ति द्वारा अपथ्य आम गुरु विरोधी भोजन

डत्रीद्वारा रजो रोम अस्थी विट मूत्र नख आदी युक्त आहार

विषेश मन्दवाताद्या (दूषीविष सेवन)

### 4) प्लीहोदर –

हेतु –

यानायान  
अशित (भोजन) पश्चात् अतिचेष्टा

अतिसंक्षोभ

अतिव्यवाय, भार अध्व, वमनादी द्वारा कर्शन

संप्राप्ती – उपरोक्त हेतुद्वारा संक्षोभ

प्लीहः च्युतः स्थानात् प्रवर्धते

शोणितं वा रसादीभ्य विवृद्धं तं विवर्धयेत् = प्लीहोदर

रूप – तस्य प्लीहा कठिनो अष्ठील एव आदौ वर्धमानः कच्छपसंस्थानवत् उपलभ्यते

### 5) यकृतोदर –

एवं एव यकृत अपि दक्षिण पार्श्वस्थं कुर्यात् ।

प्लीहोदर समान ही दक्षिण पार्श्व मे यकृतोदर होता है ।

## 6) बध्दोदर –

हेतु – अन्नसह पक्ष्म, बाल, सेवन  
उदावर्त अर्श आदी से आंत्र संमूच्छन  
संप्राप्ति – अपान मार्ग संरोध – अग्नि हनन – अनिल प्रकोप – वर्च पित्त कफ अवरोध – उदर रूप – नाभे: उपरी गोपुच्छवत् अभिनिर्वर्तत इति ।

## 7) छिद्रोदर –

हेतु – शर्करा तृण काष्ठ अस्थी कंटक आदी सेवन  
संप्राप्ति – उपरोत हेतु से आंत्रभेदन – पाक उत्पत्ति – छिद्राद्वारा आहार रस बाह्यत; स्त्रवण गुद आंत्र पूरण – छिद्रोदर उत्पत्ति  
रूप – अधो नाभ्यां प्रायो अभिवर्धमानं उदकोदरं भवती ।

## 8) जलोदर / दकोदर

हेतु – स्नेह पीतस्य मंदाग्ने: अत्यम्बुपानात् नष्टे अग्नौ ।

स्नेह पान पश्चात मंदानी पुरुष द्वारा अत्यम्बुपान

रूप – उदक पूर्ण दृती क्षोभ संस्पर्श भवती ।

अवस्था – 3

अजातोदकावस्था	पिच्छावस्था	जातोदकावस्था
अजात शोथ	मण्डलम् उदरम्	कुक्षः अतिमात्र वृद्धीं
अरूण सशब्द न अति भारिकम् उदरम्	गुरु स्तिमितं आकोटितम्	सिरा अन्तर्धान गमनम्
सदा गुडगुडायन	अशब्दं	उदकपूर्ण दृती क्षोभ संस्पर्श
सिराजालगवाक्षितम्	मृदू स्पर्शम् अपगत राजीम्	
नाभीं विष्ट्रभ्य पायौ तु वेगं कृत्वा	नाभी स्थाने प्रथम उत्पत्ती तत्	
प्रणश्यती	पश्चात इतर स्थाने	
न अति च मन्दे पावके		

## प्रकारानुरूप उत्तरोत्तर कष्टसाध्यता –

वातज – पित्तज – कफज – प्लीहोदर – सान्निपातोदर – दकोदर.

बध्दगुदोदर प्रायः 15 दिन मे मारक

छिद्रोदर

मृत्युकारक

सर्व उदर मे जातोदकावस्था आने पर प्रायः

## उदर असाध्य लक्षण –

- 1) शून्याक्ष
- 2) कटिलोपस्थ ( उपस्थ स्थाने कुटिलता)
- 3) उपक्लेन्न तनुत्वच
- 4) बलशोणित मांस अग्नी परीक्षण

## चिकित्सा –

1) वातोदर – स्नेहन, स्वेदन, स्नेहयुक्त विरेचन, उदर वेष्टन – वायुद्वारे आध्मापन न होने के लिए

## चिकित्सासूत्र –

दोषातिमात्रोपचयात् स्त्रोतोमार्गनिरोधनात् । सम्भवति तस्मात् नित्यमेव विरेचनम् ॥

आस्थापन अवस्था –

उदावर्त अवस्था मे अम्ल लवण स्निग्ध आस्थापन

अनुवासन अवस्था –

1) स्फुरण आक्षेपक

2) संधी अस्थी पार्श्व पृष्ठ त्रिक अर्ति

3) बध्द विडवात

अविरेच्य रूग्ण मे (दुर्बल स्थविर शिशु सुकुमार) – अल्प दोष व वाताधिक्य होनेपर

बस्ती अभ्यंग अनुवासन व क्षीर द्वारा उपचार = संशमन चिकित्सा

2) पित्तोदर चिकित्सा –

बलवान रूग्ण मे – विरेचन

दुर्बल रूग्ण मे – अनुवासन व ततपश्चात क्षीरयुक्त निरूह

3) कफज उदर –

स्नेहन स्वेदन पश्चात शोधन (विरेचन)

संसर्जन ऋम मे कटुक्षारयुक्त कफज अन्न प्रयोग

गोमूत्र अरिष्टपार्श्व चूर्ण अयस्कृतीमिस्तथा !

सक्षार तैलपानश्च शमयेत् तु कफोदरम् ॥

4) सान्निपातज उदर –

यथोक्त क्रिया (दोषानुसार)

उपद्रवयुक्त होनेपर प्रत्याख्येय क्रिया

दन्ती द्रवन्ती फलजं तैलं दृष्योदरे हितम् ।

5) प्लीहोदर –

स्नेहन स्वेदन विरेचन निरूह अनुवासन किंवा वाम बाहु सिरावेध

यक्ष्मा चिकित्सोक्त षटपल सर्पि प्रयोग किंवा पिप्पली प्रयोग या गुड अभ्या प्रयोग

योग – रोहिताकादी योग, रोहितक घृत

अग्निकर्म – वातकफ प्राधान्य होनेपर

6) यकृतोदर – प्लीहोदर समान चिकित्सा । दक्षिण बाहु सिरावेध

7) बध्दोदर –

1) स्वेदन

2) निरूह / अनुवासन – तीक्ष्ण औषध युक्त + तैल लवण युक्त + गोमूत्र युक्त

3) परिस्त्रान्स्त्रन अन्न प्रयोग

4) तीक्ष्ण विरेचन

5) उदावर्तहर व वातघ्न कर्म

8) छिद्रोदर –

छिद्रोदरं ऋते स्वेदात् श्लेष्मोदरवत् आचरेत् ।

स्वेदन चिकित्सा छोडकर कफज उदर समान चिकित्सा

जलोदर चिकित्सा –

1) जातं जातं जलं स्त्राव्यं एवं तद् यापयेत् भिषक ।

## चरक चिकित्सा स्थान

**ज्वर चिकित्सा -****असाध्य ज्वर लक्षण -**

- 1) प्रलाप भ्रम श्वास तीक्ष्ण वेर्गी ज्वर
- 2) क्षीण व्यक्ति का ज्वर
- 3) शोथयुक्त व्यक्ति का गम्भीर व दैर्घ्यात्रिक ज्वर
- 4) केशसीमन्तकृत ज्वर

**निष्प्रत्यनिक के कारण संतत ज्वर सुदुस्सह -****कालटूष्प्रकृतिभिर्दोषस्तुल्यो हि सन्ततम् । निष्प्रत्यनिकः कुरुते तस्माज्ज्ञेयः सुदुःसह ॥****ज्वर मे वमन व लंघन पश्चात् - यवागू प्रयोग****ज्वर मे उर्ध्वग रक्पित्त हो तो - तर्पण प्रयोग****वातज ज्वर मे - जीर्ण ज्वर के उपऋग करे ।****2) रक्पित्त-****रक्पित्त मे शोधन पश्चात् चिकित्सा -****उर्ध्वग - तर्पण****अधोग - पेया****3) गुल्म चिकित्सा-****कफज गुल्म मे अग्निकर्म से लाभ -****औष्ण्यात् तैख्याच्च शामयेत् अग्नि गुल्मे कफानिलौ । तयोः शामाच्च संघातो गुल्मस्य विनिवर्तते ॥****गुल्म मे वेदना शान्त्यर्थ - मातुलुंग रस भर्जित हिंगु, दाढ़िम बिड सैंधव - सुरामंड के अनुपान से दे****गुल्म मे शिलाजतु प्रयोग - पंचमूली कषाय के अनुपान से दे ।****7) कुष्ठ चिकित्सा- लेलितक (गंधक) प्रयोग - जाती (आमलकी ) व माक्षिकसह****माक्षिकधातु (सुवर्णमाक्षिक) गोमूत्रसह सेवन****कुष्ठ मे रस (पारद) वज्र शिलाजतुसह वा योगराज सह सेवन करे****8) राजयक्षमा-****कफप्रसेक होने पर वमन****9) उन्माद-****उन्माद विषमज्वर अपस्मार मे शंखकेशान्त सन्धि स्थाने सिरावेध****10) अपस्मार-****दुश्चिकित्यो ह्यपस्मारी कृताप्सदः । तस्माद् रसायनैरेन प्रायशः समुपाचरेत् ॥****उन्मादी व्यक्ति के लिए जल अग्नि द्रुम शैल विषम स्थान सदय प्राणहर होते हैं ।****11) उरक्षत****ऋव्याद मांसनिर्घूर्ह घृतभृष्ट कर सेवन****12) शोथ****शोथ मे गुरुभिन्न वर्च (अतिसार) होनेपर व्योषसोवर्चल माक्षिक सह तक्र पान आगंतुज (आघातज शोथ ) मे - विसर्प व वात व रक्तहर उपचार करे ।**

13) उदर-

दन्ती द्रवन्ती फलज तैल – दाष्ठोदर में हितकर  
उदर में पार्श्वशूल हुद्ग्रह हो – बिल्वक्षार / अग्निमन्त्र इयोनाक अपामार्ग क्षार प्रयोग

14) अर्श

शेषत्वात् आयुषस्तानि चतुष्पादसमन्विते दीप्तकायाग्ने – याप्य अर्श

अर्श का योग्य शमन न करने पर – बध्दगुदोदर उत्पत्ती

अर्श में शस्त्र क्षार अग्नि विभ्रम (इन उपक्रमों को अयोग्य रिति से करना) से

पुस्त्वोपधात्, गुदश्वयथु, वेगविनिग्रह, आध्मान, दारूण शूल, रक्तातिवर्तन, क्लेद, गुदभ्रंश, मरण

अर्श में तक्रप्रयोग से लाभ-

स्त्रोतःसु तक्रशुधेषु रसः सम्यगुपैति यः । तेन पुष्टिर्बलं वर्णः प्रहर्षश्वेषजायते ।

अर्श में अनुवासन-

उदावर्तपरीता ये ये चात्यर्थ विस्त्रिताः । विलोमवाताः शूलार्तास्तेषु इष्टं अनुवासनम् ॥

19) अतिसार-

पित्तातिसार चिकित्सा में पिच्छाबस्ती काल –

कृतानुवासनस्यास्य कृतसंसर्जनस्य च । वर्तते यद्यतीसारः पिच्छाबस्तिरतः परम् ।

पित्तातिसार में अनुवासन देने पर व संसर्जन क्रम के बाद भी अतिसार ब्ना रहे तो उसे पिच्छाबस्ती देना चाहिए ।

गुद में स्नेह प्रयोग-

प्रायशो दुर्बलगुदाश्चिरकालातिसारिणः । तस्मादभीक्षणशस्तेषा गुदे स्नेहं प्रयोजयेत् ॥

अधिक दिन तक अतिसार में गुदस दुर्बल हो जाता है इसलिए गुद में स्नेह प्रयोजित करना चाहिए ।

अतिसार में बस्ती-

पवनोऽतिप्रवृत्तो हि स्वे स्थाने लभतेऽधिकम् । बलं तस्य सपित्तस्य जयार्थं बस्तिरूत्तमः ॥

जब अतिसार में पुनः पुनः मलप्रवृत्ती में जाना पड़ता है तो वायु अपने स्थान मलाशय में प्रवल हो जाता है

इसलिए पित्तसहित वायु शमन के लिए अनुवासन बस्ती उत्तम चिकित्सा है ।

वातरक्त-

निर्हरेद्वा मलं तस्य सघृतैः क्षीरबस्तिभिः ।

मलविबंध में घृतमिश्रीत क्षीरबस्ती

बस्तीवंक्षणपार्श्वजठराति व उदावर्त में – निरुह व अनुवासन

## चरक सिद्धिस्थान – 2 पंचकर्मीय सिद्धि अध्याय

**वमन अयोग्य में युक्ती –**

- 1) क्षत – क्षतस्य भूयः क्षणनाद्रकातिप्रवृत्ती
  - 2) क्षीण अतिस्थूल कृश बाल वृद्ध दुर्बल – औषधबल असहत्वात् प्राणोपरोध
  - 3) श्रान्ति पिपासित क्षुधित – उपरोक्त परीणाम (औषधबल असहत्वात् प्राणोपरोध )
  - 4) कर्मभार अध्व हत उपवास मैथुन अध्ययन व्यायाम चिन्ताप्रसक्त क्षाम – रौक्ष्यात् वातरक्तच्छेदक्षतभयं
  - 5) गर्भिणी – गर्भव्यापद आमगर्भभ्रंशाच्च दारूणा गोगप्राप्ति
  - 6) सुकुमार – हुदयापकर्षणाद् उर्ध्व अधो वा रूधिरातिप्रवृत्ती
  - 7) संवृतकोष्ठ दुश्छर्दित – अतिमात्र प्रवाहणाद् दोषाः समुत्क्लिष्टा अन्तःकोष्ठे जनयन्ति विसर्प स्तंभ जाङ्घां वैचित्यं मरणं वा
  - 8) उर्ध्वग रक्तपित्त – उदानं उत्क्षिप्य प्राणान् हरेद् रक्तं चातिप्रवर्तयेत्
  - 9) प्रसक्त छर्दि (निरंतर छर्दि) – उपरोक्त परीणाम (उदानं उत्क्षिप्य प्राणान् हरेद् रक्तं चातिप्रवर्तयेत्)
  - 10) उर्ध्ववात आस्थापीत अनुवासीत – उर्ध्व वातातिप्रवृत्ती
  - 11) हुद्रोगी – हुदयोपरोध
  - 12) उदावर्त – घोरतर उदावर्त स्यात् शीघ्रतरहन्ता
  - 13) मूत्राघात प्लीह गुल्म उदर अष्टिला – तीव्रतर शूलप्रादुर्भाव
  - 14) तिमिरात – तिमिर अतिवृद्धी
  - 15) शिरः शंख कर्ण अक्षिशूल – शूलातिवृद्धी
- ब) विरेचन अयोग्य में युक्ती –**
- 1) सुभग (सुकुमार) – सुकुमारोक्त वमन दोष (हुदयापकर्षणाद् उर्ध्व अधो वा रूधिरातिप्रवृत्ती)
  - 2) क्षतगुद – क्षते गुदे प्राणोपरोधकर्गे रूजां जनयेत्
  - 3) मुक्तनाल – अतिप्रवृत्त्या हन्यात्
  - 4) अधोगरक्तपित्तिन – तद्वत् (अतिप्रवृत्त्या हन्यात्)
  - 5) विलंघित दुर्बलेंद्रिय अल्पाग्नि निरुद्धा – औषध वैगं न सहेरन्
  - 6) कामादीव्यग्रमनसो – न प्रवर्तते कच्छेण वा प्रवर्तमानं अयोगदोषान् कुर्यात्
  - 7) अजिर्णी – आमदोषः स्यात्
  - 8) नवज्वर – अविपक्वान् दोषान् न निहरेत् वातमेव च कोपयेत्
  - 9) मदात्यय – मद्यक्षीणे देहे वायुः प्राणोपरोधं कुर्यात्
  - 10) आध्मान – अधमतो वा पुरीषकोष्ठे निचितो वायुर्विसर्पणं सहसा आनाहं तीव्रतरं मरणं वा जनयेत्
  - 11) शल्यादित अभिहत – क्षते वायुराश्रितो जीवितं हिंस्यात्
  - 12) अतिस्निग्ध – अतियोग भयं भवेत्
  - 13) रूक्ष – वायुः अंगप्रग्रहं कुर्यात्
  - 14) दारूण कोष्ठ – विरेचनेन उद्धतां दोषा हृच्छुल पर्वभेद आनाह अंगमर्द छर्दि मूर्च्छा क्लम जनयित्वा प्राणान् हन्युः
  - 15) क्षतादिनां गर्भिण्यन्तानां – वमनोक्त दोषः स्यात्

क) निरूह बस्ती अयोग्य में युक्ति –

- 1) अजीर्ण अतिस्निग्ध पीत्स्नेहानां – दूष्योदरं मूर्च्छा श्वयथु वा स्यात्
- 2) उत्क्लिष्ट दोष मन्दाग्नि – तीव्र अरोचक
- 3) यानक्लान्त – क्षोभव्यापन्नो बस्तिराशु देहं शोषयेत्
- 4) अतिदुर्बल क्षुत् तृष्णा श्रमार्त – पूर्वोक्त दोष (क्षोभव्यापन्नो बस्तिराशु देहं शोषयेत्)
- 5) अतिकृश – काश्य जनयेत्
- 6) भुक्तभक्त पीत उदक – उत्क्लिश्य उर्ध्वं अधो वा वायुबस्तीमुक्तिष्य क्षिप्रं घोरान् विकारां जनयेत्
- 7) वमित विरिक्त – रूक्षां शरिरं निरूहः क्षतं क्षार इव दहेत्
- 8) कृतनस्त – विभ्रंशं संरुद्धस्त्रोतस कुर्यात्
- 9) क्रुध्द भीत – बस्तीं उर्ध्वं उपप्लवेत्
- 10) मत्त मूर्च्छित – भृशां विचलितायां संज्ञां चित्तोपघातात् व्यापत् स्यात्
- 11) प्रसक्त छर्दि निष्ठिविका श्वास कास हिकका – उर्ध्वभूतो वायु उर्ध्वं बस्तीं नयेत्
- 12) बद्ध छिद्र दकोदर आध्मान – भृशतरं आध्माय बस्ति: प्राणाण हिंस्यात्
- 13) अलसक विसूचिका आम, प्रजाता (सूतिका), आमातिसार – आमकृतो दोषः स्यात
- 14) मधुमेह कुष्ठ – व्याधीवृद्धी

ड) अनुवासन बस्ती अयोग्य में युक्ति –

- 1) अभुक्तभक्त – अनावृतमार्गत्वात् उर्ध्वमतिवर्तते स्नेहः
- 2) नवज्वर पांडु कामला प्रमेह – दोषान् उत्क्लिष्ट उदरं जनयेत्
- 3) अर्श – अर्शासि अभिष्यंदं आध्मानं कुर्यात् (अर्श में अभिष्यंद उत्पत्ती कर आध्मान )
- 4) अरोचक – अन्नगृदीं पुनः हन्यात् (अन्न की रूची नष्ट होना)
- 5) मन्दाग्नि दुर्बल – मन्दतरं अग्निं कुर्यात्
- 6) प्रतिश्याय पतीहरोग – भृशां उत्क्लिष्ट दोषाणां भूय ऐव दोषं वर्धयेत्

इ) नस्य अयोग्य में युक्ति –

- 1) अजीर्ण भुक्तभक्त – दोष उर्ध्ववहानि स्नोतांस्याकृत्य कास श्वास छर्दि प्रतिश्यायान् जनयेत्
- 2) पीतस्नेह मद्य तोय पातुकामानां कृते च पीबतां – मुखनासास्त्राव अक्षिउपदेह तिमिर शिरोगान् जनयेत्
- 3) स्नात शिरसः कृते च स्नानात शिरसः – प्रतिश्यायां
- 4) क्षुधार्त – वातप्रकोप
- 5) तृष्णार्त – तृष्णाभिवृद्धी मुखशोष
- 6) श्रमार्त मत्त मूर्च्छित – अस्थापनोक्त दोष (भृशां विचलितायां संज्ञां चित्तोपघातात् व्यापत् स्यात्)
- 7) शस्त्र दंडहत – तीव्रतरां रूजां जनयेत्
- 8) व्यवाय व्यायाम पान(मदयपान) क्लान्त – शिरःस्कंध नेत्र उरः पीडनं
- 9) नवज्वर शोकाभितप्त – उष्मा नेत्रनाडीं अनुसृत्य तिमिरं ज्वरवृद्धी च कुर्यात्
- 10) विरिक्त – वायुः इन्द्रियोपघातं कुर्यात्
- 11) अनुवासित – कफः शिरोगुरुत्वं कण्डू क्रिमिदोषान् जनयेत्
- 12) गर्भिण्या – गर्भं स्तभयेत्, स काणः कुणिः पक्षहतः पीठसर्पि स्यात्
- 13) नवप्रतिश्याय – स्त्रोतांसि व्यापादयेत्
- 14) अनृत दुर्दिने – शीतदोषात् पूतिनस्यं शिरोरोगश्च स्यात्

2) अपां दोषहरणि आदौ प्रदद्यात् उदकोदरे । (सर्वप्रथम आप धातु (जल) निर्हरण)  
 मूत्रयुक्तानि तीक्ष्णानि विविध क्षारवन्ति च ॥  
 दीपनीयैः कफधैश्च तम् आहारैः उपाचरेत् ।

सर्व उदर त्रिदोषज –

सर्वम् एव उदरं प्रायो दोषसंघातजं मतम् ।  
 तस्मात् त्रिदोषशमनी क्रिया कार्या कारयेत् ॥

एरण्ड तैल प्रयोग –

- 1) कफ + वायु पित्ताद्वारा आवृत्त होनेपर
- 2) वायु + पित्त कफाद्वारे आवृत्त होनेपर

सर्पविष प्रयोग –

- 1) त्रिदोषज उदर में
  - 2) योग्य अवस्था – अ) क्रियातिवृत्ते जठरे त्रिदोषे च अप्रशास्यति ।  
 इतर क्रियाओद्वारा त्रिदोषज उदर शमन न होनेपर  
 ब) अक्रियायां ध्रुवो मृत्युः क्रियायां संशयो भवेत् ।  
 चिकित्सा न करने पर मृत्यु निश्चीत व चिकित्सा करनेपर संशय  
विषप्रयोग मार्ग – पान भोजन संयुक्तं विषं अस्मै प्रयोजयेत् ।
- विष कार्यकारीत्व – लीन विमार्गागज स्थिर दोष संघात विष के आशु व प्रमाथी गुण के कारण  
 भेदन होकर दोषनिर्हरण होता है

संसर्जन ऋम मे – कारभ (उच्च) पय

बध्दोदर व छिद्रोदर मे शस्त्रकर्म –

नाभी अधस्थाने वामपार्श्व स्थाने 4 अंगुल अंतर अर वेधन

बध्दोदर

क्षतोदर

सर्पियुक्त हस्तद्वारे आंत्र संमूच्छना विमोक्षण

कंटकादी निर्हरण

पिपिलिका दशद्वारे सीवनकर्म

पिपिलिका दंशद्वारे सीवनकर्म

जलोदर शस्त्रकर्म

स्थान – नाभी अधस्थाने वामपार्श्व – वेधन – जलविस्त्रावण – तत पश्चात उदर वेष्टन

संसर्जन ऋम – (6+3+3 = 12)

- 1) लंघन पश्चात अस्नेह लवणयुक्त पेया
- 2) (6 मासपर्यंत क्षीरप्रयोग) अतः परं तु षण्मासात् क्षीरवृत्ती भवेत् नरः
- 3) त्रीन मासान् पयसां पेयां पिबेत् । (तत नंतर 3 मासपर्यंत पेया क्षीरसह)
- 4) त्रीश अपि भोजयेत् । (3 मास श्यामाक कोरदूष आदी युक्त अलवन भोजन)  
 नरः संवत्सरेण एव जयेत् प्राप्तं जलोदरम् ।

पथ्य –

रक्तशाली यव मुदग जांगल मांस पय मूत्र आसव मधु सिधु सुरा यवागु औदन यूष

अपथ्य –

औदकानुप मांस, शाक पिष्ट तिल व्यायाम अध्व दिवास्त्व्य यानायान

न अदयात् अन्नानि जठरी तोयपानं च वर्जयेत् ।

तक्र प्रयोग –

न अति सांद्र स्वादु अपेलव उष्ण तक्र प्रयोग

अनुपान -

- 1) निचयोदर – त्रूषण क्षार लवण
- 2) वातोदर – पिप्पली + लवण
- 3) पित्तोदर – शर्करा + मधुक (यष्टी)
- 4) कफोदर – यवानी + सैंधव + अज्जाजी + व्योष
- 5) प्लीहोदर – मधु + तैल + वचा + शुंठी + शताब्दा + कुछ + सैंधव
- 6) बधोदर – हपुषा + यवानी + सैंधव
- 7) छिट्रोदर – पिप्पली + क्षोड्र

क्षीर प्रयोग –

प्रयोजन – दोष अनुबंधार्थ , बलस्थैर्यार्थ

विधि – 1) 1 सप्ताह पर्यन्त अनन्न अवस्था मे माहिष मूत्रासह क्षीरपान

- 2) अथवा 1 मासपर्यन्त उष्ट्र पय त्रिकटू सह
- 3) अथवा 3 मासपर्यन्त छाग पय व्योष सह
- 4) अथवा 1 सहस्र (1000) हरीतकी प्रयोग क्षीरासह
- 5) अथवा केवल दुग्धाहार सह शिलाजतु प्रयोग / गुगुल प्रयोग
- 6) अथवा शृंअबेर आर्द्रक रस + समभाग क्षीर
- 7) अथवा दशमूल शृंगबेर आर्द्रक रसासह तील तैल प्रयोग

फलश्रुति – प्रयोगः अपचित अंगानां हितं हि उदरीणां पयः ।

सर्वधातुक्षयार्तस्य देवानाम् अमृतं यथा ॥

विविध पय – शोफ अर्ति आनाह तृष्णा मूर्च्छा होनेपर – कारभ पय

शोधनपञ्चात् क्षामदेह मे गव्य छाग माहिष पय

योग –

- 1) पटोलमूलादी चूर्ण
- 2) गवाक्षादी चूर्ण
- 3) हपुषादी चूर्ण
- 4) क्षारवटिका

नारायण चूर्ण –

लवण पंचक – 1 भाग

यवानी धान्यक हपुषा त्रिफला विडंग समभाग

दंतीमूल – 3 भाग

त्रिवृत विशाला (इंद्रवारूणी) सातला – 4 भाग

व्याधीनुसार अनुपान –

- 1) उदर – तक्र
- 2) गुल्म – बदराम्बु
- 3) आनधदवात – सुरा
- 4) वातरोग – प्रसन्ना
- 5) विटसंग – दधिमंड

- 6) अर्श – दाढिमाम्बु
- 7) परिकर्तिका – वृक्षाम्ल
- 8) अजीर्ण – उष्णाम्बु

### अर्श चिकित्सा –

द्विविधानी अर्शासी –

- 1) सहज
- 2) जातस्य उत्तरकालज

#### 1) सहज –

हेतु – गुदवली बीज उपतप्तता

गुदवली बीज उपतप्तता हेतु

माता पिता अपचार  
पूर्वकृत कर्म

अर्श – अर्शासी इति अधिमांस विकागः ।

अर्श अधिष्ठान – सर्वेषां च अर्शसां क्षेत्रं गुदस्य अर्धपंचांगुल अवकाशे ।

सर्वेषां च अर्शसां अधिष्ठानं मेदो मासं त्वक च ।

#### सहज अर्श स्वरूप –

- |                       |                       |
|-----------------------|-----------------------|
| कानिचित् अणूनि        | कानिचित् महन्ति       |
| कानिचित् दीर्घानि     | कानिचित् हस्वानि      |
| कानिचित् वृत्तानि     | कानिचित् विषमविसृतानि |
| कानिचित् अन्तकुटिलानि | कानिचित् बहिकुटिलानि  |

पित्तज अर्श – अस्पर्शसहानी

कफज अर्श – स्पर्शसहानी

अर्श भेद – 8 वा पि क सा द्वंद्वज सहज

#### पूर्वरूप

विष्टम्भो अन्नास्य , कुक्षेः आटोप , कार्यम्, उत्तरबाहुल्य  
सर्किथसा , अल्पविटकता  
ग्रहणी दोष पाण्डवार्तेः आशंका उदरस्य च ।

#### अर्श वैशिष्ट्य –

- 1) तस्मात् अर्शासि दुःखानि बहुव्याधिकरणि ।
- 2) सर्व देह उपतापे
- 3) प्रायः कृच्छ्रतमानि

#### असाध्य अर्श लक्षण –

- 1) हस्ते पादे मुखे नाभ्यां गुदे वृषणयोः तथा शोथे
- 2) हृत्पार्श्वशूल
- 3) सम्मोह छर्दि अंगरूजा ज्वर तृष्णा गुदपाक

#### साध्यासाध्यता –

- 1) एक दोष उत्पन्न , बाह्य वलीश्रीत, न चीरोत्पतीतानी = सुखसाध्य
- 2) द्वंद्वज, द्वितीय वलीश्रीत, परिसंवस्तरातीत = कष्टसाध्य

3) त्रिदोषज , आभ्यंतर वलीश्रीत, सहज = असाध्य

द्विविध अर्फ –

- 1) शुष्कार्श – वात + कफ  
2) आर्द्धार्श – रक्त + पित्त

## चिकित्सा -

- ### 1) शाष्कार्ता –

स्तब्धता, शूल, शोफ होनेपर = स्वेदन प्रयोग (पोटल्ली स्वेद, अवगाह स्वेद)  
धूमप्रयोग  
लेप – हरिदाचर्णादी लेप, पिप्पल्यादी लेप

## रक्तावसेचन अवस्था -

शीत उष्ण स्निग्ध रूक्षे न व्याधि उपशाम्यति  
रके दुष्टे भिषक तस्मात् रक्तम् एव अवसेचयेत् ॥  
जलौकोभिः तथा शास्त्रैः सूचीभिर्वा पुनः पुनः ।  
अवर्तमानं रूक्षीरं रक्तार्शभ्यः प्रवाहयेत् ॥

हरीतकी प्रयोग – गोमूत्र गृड़ वा तक्र मह

अर्शाघ्न दधी वा तक्रे – चित्रकमूल त्वक का कुंभ को आभ्यंतरतः लेप कर उसमे तैयार किया हुआ दधी व तक्रे सेवन

तक्र - वातकफज अर्थ मे श्रेष्ठ -

- वातश्लेष्म अर्शसां तक्रात् परं नास्तीह भेषजम् ।
  - नास्ती तक्रात् परं किंचीत् औषधं कफवातजे ।

## तक प्रयोग -

दोषानुसार स्सन्नेह वा रुक्ष  
बल कालानसार 7/10/15 दिन या 1 मास

## अर्गोवेदनाशामक योग -

दस्पर्श + पाठ, बिल्व + पाठ, अजमोदा + पाठ, शुंठि + पाठ

## अनुवासन अवस्था –

- 1) उदावर्त
  - 2) अत्यर्थ विरुद्धित
  - 3) विलोमवात
  - 4) शल विष्टम्भ

### स्थावी अर्थ / स्त्रार्थ -

- 1) वातानुबंधी 2) कफानुबंधी

स्नावी अर्थ चिकित्सा -

- 1) वातानुबंधी - स्निग्ध + शीत  
 2) कफानबंधी - रुक्ष + शीत

**पिन्कफाइक रकार्श** – उक्त विस्त्रावण हो तो प्रथम उपेक्षा तत्पश्चात लंघन

### रक्तार्श चिकित्सा –

अग्निसंटीपनार्थं च रक्तसंग्रहणाय च ।  
दोषाणाम् पाचनार्थं च परं तिकैः उपाचरेत् ॥

**रक्तार्श** – पलाण्डु प्रयोग

### रक्तार्श मे रक्त प्रयोग

तरुण छाग अन्तराधी रूधीर पलाण्डु से सिध्द कर व्यत्यास मे मधुर अम्ल रससह सेवन  
रक्तार्श मे विटशोणितक्षय मे – पिच्छा बस्ती प्रयोग

### अर्श मे व्यत्यास मे कर्म –

व्यत्यासात् मधुर अम्ल शीतोष्णानि च योजयेत् ।  
नित्यम् अग्नि बलापेक्षी जयेत अर्श कृतान् गदान्॥

### त्रिविध व्याधी निदानार्थकतत्व –

त्रयो विकाराः प्रायेण ये परम्परहेतवः । अर्शासि च अतिसारश्च ग्रहणी दोष एव च ॥

### त्रिविध व्याधी मे अग्निरक्षण –

एषां अग्निबले हीने = वृद्धी (व्याधी वृद्धी)

अग्निबले वृद्धे = परिक्षय (व्याधी क्षय)

तस्मात् अग्निबलं रक्ष्यम् एषु त्रिषु विशेषतः

**पथ्य** – वातानुलोमक व अग्निबलवर्धक अन्नपान

### योग –

- |                  |                            |
|------------------|----------------------------|
| 1) तक्तारिष्ट    | 2) दन्त्यारिष्ट            |
| 3) फलारिष्ट      | 4) द्वितीय फलारिष्ट        |
| 5) कनकारिष्ट     | 5) कूटजादी रसक्रिया        |
| 6) हींबेरादी घृत | 7) सुनिष्पण्णक चांगेरी घृत |

### ग्रहणी चिकित्सा –

#### अग्नि महत्व –

आयुर्वर्णो बल स्वास्थ्य उत्साह उपचयौ प्रभा । ओजस्तेजोनयः प्राणाश्च उक्ता देहग्निहेतुका ॥

#### अन्न प्रशस्ती ( च.सू 27 )

प्राणः प्राणभृतानां अन्नं लोकोऽभिधावती । वर्णप्रसादः सौस्वर्यं जीवितं प्रतिभा सुखम् ।

तुष्टिः पुष्टिः बलं मेधा सर्वं अन्ने प्रतिष्ठितम् ॥

#### प्राकृत व विकृत अग्नि परिणाम

शान्ते अग्नौ – मियते  
युक्ते अग्नौ – चीरं जीवती अनामयः ।  
विकृते (अग्नौ) – रोगी स्यात् ।  
मूलम् अग्नि तस्मात् निरुच्यते ।

**प्राण वायु कर्म** – अन्न को कोष्ठ की ओर प्रकर्षित करना ।

पक्वाशय मे अग्नि शोषण का कार्य करता है – पक्वाशयं तु प्राप्तस्य शोष्यमानस्य वन्हिना ।

#### भौतिक अग्नी –

भोम्य आप्य आग्नेय वायव्यं पंचोष्मणा सनाभसा ।

### त्रिविध न्याय वर्णन – चक्रपाणी

#### 1) क्षीरदधी न्याय –

रसात् रक्तं ततो मासं मांसान् मेदः ततो अस्थी च। अस्थो मज्जा ततः शुक्रं गर्भः प्रसादन् ॥  
धातु अनुलोम या प्रतिलोम रिति से परस्पर का स्नेहन करते हैं।  
परस्परोपसंस्तन्धा धातुस्नेहपरम्परा ।

#### धातुपोषन न्याय मे अपवाद – वृथ्य द्रव्य

वृथ्यादीनां प्रभावस्तु पुष्णाति बलमाशु हि ।  
वृथ्य द्रव्य प्रभावसे आशु बलपोषण करते हैं।

धातुपोषण चक्रवत् चलता है – संतत्या भोज्यधातुनां परिवृत्तीस्तु चक्रवत् ।

#### ग्रहणी हेतु –

अभोजनात् अजीर्णात् अतिभोजनात् विषमाशनात् । असात्य गुरु शीत रुक्ष सन्दुष्ट भोजनात् ॥  
विरेक वमन स्नेह विभ्रमात् व्याधी कर्षणात् । देशकालऋतुवैषम्यात् वेगानां च विधारणात् ॥

#### संप्राप्ती –

दुष्यत्यग्निः स दुष्टो अन्नं न तत् पचति लघुःपि । अपच्यमानं शुक्रतं वाति अन्नं विषरूपताम् ॥

#### चतुर्विध अग्नि

- 1) विषमाग्निः – धातुदैषम्य विषमं पच्यने ।
- 2) तीक्ष्णाग्निः – मंद इंधनो धातुन् विशोषणेत् ।
- 3) समाग्निः – युक्तं भुक्तवतो युक्ते धातुसाम्यं
- 4) दुर्बलाग्निः (मंदाग्निः) – विदहती अन्नं तत् याति उर्ध्वं अधो वा ।

#### ग्रहणी रूप –

- 1) अतिसृष्टं तिब्धदं वा द्रवं तदुपदिश्यते ।
- 2) तृष्णा अरोचक वैरस्य प्रसेक तमकान्वित
- 3) शूनपाटकर
- 4) अस्थीपर्वरूप, छद्म, ऊर
- 5) लोहामग्न्यि तिक्ताम्ल उद्धारशास्य जायते

#### पूर्वरूप –

- 1) तृष्णा आलस्य बलक्षय
- 2) विदाहो अन्नपाकश्च चिरात्; कायस्य गौरवम्

#### प्रकार – चत्वारो ग्रहणी

##### 1) वातज ग्रहणी –

- 1) तस्य अन्नं पच्यते दुःखं
- 2) शुक्रपाक, खरांगता, कंठास्यशोष, क्षुधा, तष्णा, तिमिर, कर्णयोः स्वनं,
- 3) पार्श्व उरुवंक्षणग्रीवा रूजो, विसूचिका, हुत्पीडा, काश्य, दौर्बल्य, वैरस्य, परिकर्तिका
- 4) गृष्ठिः सर्वरसानां
- 5) मनसः सदनं, कास श्वासादित
- 6) जीर्णे जीर्यति च आध्मानं भुक्ते स्वास्थ्यं उपैती च ।
- 7) वातगुल्म हृद्रोग प्लीहशंकी च मानवः ।

8) चीरत् दुखं द्रवं शुष्कं तनु आम शब्दफेनवत् पुनः पुनः सृजेत् वर्चः ।

**निदानात्मक तुलना –**

- 1) वातज ग्रहणी – जीर्णे जीर्यती आध्मानं भुक्ते स्वास्थ्यं उपैती च ।
- 2) अन्नद्रव शूल – जीर्णे जीर्यती अजीर्णे वा यद् शूलं उपजायते ।
- 3) परिणाम शूल – भुक्ते जीर्यती यत् शूलं तदेव परिणामजम् ।
- 4) भस्मक – भुक्ते अन्ने लभते सुखम् जीर्यति प्रताम्यते ।
- 5) अन्नावृत वात – भुक्ते कुक्षो रूक जीर्णे शाम्यति ।
- 6) मलावृत वात – भुक्ते च आनह्यते नराः ।
- 7) उदर – भुक्तम् विदह्यते जीर्णाजीर्ण न वेत्ती च ।
- 8) क्षुद्र हिकका – वृद्धीम् आयस्यतो भुक्तमात्रे मार्दवम् ।
- 9) वातज गुल्म – जीर्णे अभ्यधिकं प्रकोपम् भुक्ते मृदूत्वं

**पित्तज ग्रहणी –**

नील पीताभ द्रव मल निस्सरण, हुत्कंठदाह, अरुची, तृष्णा  
पूती अम्लोदगार

**कफज ग्रहणी –**

आस्य उपलेप, माधुर्य, कास, छीक्कन, पीनस, आलस्य  
हुदयं मन्यते स्त्यान  
उदर स्तिमित गुरु, दुष्ट मधुर उदगार,  
डत्रीषु अहर्घण  
भिन्न आम इलेष्मसंसृष्ट गुरु वर्च प्रवर्तन  
अकृशस्य अपि दौर्बल्यम्

**साम ग्रहणी चिकित्सा –**

वमन – सविष्टंभ प्राणक अर्ति विदाह अरुची गौरजं । आमलिंगान्विता दृष्टवा मुखोष्ण अष्वुन उधरेत् ॥

फलानां वा कषायेन पिप्पली सर्षपस्तथा ।

मदनफल / सर्षप / उष्णोदक द्वारा वमन

**ग्रहणी चिकित्सा सूत्र –**

लीनं पक्वाशयस्थं वा अपि आमं स्त्राव्यं सदीपनैः ।

शरीरानुगते सामे रसे लंघनपाचनम् ॥

1) पक्वाशयस्थ लीन आम दोष – दीपनासह स्त्रावण

2) शरीरगत साम र्स – लंघन पाचन

**वातज ग्रहणी चिकित्सा –**

आमपाचन पश्चात दीपनीय सर्पि

बृद्ध वर्चस होनेपर – अनुवासन

घृतप्रयोग – दशमूलादय घृत त्रूषणादय घृत, पंचमूलादय घृत

तक्रारिष्ट

**चित्रकादी गुटिका –** चित्रक पिप्पलीमूल द्वौ क्षार, पंचलवण, व्योष हिंगु अजमोदा

**भावना –** मातुलुंग स्वरस/ दाडिम स्वरस

### साम निराम मल परीक्षा –

मज्जति आमा गुरुत्वात् विट पक्त्वा तु उत्प्लवते जले । विना अतिद्रवसंघात शैत्य इलेष्मप्रदूषणात् ॥

1) साम मल – गुरुत्व के कारण जल मे निमज्जन

2) निराम मल – जल पर उत्प्लवण

उपरोत परीक्षा मे अपवाद

1) मल मे अतिद्रवता      2) अतिसंघात      3) अतिशैत्य      4) व इलेष्मदूष्ट होनेपर

साम मल परीक्षण नही हो पाता है ।

### 2) पित्तज ग्रहणी चिकित्सा

स्वस्थानगत उत्क्लिष्ट पित्त – वमन / विरेचन

योग – चंदनादय धृत, भूनिम्बादी चूर्ण, किरातादी चूर्ण

नागरादय चूर्ण – कृष्णात्रेय द्वारा वर्णित

### 3) कफज ग्रहणी चिकित्सा –

कफदृष्टी होनेपर – वमन

कटू अम्ल लवण क्षारादी से अग्नि वर्धन

योग – दुरालभासव

पिण्डासव

मध्नाग्निष्ट

क्षारभृत,

क्षारगुटिका

### 4) सान्निपातज ग्रहणी चिकित्सा –

त्रिदोषे विधिवद् वैद्य पंचकर्माणी कार्येत् । धृत श्वार आसव अरिष्टान् ददयाच्य अग्निवर्धनम् ॥

#### पित्तज ग्रहणी अनुबंधानुसार चिकित्सा –

1) जटुपित्त अवस्था – तिक मधुर युक्त दीपन औषधी

2) बहुवात अवस्था – स्नेह लवण अम्ल युक्त दीपन औषधी

#### स्नेह सर्वश्रेष्ठ अग्निदीपक –

स्नेहमेव परं विद्यात् दुर्बल अनल दीपनम् । नालं स्नेहसमृद्धस्य शामायान्न सगुर्वपि ॥

दुर्बल अनल दीपनार्थ ‘स्नेह’ पर – श्रेष्ठ

स्नेह से समृद्ध अग्नि को गुरु अन्न भी शमन नही कर सकता

#### आवस्थिक अग्नि चिकित्सा –

1) मंदाग्नि व्यक्तीद्वारा अविपक्व पुरीष अतिसरण – दीपनीय द्रव्य सिध्द धृत पान

2) कठिन पुरीष कृच्छता से निर्हरण – धृत + लवण अन्नावग्रह करके सेवन

3) रूक्षता के कारण मंदाग्नि – दीपनीय सर्पि / दीपनीय तैल पान

4) अतिस्नेह से मंदाग्नि – चूर्ण आसव अरिष्ट सेवन

5) मल गुद स्थाने उपलिप्त होकर भिन्न स्वरूप मे निर्हरण – तैल सुरा असव प्रयोग

6) उदावर्त के कारण मंदाग्नि – निरूह व अनुवासन

7) दोषवृद्धी के कारण मंदाग्नि – दोषशोधन

8) व्याधी के कारण मंदाग्नि – सर्पि: एव अग्निदीपन

9) उपवास के कारण मंदाग्नि – धृतसह यवागूपान

10) अन्नावपिडीत धृत – बल्य दीपन बृहण

11) दीर्घकालीन रोग कारण क्षीण कृश नर – प्रसह पिशित / मांसरस अम्लसह सेवन न अभोजने का यागिनीर्दीप्यते न अतिभोजनात् ।  
अभोजन या अतिभोजन दोनों से कायागि दीपन नहीं होता है ।

#### भस्मक / तीक्षणाग्नि

**संप्राप्ति** – नरे क्षीणकफे पित्तं कुपितं मारुतानुगं ।

कफ क्षीण होने से कुपित पित्त मारुत सह अग्नि स्थान में गमन कर अग्नि वर्धन करता है ।

**लक्षण** – 1) परिभूय पचति अन्नं तैक्षण्याद् आशु मुहुर्मुहुः ।

मुहुर्मुहु लिया हुआ अन्न भे तीक्षण अग्नि के कारण आशु पचन होता है ।

2) पक्त्वा अन्नं स ततो धातुशोणितादीन् पचति अपि ।

अन्न पचन पश्चात शोणितादी धातु पचन

3) दौर्बल्य अनेक रोग मृत्यू

4) भुक्ते अन्ने लभते शान्ति जीर्णमात्रे प्रताम्यति ।

5) तृष्णा दाह मूर्च्छा आदी

#### चिकित्सा –

1) गुरु शीत स्निग्ध मधुर विज्जल (पिच्छल) अन्नपान

2) मुहुर्मुहु अजीर्णपि भोजनानि अस्य उपहारयेत् । अजीर्ण होनेपर भी मुहुर्मुहु अन्न देना ।

3) स्निग्ध पायस कृशारा पैष्ठिक गुडविकृती

4) घृतभृष्ट औदका आनूप मांस, घृतभृष्ट आविक मांस, घृतभृष्ट गोधूम चूर्ण

5) मत्स्य विशेषतः स्थिर जलचर मत्स्य

6) तैलयुक्त फल प्रयोग

7) सर्पि + मधुच्छिष्ट शीताम्बु सह

8) उदुम्बर त्वक नारी स्तन्य सह

9) विरेचन – इयामा त्रिवृत द्वारा

#### चिकित्सा सूत्र –

यत् किंचित मधुरं मेदयं इलेष्मलं गुरुभोजनं । सर्वं तद् अग्नि हितं भुक्त्वा प्रस्वपनं दिवा ॥  
प्रातराशे अजीर्णपि सायमाशो न दूष्यति ।

प्रातःकाल के भोजन का अजीर्ण होते हुए भी सायंकाल में भोजन करने पर वह दूषीत नहीं होता ।

**कारण** – 1) दिन में अर्क के प्राबल्य कारण ह्रुदय विकसीत रहता है

2) दिन में स्त्रोतस विकसीत होते हैं

3) व्यायाम विहार विक्षित्वं चेतत्वं होता है

4) धातुओं में क्लेद नहीं होता है

**तत्र** – तत्रं तु ग्रहणी दोषे दीपन ग्राही लाघवात् ।

#### तत्र त्रिदोषघनत्व –

1) वात – स्वादु अम्ल सान्द्रत्वात् वातघ्न

2) पित्त – मधुर विपक्तिवात् न च पित्तं प्रकोपयेत्

3) कफ – कषाय उष्ण विकासीत्वात् रौक्ष्यात् च एव कफे हितम् ।

## चरक संहिता – चिकित्सास्थान – 2

### पांडु चिकित्सा –

प्रकार – ५ वातज पित्तज कफज सान्निपातज मृद्दक्षणजन्य

संप्राप्ती – दोषाः पित्तप्रधानस्तु यस्य कुप्यन्ति धातुषु । शैथिल्यं तस्य धातुना गौरवं च उपजायते ॥  
वर्णबलस्नेहक्षय

अल्परक्तो अल्पमेद्स्को निःस्सर शिथिलेन्द्रियः ।

अन्य संप्राप्ती – समुदीर्ण यदा पित्तं हुदये समवस्थितम् । वायुना बलिना क्षिप्तं सम्प्राप्य धमनीर्दश ॥  
प्रपत्नं केवलं देहं त्वक् मांसान्तराश्रितम् ॥

वैशिष्ट्य – त्वकस्थाने पांडु हारिद्र हरीत वर्ण

पूर्वरूप – हुदयस्पदनं रौक्ष्यं स्वेदाभावः श्रमः तथा ।

रूप – कर्णक्षवेड, हतानलः, दौर्बल्य, सदन, श्रम, गाव्रशूल, ज्वर, श्वास, अरुची गौरव

शूनाक्षिकूट, शीर्णलोमा, हतप्रभ, शिशिरदेष, निद्रालु, छिवन, अल्पवाक, पिंडिकोद्देष्टन

### प्रकारानुरूप लक्षण –

1) वातज पांडु – कृष्ण पांडुता, रुक्ष अरुण अंगता, अंगमर्द रुजा तोद, शिरोरुजा

2) पित्तज पांडु – पीत हरिताभ वर्ण, ज्वर दाह तृष्णा पीतमूत्रशक्त, स्वेदन, शीतकाम, न च अन्नं अभिनन्दति

3) कफज पांडु – गौरव तंद्रा श्वेतावभासता, श्वास कास आलस्य शुक्लमूत्राक्षिवर्चस्त्व

4) मृद्दक्षणजन्य पांडु –

मृत्तिका अदनशील व्यक्तीद्वारा मृत्तिका सेवन

1) कषाय मृत्तिका सेवन – वातप्रकोप

2) उषर मृत्तिका सेवन – पित्तप्रकोप

3) मधुर मृत्तिका सेवन – कफप्रकोप

उपरोक्त मृत्तिका सेवन से रसादी रौक्ष्यत्व + स्कोतो अवरोध = इंद्रिय बल वर्ण ओज नाश

लक्षण – शून गंड अक्षि कूट भ्रू शून पाद नाभी मेहनः ।

गण्ड अक्षिकूट भ्रू पाद नाभी मेहन शोध

- क्रिमिकोष्ठो अतिसार्येत् मलं स असक कफान्वितम् ॥

### पांडु असाध्यत्व –

पाण्डुरोगः चीरोत्पन्नः खरीभूतो न सिध्यति ।

कालप्रकर्षात् शोथत्व, पीतवर्णी दर्शन, सकफ हरीत बद्ध अल्प विटक अतिसारण

दीन श्वेत अतिदिग्धांग, छर्दि मूर्च्छा तृष्णा

### बहुपित्ता कामला / शाखाश्रीत कामला –

#### संप्राप्ती –

पांडुरोगी तु यो अत्यर्थ पित्तलानि निषेवते । तस्य पित्तं असृग्मांसं दग्ध्वा रोगाय कल्पते ॥

पांडुरोगी के अत्यर्थ पित्तकर सेवन से रक्त मांस दग्ध होकर कामला उत्पत्ति

#### रूप –

हारिद्रनेत्रः स भृशं हारिद्र त्वक् नख आननः ।

रक्तपीत शक्तमूत्रो भेकवर्णो हतेन्द्रियः ।

दाह अविपाक दौर्बल्य सदन अरुची कर्षितः ॥

कामला बहुपितैषा कोष्ठशाखाश्रया मता ॥

### कुंभकामला –

कालान्तरात् खरीभूता कृष्ण स्यात् कुंभकामला ।

कृष्णपीत शकृन्मूत्रो भृशं शूनश्च मानवः ॥

1) खरीभूतता

2) कृष्णपीत शकृत व मूत्रता

3) भृश शूल

### साध्यासाध्यत्व – कष्टसाध्य

### असाध्य कुंभकामला –

1) सरक्त अक्षिमुख छर्दि विट मूत्र

2) दाह अरुची तृष्णा आनाह तंद्रा मोह

3) नष्टाग्निसंज्ञः क्षिप्रं हि कामलावान् विपदयते

### शाखाश्रीत कामला हेतु –

रुक्ष शीत गुरु स्वादु सेवने व्यायाम वेगनिग्रह

संप्राप्ती – कफसंमूर्च्छित वायुः स्थानाद् पित्तं क्षिपेत् बली ।

कफ से संमूर्च्छित वायु पित्त को स्व स्थानसे बाहर निकालता है ।

रूप – हारिद्रनेत्र मूत्र त्वक् श्वेतवर्चा

आटोप विष्टंभ हृदय गुरुता

दौर्बल्य अल्पाग्नि पार्श्वार्ति हिकका श्वास अरुची ज्वरैः ।

### चिकित्सा सूत्र –

1) तिलपिष्टनिभं यस्तु वर्चः सृजति कामली ।

इलेष्मणा रूधदमार्गं तत् पित्तं कफहरैः जयेत् ॥

इलेष्माद्वारा मार्ग अवरुद्ध होने से कफहर चिकित्सा कर पित्त को जीते ।

2) कटु तीक्ष्ण उष्ण लवणै भृश अम्लैश्च उपक्रमैः ।

आ पित्तरागात् शकृतो वायोश्च प्रशमात् भवेत् ॥

स्वस्थानमागते पित्ते पुरीष्य पित्तरंजिते ।

निवृत्तोपद्रवस्य स्यात् पूर्वः कामलिको विधीः ॥

कटु अम्ल लवण

उष्ण तीक्ष्ण

} द्वारे चिकित्सा उपक्रम

### उपरोक्त चिकित्सा उपक्रम मर्यादा –

1) आपित्तरागात् शकृतो – पित्तद्वारा शकृत का रंजन

2) वायोश्च प्रशमाद् भवेत् – वात का प्रशम हो

3) स्वस्थानमागते पित्ते पुरीषे पित्त रंजीते – स्वस्थानगत पित्त आनेपर उसके द्वारा पुरीष रंजन

उपद्रव निवृत्ति पश्चात् – पूर्वः कामलिको विधीः (बहुपित्ता कामला समान चिकित्सा)

### हलीमक -

यदा तु पाण्डोर्वरणः स्याद् हरीत श्यावपीतकः ।  
बल उत्साह क्षय तन्द्रा मन्दाग्नित्वं मृदूज्वरः ॥  
स्त्रीषु अहर्षा अंगमर्दश्च श्वासस्तृष्णा अरुची भ्रमः ।

दोषाधिक्य – वात + पित्त

### चिकित्सा -

- 1) स्नेहन – गुडूची स्वरस सिंध रुक्ष घृत
- 2) विरेचन – आमलकी + त्रिवृत  
बलाधानार्थ मधुर द्रव्य व वातपित्तघ्न द्रव्य प्रयोग
- 3) बस्ती – यापन बस्ती, क्षीर बस्ती, अनुवासन बस्ती

### पांडु चिकित्सा -

तत्र पाण्डवामयी स्निग्ध तीक्ष्णैः उर्ध्वानुलोमिकैः ।  
संशोध्य मृदूभिस्तिकैः कामली तु विरेचनैः ॥  
स्नेहन पश्चात तीक्ष्ण उर्ध्व व अधो अनुलोमन

### कामला चिकित्सा -

संशोधन – मृदू तिक्त द्रव्य द्वारे विरेचन  
उभय व्याधी में शोधन पश्चात पथ्य अन्न सेवन

### घृत प्रयोग -

पंचगव्यं महातिक्तं कल्याणकमथापि वा ।  
स्नेहनार्थं घृतं दद्यात् कामला पांडु रोगिणे ॥

- |                 |                 |                  |
|-----------------|-----------------|------------------|
| 1) दाढिमादी घृत | 2) कटुकादी घृत  | 3) पथ्या घृत     |
| 4) दन्ती घृत    | 5) द्राक्षा घृत | 6) हरिद्रादी घृत |

### सामान्य चिकित्सा सूत्र -

वातिके स्नेहभूषिष्ठं पैतिके तिक्तशीतलम् ।

इलैषमिके कटुतिक्तोषां विमिश्रं सान्निपातिके ॥

विरेचन – स्नेहनपश्चात स्निग्ध विरेचन

गोमूत्र हरीतकी – कफपांडु में गोमूत्र क्लिन्न हरीतकी प्रयोग

लोहभस्म प्रयोग – सप्तरात्रीपर्यंत गोमूत्र भावीत लोह (अयोरज) प्रयोग

### नवायस चूर्ण / लोह -

त्र्यूषण (शुंठी मरोच पिप्पली)	} प्रत्येकी 1 भाग
त्रिफला	
त्रिमद (विडंग मुस्ता चित्रक)	} प्रत्येकी 1 भाग
अयोरज – 1 भाग	

अनुपान – क्षोद्र + सर्पि                            वैशिष्ट्य – कृष्णात्रेय द्वारा वर्णित

फलश्रुती – पांडु कामला हुद्रोग अर्श कुष्ठ

मण्डूर योग – गुड नागर मण्डूर तील समभाग , पिप्पली द्विगुण

मण्डूर वटक – त्र्यूषण त्रिफला त्रिमद चव्य दार्दी त्वक, सुवर्ण माक्षिक ग्रंथिक देवदारू प्रत्येकी – 2 पल

मण्डूर द्विगुण, गोमूत्र मे पाक  
उदुम्बर सम वटिका निर्माण

### सुवर्णमाक्षिकादी योग / ताप्यादी लोह -

ताप्य - सुवर्णमाक्षिक	}	प्रत्येकी - 5 पल
आदिज (शिलाजतु)		
रौप्य मल (रजत माक्षिक)		
अयोमल (मण्डूर)		

चित्रक त्रिफला व्योष विडंग - प्रत्येकी - 1 पल

शर्करा - 8 पल

अनुपान - मधु

पथ्य - कुलत्थ काकमाची कपोतमांस सेवन निषेध

योगराज - कुलत्थ काकमाची कपोत वर्ज्य, उदुम्बर सम वटी निर्माण

शिलाजतु वटक

पुनर्नवा मंडूर - पुनर्नवा त्रिवृत व्योष विडंग चित्रक कुछ हरिद्रा त्रिफला दंती चव्य कलिंगक पिप्पली

पिप्पलीमूल मुस्ता प्रत्येकी - 1 पल

मंडूर द्विगुण गोमूत्र मे पाचन कोलवद गुटिका निर्माण

अनुपान - तक्र

इतर कल्प - धात्र्यावलेह, मंडूर वटक, गौड अरिष्ट, बीजकारिष्ट, धात्र्यारिष्ट

### मृद्भक्षणजन्य पांडु चिकित्सा - :

मृत्तिका निर्हरणार्थ - बलानुसार तीक्ष्ण शोधन

शुद्ध काय पश्चात बलाधानार्थ सर्पिपान

मृत्तिका सेवन निवारण - लौल्य के कारण मृत्तिका न छोड़े तो विडंग एला अतिविषा निष्पत्र इसे भावित मृत्तिका सेवनार्थ दे।

### तुलनात्मक विवेचन -

- वर्ण - 1) पांडु - पांडु हारिद्र हरीत वर्ण
- 2) कामला - हरीत वर्ण
- 3) हलीमक - हरीत श्याव पीतक वर्ण
- 4) बहुपिता कामला - भेकवर्ण

शोधन - 1) पांडु - स्निग्ध तीक्ष्ण उर्ध्वानुलोमन

2) कामला - मृदू तिक्त संशोधन

3) मृदभक्षणजन्य पांडु - तीक्ष्ण संशोधन

शकृतमूत्र - 1) रक्तपीतशकृतमूत्र - बहुपिता कामला

2) कृष्णपीतशकृतमूत्र - कुंभकामला

### हिकका श्वास चिकित्सा -

उभय व्याधी वैशिष्ट्य - कामं प्राणहरा रोग बहवो न तु ते तथा ।

यथा श्वासश्व हिकका च प्राणानाशु निकृत्ततः ॥

प्राणहरण करनेवाले बहुत रोग होते हैं उनमे - हिकका श्वास आशु प्राणहर है ।

हिकका श्वास समानता –

- 1) कफवातात्मकावेतौ – वात व कफ समुद्द्रवज
- 2) पित्तस्थान समुद्द्रवौ – पित्तस्थान समुद्द्रवज (आमाशय समुद्द्रवज)
- 3) हुदयं रसादीनां धातुनां च उपशोषणम् ।
- 4) परमदुर्जयौ – चिकित्सा करने मे कठिन
- 5) मिथ्योपचारितौ कुरुदौ हत आशीविषाविव

हेतु – 1) रजसा धूमवाताभ्यां

- 2) शीत स्थान शीत अम्बु सेवनात
- 3) व्यायामात्, ग्राम्यधर्म, विषमाशन आमदोष

संप्राप्ति – मारुतः प्राणवाहिनी स्त्रोतांस्य आविश्य कुप्यति ।

उरस्थः कफमुधुय हिककाश्वासान् करोति सः ॥  
घोरान् प्राणोपरोधाय प्राणिनां पण्च पण्च च ॥

विशेष संप्राप्ति – प्राणोदकान्नवाहिनी स्त्रोतांसि सकफोऽनिलः ।

हिकका: करोति संरूध्य तासां लिंगं पृथक् श्रुणु ॥  
प्राण उदक अन्नवह स्त्रोतोदुष्टी

चिकित्सा – कारण स्थान मूलैः एक्यात् एकम् एव चिकित्सितम् ।कारण – बात्य हेतु – रजसा धूम वाताभ्यां इ.स्थान – नाभी आमाशय इ.मूल – मूलदोष – वात कफचिकित्सा – हिककाश्वासादितं स्निग्धैरादौ स्वेदैरूपाचरेत् ।

आकृं लवणतैलेन नाडीप्रस्तर संकरैः ॥

- 1) सर्वप्रथम स्निग्ध द्रव्य द्वारा स्वेदन – नाडी प्रस्तर संकर मेसे एक
- 2) लवण + तैल द्वारा उरस्थाने स्नेहन / मर्दन ततपश्चात स्वेदन
- 3) इससे ग्रथीत इलेष्मा का विलयन होता है – ख (स्त्रोतस ) मार्दवता प्राप्ति होती है – वातानुलोमन अवेगावस्था मे वमन – पिप्ली सैंधव व क्षोद्र से युक्त वह वात अविरोधी होना चाहिए

धूमपान – लीनः च दोषशेषः स्याद् धूमैस्तं निर्हरेद् बुधः ।

लीन व शेष दोष निर्हरणार्थ धूमपान

स्वेदन वर्ज्य – पित्त दाह रक्तप्रवृत्ति क्षीणधातु रक्ष गर्भिणी मेरूग्ण भेदानुसार चिकित्सा –

- 1) बलवान् व कफाधिक रूग्ण – वमन व विरेचन
- 2) दुर्बल व वाताधिक रूग्ण – स्नेहयुक्त रसादीद्वारा तर्पण व शमन चिकित्सा

चिकित्सा सूत्र –

कासिने छद्दन्त ददयात् स्वरभंगे च बुधिमान् ।

वातश्लेष्कहरैयुक्तं तमके तु विरेचनम् ॥

कास व स्वरभंगयुक्त श्वास रूग्ण मे वमन

तमक श्वास मे वातश्लेष्महर विरेचन

### हिकका चिकित्सा सूत्र -

सकृत् उष्णं सकृत् शीतं व्यत्यासात् हिककिनां पयः ।

पाने नस्तः क्रियायां वा शर्करामधु संयुतम् ॥

उष्ण व शीत दुग्ध का व्यत्यास मे प्रयोग , शर्करा मधुयुक्त दुग्ध का नस्य प्रयोग

### हिकका वेगशामक चिकित्सा -

शीताम्बुसेकः सहसा त्रासो विस्मापनं भयम् ।

ऋधर्षप्रियोद्वेगा हिकका प्रच्यवना मताः ॥

### श्वास मे हितकर अन्नपान -

यत् किंचित् कफवातञ्च उष्णं वातानुलोमनं ।

भेषजं पानमन्न वा तथितं श्वासहिककिने ॥

1) कफवातञ्च

2) उष्ण

3) वातानुलोमन

भेषज व अन्नपान

### विशेष चिकित्सा सूत्र -

तातकृद्वा वा कफहरं कफकृद्वा अनिलापहम् ।

कार्यं नैकान्तिकं ताभ्यां प्रायः श्रेयो अनिलापहम् ॥

1) वातकृद वा कफहरं - कफहर चिकित्सा वातकृत होगी

2) कफकृद वा अनिलापहम् - अनलापह चिकित्सा कफकर होगी

इस प्रकार कोड भी एवं दोषहर चिकित्सा = एकान्तिक चिकित्सा होगी

इसमे - प्रायः श्रेयो अनिलापहम् = अनिलापह चिकित्सा श्रेयस्कर है ।

### विशेष चिकित्सा सूत्र -

सर्वेषां बृंहणे हि अल्पः शक्यश्च प्रायशो भवेत् ।

नात्यर्थं शमनेऽपायो भृशोऽशक्यश्च कर्शने ॥

1) बृंहण चिकित्सा - अल्प अपाय - व निराकरण शक्य

2) शमन चिकित्सा - न अत्यर्थ अपाय -

3) कर्षण - भृश अपाय - निराकरण अशक्य

इन तीन चिकित्साओं मे कौनसी चिकित्सा योग्य ?

शमन व बृंहण चिकित्सा योग्य

तस्मात् शुद्ध अशुद्धांश्च शमनैबृहणैरपि ।

हिककाश्वासार्दितान् जन्तुन् प्रायशः समुपाचरेत् ॥

योग - 1) शट्यादी चूर्ण

2) मुक्तादी चूर्ण - तिमिर काच निलिका पुष्प कण्ठु अभिष्ठंद नाशन

3) मनःशिलादी धृत

4) तेजोहादी चूर्ण

कास चिकित्सा –पूर्वरूप –

पूर्वरूपं भवेतेषां शूकपूर्ण गलास्यता ।  
कंठे कंडू भोज्यानामवरोधश्च जायते ॥

संप्राप्ति –

अथः प्रतोहतो वायुः उर्ध्वस्त्रोतः स्माश्रिताः ।  
उदानभावमापन्नः कंठे सक्त तथा उरसि ॥  
आभण्जन आक्षिपन् देहे हनुमन्ये तथा अक्षिणी ॥  
नेत्रे पृष्ठ उरः पार्श्वं निर्भुग्नःस्तम्भः ततः ।  
शुष्को वा सकफो वाऽपि कसनात् कास उच्यते ॥

सुश्रुत – प्राणो हि उदानानुगतः

साध्यासाध्यता –

- 1) बलवान व्यक्ती का क्षयज कास – साध्य
- 2) बलवान व्यक्ती का क्षतज कास – याप्य
- 3) क्षीण व्यक्ती का क्षतज कास – असाध्य
- 4) क्षयज व क्षतज कास नविन होनेपर व चतुष्पाद गुणयुक्त होनेपर – कदाचित साध्य
- 5) स्थविर व्यक्ती का जराकास – याप्य

चिकित्सा –1) वातज कास –

रुक्षस्य अनिलजं कासं आदौ स्नेहैरूपाचरेत् ।  
सर्पिभिः बस्तिभिः पेया यूषक्षीर रसादिभिः ॥

- 1) रुक्ष मुण से उत्पन्न वातज कास मे – सर्वप्रथम स्नेह चिकित्सा
- 2) बद्ध विड वात होनेपर – बस्ती
- 3) शुष्क उद्धवात मे – उर्ध्वभक्तिक स्नेह
- 4) सपित्त सकफ कास मे – स्नेह विरेचन (पैत्तिके सकफे कासे – स्नेहविरेचन)

घृत – कट्टकारी घृत, पिप्पल्यादी घृत, त्रूषणादी घृत, रास्ना घृत  
चित्रकादी लेह  
अगस्त्य हरीतकी लेह – दशमूल, स्वयंगुप्ता शंखपुष्टी शटी इ.  
हरीतकी – 100

धूमपान – शिरपिडा नासास्त्राव कास प्रतिश्याय होनेपर

मनःशिलादी धूम

2) पित्तज कास –

पैत्तिके सकफे कासे वमनं सर्पिषा हितम् ।

- 1) पैत्तिक सकफ कास मे – वमन व सर्पि हितकर
- 2) तनु कफ होनेपर – त्रिवृत द्वारा विरेचन
- 3) घन कफ होनेपर – तिक्त रसासह त्रिवृत

3) कफज कास –

बलिनं वमनैरगदौ शोधितं कफकासिनाम् ।  
यवान्नैः कटुरुक्षोष्णैः कफघैश्च उपाचरेत् ॥  
बलवान रूगण मे – शोधन – वमन  
कफज कास मे पित्तज कास समान चिकित्सा

4) क्षतज कास –

कासं आत्यायिकं मत्वा क्षतजं त्वरया जयेत् ।  
मधुरैः जीवनीयैश्च बलमांसविवर्धनैः ॥  
पिप्पल्यादी स्नेह  
क्षतकासाभिभूतानां वृत्तीः स्यात् पित्तकासिकी ।  
क्षतज कास मे पित्तज कास समान चिकित्सा करे ।

5) क्षयज कास –

- 1) संपूर्णरूपं क्षयजं दुर्बलस्य विवर्जयेत् ।  
सर्वरूप व्यक्त होनेपर क्षयज कास चिकित्सा – वर्ज्य
- 2) नवोत्थितः बलवतः प्रत्याख्यायाचरेत् क्रियाम् ॥  
नविन क्षयज कास व बलवान रूगण होनेपर – प्रत्याख्येय चिकित्सा
- 3) तस्मै बृहणं एव आदौ कुर्यादग्नेश्च दीपाम् ।  
बहुदोषाय सस्नहं मृदू ददयात् विरेचनम् ॥  
नविन क्षयज कास मे बृहण व अग्निदीपन चिकित्सा करे ।  
बहुदोष होनेपर – सस्नेह मृदू रेचन

योग – द्विपंचमूल्यादी धृत, गुडूच्यादी धृत, कासमर्दादी धृत, हरीतकी लेह

क्षयज कास चिकित्सा सूत्र –

दोपनं बृहणं चैव स्त्रोतसां च विशेषानम् ।  
व्यत्यासात् क्षयकासिभ्यो बल्यं सर्वं हितं भवेत् ॥

- 1) दीपन = अग्निदीपन होनेसे बृहण आहार पचनक्षमता
- 2) बृहण – बृहण से धातुबलवर्धन
- 3) स्त्रोतोविशेषान – स्त्रोतोरोध कम होने से धातुपोषण

कास बलवानता क्रम –

वातज – पित्तज – कफज -- क्षतज -- क्षयज                   उत्तरोत्तर बलवान

कास भैषज्यसंग्रह –

भोज्य पान सर्पि लेह पानक क्षीर सर्पिगुड धूम

अतिसार चिकित्सा –

1) वातज आमातिसार –

विज्जल (जलयुक), विप्लुत (शीघ्र प्रसरणशील), अवसादी  
रुक्ष द्रव सशूल, आमगांधी, सशब्द वा अशब्द

2) वातज पक्वातिसार –

विबद्ध, अल्पाल्प सशब्द सशूल, फेनपिच्छापरिकर्तिका, हृष्टरोमा विनिश्चसन, शुष्कमुख

कटि उरु त्रिक जानु पृष्ठ पार्श्व शूल, मुहुर्मुहु विग्रथीतं उपवेश्यते, भ्रष्टगुद

3) पित्तज अतिसार –

हारिद्र हरीत नील कृष्ण रक्तपित्तोपहित अतिदुर्गंध युक्त मलप्रवृत्ती, तृष्णा दाह स्वेदम मूर्च्छा इ.

4) कफज अतिसार –

स्निग्ध श्वेत पिच्छिल तंतुमत आम गुरु दुर्गंध इलेष्मोपहित अल्पाल्प सप्रवाहिक अतिसरण कृतेऽपि अकृतसंज्ञा

5) सान्धिपातज अतिसार –

हारिद्र हरीत नील मंजिष्ठ मांसधावनसन्निकाश रक्त कृष्ण श्वेत वराहमेदसदृश अनुबध्द वेदनं अवेदनं वा

6) आगंतुज अतिसार – 1) भयज 2) शोकज

इसका लक्षण वातज अतिसार सम जाने।

सुश्रुत भयज न मानकर आमज माना है।

शोकज अतिसार – काकनन्तिता प्रकाश मलप्रवृत्ती

आगंतुज अतिसार चिकित्सा –

वातहर चिकित्सा

हर्षण आश्वासन

अतिसार सामान्य चिकित्सा –

शोधन / प्रवर्तन

दोषः सन्निचिता यस्य लिटग्धाहारःमूर्च्छितः । अतिसाराय कलन्ते भूयस्तान् संप्रवर्तयेत् ॥

संग्रहण निषेध –

न तु संग्रहणं देयं पूर्वमातासारिणे । विबध्यमानाः प्राग्दोषा जनयन्ति आमयान् बहुन् ॥

अभ्या प्रयोग –

तया प्रवाहिते दोषे प्रशास्यति उत्तरामयः ।

जायते देहलघुता जठरानिश्च वर्धते ॥

साम दोष प्रवाहण (निर्हरण) होने से उदरामय (अतिसार) शमन व देहलघुता प्राप्ति

वाग्भट – प्राणदा प्राणदा दोषे विबध्दे संप्रवर्तनी ।

अतिसार मे प्रमथ्या प्रयोग –

प्रमथ्या मध्यदोषाणां ददयात् दीपनपाचनम् । लंघनं च अल्पदोषाणां प्रशस्तम् अतिसारीणाम् ॥

मध्य दोषमे – प्रमथ्या पान (प्रमथ्या – दीपन पाचन कृत्वा)

पुरीषक्षय मे मांसप्रयोग –

मेष अन्तराधी (मध्य शरीर) रस

मेष रक्त दाढिम अम्ल धान्यक सिद्ध

गुदभ्रंश चिकित्सा –

गुदनिःसरणे शूले पानमम्लस्य सर्पिषः ।

प्रशस्यते निरणामथवा अनुवासनम् ॥

गुदनिस्सरण व शूल – अम्ल सर्पि पान

निरामावस्था – अनुवासन

घृत – चांगेरी घृत, चव्यादी घृत  
 दशमूल सिध्द अनुवासन  
 स्तब्धभ्रष्ट गुदे पूर्वं स्नेह स्वेदौ प्रयोजयेत् ॥

### पित्तज अतिसार चिकित्सा –

लंघन पाचन  
 अजाक्षीर प्रयोग – दीप्ताम्नी होनेपर प्रयोग करे

### गोदुग्ध प्रयोग –

बहुदोषस्य दीप्ताम्ने: सप्राणस्य न तिष्ठति ।  
 पैत्तिको यत् अतिसारः पयसां तं विरेचयेत् ॥  
 बहुदोष अवस्था में दीप्ताम्नी होनेपर शमन न होनेपर गोक्षीर से विरेचन करे ।

पिच्छा बस्ती – पुट्पाक विधी से निर्मात शाल्मली वृंत का पिच्छा बस्ती

### रक्तातिसार –

हेतु – पित्तातिसारी व्यक्ती द्वारा पित्तकर अन्न सेवन

लक्षण – तृष्णा शूल विदाह दारूण गुदपाक

चिकित्सा – छगपथ मधु शर्करेसह पान

पानार्थ

भोजनार्थ

गुदप्रक्षालनार्थ



### पिच्छा बस्ती प्रयोग –

- अ) अल्पाल्पं बहुशो रक्तं सशूलं उपवेश्यते ।  
 यदा वायुः विबध्दश्च कृच्छ्रं चरति न वा ॥
- 1) रक्तातिसार में शूलसह अल्पाल्प मलप्रवृत्ती  
 2) विबध्द वात कृच्छ्रासे चरण वा निष्ठन
- त) वातश्लेष्म विबंधे वा कफे वाऽतिस्त्रवत्यपि ।  
 शूले प्रवाहिकायां वा पिच्छाबस्तीं प्रयोजयेत् ॥
- 1) कफज अतिसार में वातश्लेष्म विबंध हो  
 2) कफ का मलसह अतिसरण  
 3) शूलयुक्त प्रवाहिका

### अतिसार में बस्ती दान अवस्था –

बलक्षय के कारण स्वस्थाने में वात अधिक प्रकुपित होने से पित्त के साथ अधिक बलवान होता हि उस अवस्था में बस्ती दान

### कफज अतिसार चिकित्सा –

प्रथमतः लंघन पाचन

रसांजनादी चूर्ण, कपितथादी चूर्ण

सशूल प्रवाहिका में बाल बिल्व पिप्पली विश्वभेषज गुड तैलासह लेहन

### सान्निपातज अतिसार चिकित्सा –

वातस्यानुजयेत् पित्तं पित्तस्यानुजयेत् कफं ।

त्रयाणां वा जयेत् पूर्वं यो भवेत् बलवत्तमः ॥  
 वात पश्चात् पित्त व पित्त पश्चात् कफ चिकित्सा  
 वा बलवान् दोष की प्रथम चिकित्सा  
 सुश्रूत – पित्त की प्रथम चिकित्सा

### छर्दि चिकित्सा –

प्रकार – पंच छर्दयः वातज पित्तज कफज सान्निपातज द्विष्टार्थज

पूर्वरूप –

- 1) हृत् उत्क्लेश
- 2) कफप्रसेक
- 3) द्वेषो अशाने

वातज छर्दि लक्षण –

उद्धार शब्द प्रबल, सफेन विच्छिन्न, कृष्ण तनु कषाय कृछ्रुतासे अल्प प्रवर्तन  
 पित्तज छर्दि लक्षण –

पीत हरीत सतिक धूम्र सदाह वमन

कफज छर्दि लक्षण –

स्निग्ध घन स्वादु विशुद्ध कफयुक्त वमन

द्विष्टार्थज छर्दि लक्षण –

हेतु – द्विष्ट प्रतिप (मनोविपरीत) अशुची पूती अमेध्य बीभत्स गंध = अशान वा दर्शन  
 उपर्गेक्त हेतु से मनसंतप्तता व छर्दि उत्पत्ति

असाध्य छर्दि लक्षण –

क्षीण व्यक्ति मे प्रवृद्ध हुड़

सोपदवयुक्त

शोणितपूययुक्त

सचन्दिकयुक्त

**TIERRA**

चिकित्सा सूत्र –

आमाशयोत्क्लेशभवा हि सर्वशर्दो मता लंघनमेव तस्मात् ।

प्राककारयेन्मारुतजां विमुच्य संशोधनं वा कफपित्तहारी ॥

सर्व छर्दि आमाशय उत्क्लेश भव होने से सर्वप्रथम – लंघन वा कफपित्तहर संशोधन

अपवाद – वातज छर्दि (वातज छर्दि मे लंघन निषेध)

वातज छर्दि मे – हुदय रेचन योग

पित्तज छर्दि चिकित्सा –

दोष अनुलोमनार्थ द्राक्षा विदारी इक्खुरसासह त्रिवृत सेवन

कफाशयस्थ (आमाशयस्थ) अतिवृद्ध पित्त होनेपर स्वादु द्रव्यसह उर्ध्व हरण (वमन)

कफज छर्दि चिकित्सा –

पिप्पली सर्षप मिंबतोय द्वारा वमन

द्विष्टार्थज छर्दि चिकित्सा –

मनोनुकुल वचन, हर्षण, आश्वासन

### जीर्ण / दीर्घकालीन छर्दि -

धातुक्षय से वातप्रकोप होता है इसलिए = उपस्तंभन व बृंहण चिकित्सा  
क्षतक्षीणचिकित्सोक्त सर्पिंगुड प्रयोग

### विसर्प चिकित्सा -

उपमा – आशीविषोपम व दारूण

प्रकार – सप्त विसर्प

वातज पित्तज कफज सान्निपातज ग्रंथी (वातकफज) आग्नेय (वातपित्तज) कर्दम (पित्तकफज)

विसर्प दूष्य – रक्त लसिका त्वक मांस दूष्यं दोषाः त्रयो मलाः ।

विसर्पाणां समुत्पत्तौ विज्ञेया सप्त धातवाः ॥

विसर्प उत्पत्ती में 7 कारण – तीन दोष + रक्त लसिका त्वक मांस

### स्थानानुसार भेद -

1) बहिश्रित

2) अंतश्रित

3) उभयश्रित



साध्यासाध्यता – 1) बहिश्रित – साध्य

2) अंतश्रित – कष्टसाध्य

3) उभयश्रित – असाध्य

### प्रकारानुरूप लक्षण –

1) आग्नेय विसर्प – (वातपित्त)

विसर्पस्थाने शान्तागारप्रकाश अतिरक्त

अग्निदग्ध प्रकाराश्च स्फोटैः उपचीयते

शीघ्रत्वात् आशु एव मर्मानुसारी भवति

2) कर्दम विसर्प – (कफपित्तज)

प्रायः च आमाशयो विसर्पति, अलसक एकदेशग्राही च

विसर्पस्थान रक्त पीत पांडु पीडकावकीर्ण मेचकाभ मलिन

सिरास्नायु सन्दर्शी, कुणपगंधी

3) ग्रंथी विसर्प – (वातकफज)

ऋगेण ग्रन्थिमाला कृच्छसाध्यपाका संजनयन्ति

4) सान्निपातज विसर्प

सर्व आयतन समुत्थं सर्वलिङ्ग व्यापिना

सर्वधात्वानुसारिणम् आशुकारिणं

महात्ययिकत्व

उपद्रव – उपद्रवस्तु रोगोत्तरकालजो रोगाश्रयो रोग एव स्थुल अणुर्वा रोगात् पश्चात् जायत् इति

### चिकित्सा सूत्र -

लंघन उल्लेखनं शस्ते तिक्कानां च सेवनम् ।

1) कफस्थागत विसर्प – उपरोक्त चिकित्सा + रूक्ष शीत प्रलेप

2) पित्तस्थानगत विसर्प – उपरोक्त चिकित्सा + शोणितावसेचन व विरेचन

3) वातस्थानगत साम दोष – मारुताशये सम्भूते अपि आदितः स्याद् विरुक्षणम् ।  
रक्तपित्तान्वयेऽपि आदौ स्नेहनं न हितं मतम् ॥

- 1) वातोल्बण विसर्प व लघुदोषयुक्त पित्तज विसर्प – तिक्त धृत पान
- 2) महादोषयुक्त पित्तज विसर्प – विरेचन
- 3) बहुदोषयुक्त विसर्प – धृतप्रयोग निषेध  
विरेचक द्रव्य सिथ्द धृतप्रयोग  
शाखागत विसर्प – शाखागते दुष्टे तु रूधिरे रक्तम् एव आदितो हरेत् ।

#### दोषानुसार रक्तमोक्षण –

- 1) वातान्वित – विषाण
- 2) पित्तान्वित – जलौका
- 3) कफान्वित – अलाबु

लेप / प्रदेह – उदुम्बरादी प्रदेह, न्यग्रोधपादादी लेप

#### प्रलेप –

मात्रा – त्रिभाग अंगुष्ठ  
स्वरूप – कल्क पेषीत  
न अति रूक्ष, न अति स्तिर्ग, न पिण्ड, न इत

#### रक्तपित्तप्रधान ग्रंथी विसर्प

रूक्षण, लंघन, सेक प्रदेह, दन्त्यादी लेप  
उपरोक्त चिकित्सा द्वारा बलवान् स्थिर पाषाण कठीन ग्रंथीवत् विसर्प उपशमन न होनेपर  
क्षार / शर / सुर्वर्ण शलाकाद्वारा दहन  
योग – कम्पिल्लकादी तेल

#### विसर्प में रक्तमोक्षण महत्व –

यानीहोक्तानि कर्माणि विसर्पाणां निवृत्तये ।  
एकतस्तानि सर्वाणि रक्तमोक्षणं एकतः ॥

#### विसर्प में दोष वैशिष्ट्य –

विसर्पे न हि असंसृष्टो रक्तपित्तेन जायते ।

#### तृष्णा चिकित्सा –

##### संप्राप्ती –

पित्तानिलौ प्रवृद्धौ सोम्यान् धातुश्च शोषयतः ।  
रसवाहिनीश्च नालीर्जिव्हामूलश्च गल तालुक क्लोन्मः ॥  
संशोष्य नृणां देहे कुरुत तृष्णां महाबलावेतौ ।

#### तृष्णा – उपसर्गज

घोर व्याधीकृशानां प्रभवति उपसर्गभूता सा ।

#### पूर्वरूप – मुखशोष

सर्वदा अम्बुकामित्व  
सर्वासां लिंगानां लाघवमपायः

रूप – मुखशोष, स्वरभेद, भ्रम, संताप, प्रलाप, स्तंभ, तालु ओष्ठ जिव्हा कंठ कर्कशता

बाधीर्य मर्मदूयन, जिह्वानिर्गम

- 1) वातज तृष्णा – निद्रानाश, शिरसो भ्रम, शुष्क विरसमुखता
  - 2) पित्तज तृष्णा – तिक्कास्यत्व, शिरसो दाह, शीताभिनन्दता, मूर्च्छा, पीताक्षिमूत्रवर्चत्व
  - 3) आमज तृष्णा – अरुची आध्मान कफप्रसेक
- तृष्णा हि आमप्रभवा साऽपि आग्नेया आमपित्तजनितत्वात् ।
- 4) रसक्षयज तृष्णा – दीनास्वर, प्रताम्यन्, संशुष्कहुदय गलतालु
  - 5) उपसर्गज तृष्णा – ज्वर मेह क्षय शोष आदी व्याधी के उपद्रव / उपसर्ग से उत्पन्न वैशिष्ट्य – शोषिकी व कष्टकर

#### तृष्णा मे सामान्यतः वातपित्ताधिक्य –

न अग्निं विना तर्षः पवनाद् वा तौ हि शोषणे हेतु ।

अन्नजा तृष्णा – गुरु अन्न पय स्नेह इनका विदाह काल मे संमूर्च्छन होने से ।

दोषाधिक्य – अनल + अनल

मदयज तृष्णा – मदय के उष्ण तीक्ष्ण गुण से पित्त व वात प्रकोप = आप धातु शोषण – मदयज तृष्णा

#### चिकित्सा –

एन्ड्रु जल मधासह पान

मृदभृष्ट जल

मदयज तृष्णा चिकित्सा – मदय मे अर्धा भाग जल + अम्ल लवण + गन्धादय

शिशिर स्नानज तृष्णा – मदयाम्बु वा गुडाम्बु

अन्नज / भक्तज तृष्णा – यवाणु पान

आमज तृष्णा – व्योष वचा भल्लातक

शीत जल सेवन योग्य

चरक	सुश्रुत सू 45
तृष्णा दाह मूर्च्छा भ्रम क्लम मदात्यय अस्त्रदोष विषपीत	मूर्च्छा उष्णकाल मदात्यय दाह रक्तविकार भ्रम क्लम विष तमकश्वास

TIERRA

#### उष्ण जलपान योग्य

चरक	सुश्रुत
हिकका श्वास पीनस नवज्वर पार्श्वरोग गलरोग सदयशुद्धी घृतपीत कफवातकृत स्त्यान दोष	पार्श्वशूल स्तिमित कोष्ठ प्रतिश्याय वातरोग आध्मान गलग्रह स्नेहपीत सदयशुद्धी नवज्वर हिकका

#### श्रुतशीत जलयोग्य (सुश्रुत) –

पानात्यय सान्निपातज रोग दाह अतिसार रक्तपित्त मूर्च्छा विषजन्य रोग, तृष्णा, छर्दि वमन चरकानुसार – सान्निपातज व्याधी श्रुतशीत जल पान योग्य

अल्प जलपान योग्य (चरक) – पांडु प्रमेह अतिसार उदर पीनस मंदाग्नि गुल्म प्लीहरोग

जलपान निषेध (सुश्रुत) – अर्श अतिसार ग्रहणी प्लीह मंदाग्नि गुल्म उदर शोथ पांडु पीनस प्रमेह

#### विष चिकित्सा –

वातस्थानगत विष चिकित्सा – स्वेदन व नतकुष्ठकल्कपान

पित्तस्थानगत विष चिकित्सा – घृत मधु पय अम्बु पान अवगाह स्वेद  
 कफस्थानगत विष चिकित्सा – स्वेदन सिरावेध क्षारागद  
गन्धर्वहस्तीनामागदु – गोपित व अश्वपित भावना  
क्षारागदु – तरुण पलाश क्षार से निर्मित  
 पंचशिरीष अगद – शिरीष पत्र पुष्प फल मूल त्वक = सर्वविषनाशक      अनुपान – गोघृत

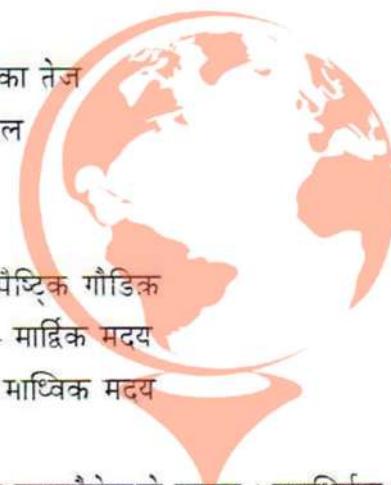
### दोषानुसार प्राणी विभाजन –

- 1) वातप्राय – उच्चिटिंग, वृश्चिक
- 2) वातपित्तप्राय – कीट
- 3) कफोल्बण – कणभ मूषक
- शंकाविष चिकित्सा – आश्वासन

### मदात्यय चिकित्सा –

#### मदय उपमा –

- 1) अश्विनीकुमारो का तेज
- 2) सरस्वती का बल
- 3) इंद्र का वीर्य



#### प्रकृतीनुसार मदय –

- 1) यात प्रकृती – पैच्छिक गौडिक
- 2) पित्त प्रकृती – मार्दिक मदय
- 3) कफ प्रकृती – माध्विक मदय

#### मदय प्रभाव –

मदयं हृदयामाविश्य स्वगुणैरोजसो गुणान् । दशभिर्दश संक्षेभ्य चेतो नयति विक्रियाम् ॥

मदय गुण – लघु उष्ण तीक्ष्ण अम्ल सूक्ष्म व्यवायी आशु रुक्ष विकासी विशद

#### मद अवस्था - 3

- 1) प्रथम मद – प्रहर्षण प्रितिकर पान अन्न गुणदर्शक, बाद्यगीतप्रहासानां कथानां च प्रवर्तक  
 न च बुधी स्मृतीहरो, विषयेषु न च अक्षमः, सुखनिद्राप्रबोध
- 2) द्वितीय मद / मध्यम मद – मुहुस्मृती मुहुर्मोह , व्यक्ता सज्जती वाक् मुहु  
 उक्त अयुक्त प्रलाप, प्रचलायन,  
 स्थान पान अन्न साकथ्य योजना विपर्यया

#### मध्यम व उत्तम मद की मध्य अवस्था

न किंचित् अशुभं कर्म कुर्युः नराः ।  
 ऐसा कोड़ भी अशुभ कर्म नहीं जो व्यक्ती द्वारा किया नहीं जाता

#### 3) तृतीय मद / उत्तम मद –

भग्नदावर्वीव निषिक्रियः ।  
 मदमोह आवृतमना जीवन्नपि मृतैः समा  
 रमनीयान् स विषयान्न  
 वैती न सुहृत्जनं

यदर्थं पीयते मदयं रतिं तां न विन्दति (जिस कामना के लिए मदय पान करता है वह लाभ नहीं

कार्य अकार्य सुखं दुःखं लोके यच्च हिताहितम्  
मदय – अयुक्तियुक्तं रोगाय युक्तियुक्तं यथा अमृतम् ।  
विष – विषं प्राणहरं तच्च युक्तियुक्तं रसायनम् ।  
मदय गुणधर्म – स्वापनं नष्टनिद्रानां बोधनं च अतिनिद्रानां  
 मूकानां वाग्विबोधनम्  
 विवृद्धानां विवृद्धनुत्

मदय – मद्यविकार नाशक  
 मद्योत्थानां च रोगाणां मदयमेव प्रबाधकम् ।

### षट्ट्रिक / अष्ट्ट्रिक –

- 1) अन्नत्रिक – वातकर पित्तकर कफकर
- 2) पानत्रिक
- 3) वयोत्रिक – बाल्यावस्था मध्यमावस्था वृद्धावस्था
- 4) व्याधीत्रिक – मृदू मध्य दारूण
- 5) बलत्रिक – उत्तम मध्यम हीन
- 6) कालत्रिक – शीत उष्ण वर्षा

### उपरोक्त षट्ट्रिक

त्रिदोष – त्रिविधि सत्त्व (सत्त्व रज तम) इनके अनुसार मदय सेवन करना चाहिए

मदय व्यक्ती दर्शक – प्रधान मध्य अवर

मदय प्रकृती दर्शक – उत्तम मध्यम हीन = सत्तरूप प्रकृती दर्शक :

मदय का प्रभाव किसपर कम होता है ?

- 1) स्थिर सत्त्व शरीर व्यक्ती
- 2) बहुमदयोचीत

### मदात्यय चिकित्सा सूत्र –

सर्व मदात्ययं विद्यात् त्रिदोष अधिकं तु यम् ।  
 दोषं मदात्यये पश्येत् तस्मादौ प्रतिकारयेत् ॥  
 कफस्थानानुपूर्व्या च क्रिया कार्या मदात्यये ।  
 पित्तमारुतपर्यन्तः प्रायेण हि मदात्ययः ॥

### मदात्यय में मदय पान –

मिथ्याहीन अतिपीतेन यो व्याधीः उपजायते ।  
 समपीतेन तेनैव स मदयेन उपशाम्यति ॥  
 मिथ्या हीन व अतिपान जनीत मदात्यय सम पीत मदय से उपशमन

अम्ल + क्षार = माधुर्य

क्षारो हि याति माधुर्यं शीघ्रं अम्लोपसंहितः ।

मदय में प्रधान रस – अम्ल (श्रेष्ठं अम्लेषु मदयं)

मदय में एकुण रस – 5 (लवणवर्जीत)

अष्टांग लवण चूर्ण – कफज मदात्यय में वर्णन

उत्तम चिकित्सक –

यस्तु दोषविकल्पज्ञो यश्च औषधविकल्पवित् ।  
स साध्यान् साध्येत् व्याधीन् साध्यासाध्य विभागवित् ॥

### दुग्ध प्रयोग –

लंघन पाचन शोधन शमन आदी चिकित्सा से कफ क्षीणत्व, दौर्बल्य लाघव व मदय की विदग्धता से बात पित्ताधिक्य – इस अवस्था मे पय पान प्रशस्त

### ध्वंसक व विक्षय –

हेतु – मदय पान त्याग पश्चात पुनः अधिक मात्रा मे मदयपान आरंभ करना  
साध्यासाध्यत्व – दुश्क्रिक्तिस्य  
ध्वंसक लक्षण – इलेष्मप्रसेक, कंठ आस्यशोष, शब्दासहिष्णुता, तंद्रानिद्रातियोग  
विक्षय लक्षण – हुतकंठरोग, संमोह, छर्दि, अंगरूजा, ज्वर तृष्णा शिरंशूल  
उभय व्याधी चिकित्सा – बातज मदात्ययोक्त चिकित्सा

### द्विवर्णीय चिकित्सा –

व्रण परीक्षा – दर्शन प्रश्न संस्पर्शः परीक्षा त्रिविधा समूता ।  
व्रण स्थान – 8  
व्रण दोष – 24  
व्रण पूर्वरूप शोफ मे – रक्तमोक्षण  
पूर्वरूपं भिषग्बुद्ध्वा व्रणानां शोफमादितः ।  
रक्तावसेचनं कुर्याद् जातव्रणशान्तये ॥

चरकानुसार एषणी – 2

1) मृदू      2) कठिन

### शुद्ध व्रण –

- 1) न अति रक्त      2) न अति पांडु      3) न अति श्याव      4) न अति रुक  
5) न उत्संगी

### व्रण चिकित्सा –

- 1) काम्पिल्लकादी तैल      2) प्रपौण्डरिकादी तैल

### अग्निकर्म निषेध –

बाल दुर्बल वृद्ध गर्भिणी रक्तपित तृष्णा ज्वर अबल विषादयुक्त  
न अग्निकर्म उपदेष्टव्यं स्नायुमर्मव्रणेषु च ।  
सविषेषु च शल्येषु नेत्रकुष्ठव्रणेषु च ॥

### त्रिमर्माय चिकित्सा

मर्मसंख्या – सप्तोत्तर मर्मशतं (107 मर्म)

### उदावर्त चिकित्सा –

शीतज्वरनाशक तैल अभ्यंग, स्वेदन निरूह वर्ती इ.

वर्ती – श्यामादी वर्ती, पिण्याकादी वर्ती

### द्विरूत्तर हिंगादी चूर्ण –

हिंगु – 1 भाग

वचा – 2 भाग

अग्नि (चित्रक – 4 भाग

कुष्ठ – 8 भाग

सज्जिक्षार – 16 भाग

विडंग – 32 भाग

उत्तरोत्तर दुगुना प्रमाण होने से यह नाम

आनाह –

हेतु – आनाहं आमप्रभवं

चिकित्सा – जयेत् तु प्रच्छर्दनं लंघन पाचनैश्च

एरण्ड तैल प्रयोग –

गुल्म उदर ब्रह्म अर्श प्लीह उदावर्त योनीशुक्रगद, मेदकफसंसृष्ट अवगाढ वातरक्त, गृध्रसी, पक्षवध

अनुपान – पय मांसरस, त्रिफला रस, यूष मूत्र (गोमूत्र) मदय,

कार्यकारीत्व –

वातनुत् स्वभावात्

संयोगवशाद्

} मेदरककफपित्त मिश्रोत वातरोग नाशन

मात्रा – 5 पल

अश्मरी –

संप्राप्ति –

विशोषयेत् बस्तीगतं सशुक्रं मूत्रं सपितं पवनं कफं वा ।

यदा तदाश्मरीः उपजायते तु क्रमेण पित्तेषु इव रोचना गोः ॥

वायुद्वाग शुक्रासह मूत्र शोषण कृष्णकफासह मूत्र शोषण

उपमा – पित्तेषु इव रोचना गोः

वातज अश्मरी – कदम्बपुष्पाकृती, त्रिपुटी

पित्तज अश्मरी – अश्मतुल्या, रुलक्षणा

कफज अश्मरी – मृद्वी

शर्करा – वायुद्वारा अश्मरी भेदन होकर शर्करा उत्पत्ती

सान्निपातज मूत्रकृष्ण चिकित्सा – सर्व त्रिटोषप्रभवे तु वायोः स्थानानुपूर्वा प्रसमीक्ष्य कार्यम् ।

योग –

पाषाणभेदादी चूर्ण, कार्पासमूलादी योग, श्वदंष्ट्रादी धृत

अश्मरी मे अपथ्य –

व्यायाम वेगधारण वातसेवन अर्कसेवन व्यवाय शुष्करूक्षपिष्टान्न सेवन, खर्जुर शालूक

कपित्थ जम्बु बीससेवन कबाय रस

हुद्रोग –

सामान्य लक्षण – वैवर्ण्य, मूर्च्छा ज्वर हिकका श्वास कास तृष्णा प्रमोह छर्दि कफोत्क्लेश

सुश्रुतानुसार वातज हुद्रोग मे – वमन

कफज हुद्रोग चिकित्सा –

शिलाजतु सेवन, अगस्त्य हरीतकी लेह, ब्राह्मी रसायन, आमलकी रसायन

सान्निपातज हुद्रोग – मे सर्वप्रथम लंघन

2) तस्य संशमनं नित्यं क्षपणं शोषणं तथा ।  
 रूक्षण – यव इयामाक व कोद्रव द्वारा रूक्षण  
 क्षार अरिष्ट प्रयोग, मधूदक

योग – शाङ्गेष्टादी चूर्ण  
 पीलूपर्ण्यादी तैल, अष्टकट्वर तैल

#### बाह्य चिकित्सा –

वल्मीक मृत्तिकादी उत्सादन  
 अश्वगंधादी उत्सादन  
 सर्षप का गोमूत्रसह लेपन

#### कफक्षयार्थ उपाय –

- 1) स्थलानी आक्रामयेत् कल्पं शर्करा: सिकतास्थथा ।  
 कल्प शर्करा व सिकतायुक स्थाने आक्रमण
- 2) प्रतारयेत् प्रतिस्त्रोतो नदीं शीतजलां शिवाम् ।  
 नदी के स्त्रोत के विरुद्ध / प्रवाह के विरुद्ध से तैरना
- 3) सरश्व विमलं शीतं स्तिरतोयं पुनः पुनः ।  
 सर विमल शीत स्थिर जल मे पुनः पुनः तैरना

#### चिकित्सा सूत्र –

इलेष्मणः क्षपणं यत् स्यात् न च मारुतं आवहेत् ।  
 कुफ का क्षपण करते हुए मारुत का वर्धन न हो इस प्रकार चिकित्सा करे ।

#### वातव्याधी चिकित्सा –

वायु महत्व – वायुः आयुर्बलं वायुः आयुर्धाता शरीरिणाम् ।  
 वायुर्विश्वमिदं सर्वं प्रभुवायुश्च कीर्तिः ॥

समान वायु स्थान – स्वेद दोषाम्बु वाहिनी, अन्तर्गनेश्च पार्श्वस्थ (शारंगधर – नाभीसमीप)

#### वातव्याधी संप्राप्ति –

देहे स्त्रोतांसि रिकानि पूरयित्वा अनिलो बली ।  
 करोति विविधान् व्याधीन् सर्वांग एकांग संश्रितात् ॥

पूर्वरूप – अव्यक्तं लक्षणं तेषां पूर्वरूपमिति स्मृतम् ।

रूप – आत्मरूपं तु यद् व्यक्तम् अपायो लघुता पुनः ।

#### अर्दित –

संप्राप्ति – अतवृद्ध वात शरीर अर्ध स्थाने गमन – असृक बाहु पाद जानु शोष

- लक्षण – 1) संकोचयति अर्धं मुखम्  
 2) जिन्हं करोति मुखम् (जिन्ह – वक्रता)  
 3) वक्रीकरोति नासाभृ ललात अक्षि हनुस्तथा  
 4) ततो वक्रं व्रज्यति आस्य भोजनं (भोजन वक्र गतीसे करना)  
 5) वक्र नासिका व स्तब्ध नेत्र  
 6) दीना जिन्हा समुक्षिप्ता (कथन रूक रूक कर होना)  
 7) कला सज्जति च आस्य वाक् (वाक अस्पष्टता)

- 8) दन्ताश्वलति, बाध्यते श्रवणौ भिदयते स्वर
- 9) पाद हस्त अक्षि उरु शंख श्रवण गंड रुक
- 10) अर्धे तस्मिन् मुखार्धे वा केवले स्याद् अर्दितम् (केवल मुख वा मुखार्ध भाग विकृती)

अर्दितविषयक मतमतांतर –

- 1) चरक – मुख अर्ध भाग विकृती + शरीर अर्ध भाग विकृती
- 2) माधव – केवल मुख अर्ध भाग विकृती
- 3) चक्रपाणी – चरक मत ग्राह्य करे तो अर्दित व पक्षाघात मे क्या फर्क ?  
अर्दित मे वेग आते हैं परंतु पक्षाघात मे नहीं

मन्यास्तंभ / अंतरायाम –

मन्या संश्रित नाडी स्थाने वात प्रवेशन

मन्यास्तंभ तदा कुर्यात् अन्तरायाम संज्ञितम् ।

लक्षण –

अन्तः आयम्यते ग्रीवा  
मन्या च स्तभते भृशम्  
दन्तानाम् दशनं  
लाला (लालास्त्राव)  
पृष्ठायाम शिरोग्रह जृम्भा , वदनसंग



बहिरायाम / धनुस्तंभ –

प्रकुपित वात पृष्ठ व मन्या स्थानज सिंहा आश्रीत

वायुः कुर्यात् धनुस्तंभ बहिरायाम् संज्ञकम्

लक्षण – धनुष्य समान शिर पश्चात् स्थाने वक्रता

उरः उत्क्षिप्यते ।

मन्यास्तंभ, ग्रीवा अवमृदयते

दन्तानां दशनं, जृम्भा, लालास्त्राव; वाकग्रह,

जातवेगे निहन्त्येष वैकल्यं वा प्रयच्छति (वेग समये रूग्ण नाश वेग न होनेपर वैकल्य

**TIERRA**

हनुस्तंभ –

हनुमूलस्थित वातद्वारा हनुबंध शिथिल होकर हनुस्त्रंस

लक्षण – विवृतास्यत्व स्तब्ध व अवेदनायुक्त

हनुग्रह, हनुस्तब्धता, संवृतवक्रता

कृष्णचर्वनभाषणम्

आक्षेपक –

मुहुराक्षिपति क्रुध्दो गात्राव्याक्षेपकोऽनिलः ।

पाणिपादं च संशोष्य सिरः स्नायुकण्डरा ॥

दण्डक –

पाणिपाद शिरः पृष्ठ श्रोणीः स्तभ्नाति मारुतः ।

दण्डवत् स्तब्ध गात्रस्य दण्डकः सोऽनुक्रमः ॥

अनुपक्रम – असाध्य

पक्षवध – हत्यैकं मारूतः पक्षं दक्षिणं वाममेव वा ।  
 कुर्यात् चेष्टा निवृत्ति हि रूजं वाक्स्तंभं एव च ॥  
 मारूतद्वारा दक्षिण वा वाम पक्ष हनन  
 1) चेष्टानिवृत्ती  
 2) रूजा  
 3) वाक्स्तंभ

एकांगरोग – कुपित वात द्वारा शरीर एक अंगज सिरा स्नायु विशोषण

गृध्रसी –

स्फिकपूर्वा कटि पृष्ठ उरु जानु जंघापदं ऋमात् ।

गृध्रसी स्तंभ रूक तोद गृह्णाति स्पन्दते मुहुः ॥

वेदना ऋम – स्फिक – कटी – पृष्ठ – उरु – जानु – जंघा – पद

लक्षण – स्तंभ रूक तोद ग्रह मुहुः स्पन्दन

प्रकार – 2

- 1) वातज
- 2) वातकफज – तन्दा गौरव अगचक

खल्ली – खल्ली तु पाद जंघा उरु कग्मूल अवमोटन

वातव्याधी संप्राप्ति भेद – 2

- 1) क्षयजन्य – वायोः धातुक्षयात् कोपो
- 2) अवरोधजन्य – मार्गस्य आवरणे च

वातव्याधी चिकित्सा –

केवलं निरूपस्तंभमादौ स्नेहैरूपाचरेत् ।

वायुः सर्पिवसातैल मज्जा पानैः नरं ततः ॥

मृदू स्नेहयुक्त रेचन

दुर्बल अविरेच्य रूगण मे – निरूह

गर्भाशयगत वात – सिता + मधु + काशमरी सिद्ध पय

हुटयगत वात – अशुमती सिद्ध पय

नाभीगत वात – बिल्व शलाटु सिद्ध मत्स्य

वायु द्वारे वेष्टमान गात्र – उपनाह

वायु द्वारे संकुचीत गात्र – माष सैंधव तैल

बाहुशीर्षगत वात – नस्य, औत्तरभक्तिक स्नेहपान

अधोनाभीगत वात – अवपिडक सर्पि, बस्तीकर्म

अर्दित चिकित्सा –

अर्दिते नावनं मूर्धिं तैलं तर्पणमेव च ।

नाडीस्वेदोपनाहाश्च आनूप पिशित हितः ॥

पक्षाघात चिकित्सा – स्वेदनं स्नेहसंयुक्तं पक्षाघाते विरेचनम् ।

गृध्रसी – अन्तरा कंडरा गुल्फ सिरा बस्ती अग्निकर्म च ।

गुल्फ स्थानज कंडरास्थाने – सिरावेध

बस्ती कर्म

अग्निकर्म

खल्ली – तैल धृत पायस कृशग्रंथा युक्त उपनाह

वातव्याधी में बृंहण प्रशस्त –

बृंहणं यच्च तत् सर्वं प्रशस्तं वातरोगिणाम् ।

वातव्याधी में तैल – मूलक तैल, हस्तपंचमूल तैल, श्वदंष्ट्रा तैल, बलातैल, अमृतादय तैल, रासना तैल, वृष मूलादी तैल, मूलकादी तैल.

वातरोग में तैल श्रेष्ठता –

नास्ति तैलात् परं किञ्चित् औषधं मारुतापहम् ।

व्यवायी उष्ण गुरु स्नेहात् संस्कारात् बलवत्तरम् ॥

वातव्याधी में संसृष्ट कफपित्त अवस्था होनेपर चिकित्सा –

संसृष्टे कपपित्ताभ्यां पित्तम् आदौ विनिर्जयेत् ।

आमाशयगत कफ – वमन

पक्वाशयगत कफ – विरेचन

सर्व शरीरगत पित्त – विरेचन

आवृत्त वात चिकित्सा –

स्थानानि अवेक्ष्य वातानां वृद्धिं हानिं च कर्मणाम् ।

द्वादश आवरणानि अन्यान्य अभिलक्ष्य भिषणितम् ॥

कुर्याद् अभ्यंजनं स्नेह पान बस्त्यादी सर्वशः ।

ऋग्मुष्णां अनुष्णां वा व्यत्यासात् अवचारयेत् ॥

हिकका चिकित्सा समानता – भूकृत् उष्णम् सकृत् शीतं व्यत्यासात् हिककिनं पयः ।

वातप्रकारानुसार चिकित्सा सूत्र –

उदाने योजयेत् उष्ठं

अपानं च अनुलोमयेत्

**TIERRA**

समानं च शमयेत्

त्रिधा व्यानं च योजयेत्

प्राणो रक्ष्यः चतुर्भ्योऽपि स्थाने हस्त्य स्थितिर्घुवा ।

वातव्याधी में प्राण व उदान महत्व –

विशेषात् जीवितं प्राण उदाने संश्रितं बलम् ।

स्यात् तयोः पीडनाहारादहानीः आयुष्य च बलः च ॥

प्राण आश्रीत – जीवित

उदान आश्रीत – बल

प्राण पीडन से – आयुष्य हानी

उदान पीडन से – बल हानी

आवृत्त वात उपेक्षा करने से / अपरिज्ञात रहने से = दुरुपक्रम (कष्टसाध्य)

आवृत्त वात उपेक्षा से उपद्रव –

हुद्रोग, प्लीहा विद्रधी, गुल्म, अतिसार

आवृत्त वात चिकित्सार्थ औषध –

अनभिष्टंदी, स्निग्ध, स्त्रोतसां शुधीकारक

आवृत्त वात चिकित्सा सूत्र –

कफपित्त अविरुद्धं यद् यच्च वातानुलोमनं ।  
सर्व स्थानावृते अपि आशु तत् कार्ये मारुते हितम् ।

- 1) कफपित्त अविरुद्ध
- 2) वातानुलोमक
- 3) आशु हितकर

आवृत्त वात में इतर उपक्रम –

- 1) यापन बस्ती
- 2) मधुर अनुवासन
- 3) बलानुसार मृदू स्त्रंसन
- 4) रसायन प्रयोग – शिलाजतु गुगुल च्यवनप्राश, अभ्यामलकीय पादोक योग

अपान आवृत्त वात चिकित्सा –

- 1) दीपन
- 2) ग्राही भेषज
- 3) वातानुलोमक
- 4) पक्वाशय विशेषक

पित्त कफादृत वात चिकित्सा –

पित्तावृते तु पित्तध्ने मारुतस्य अविरोधिभिः ।  
कफावृते कफधनैस्तु मारुतस्य अनुलोमनैः ॥

पित्तावृत वात – पित्तध्न + मारुत अविरोधि

कफादृत वात – कफधन + मारुत अनुलोमन

वातरक चिकित्सा –

वातरक उत्पत्ती वैशिष्ट्य - प्रायशः सुकुमारणां मिष्टान्न सुखभोजिनां ।

इतर हेतु – अचंकमणशील व्यक्ति, अभिधात, शरीर अशुद्धि,

हय उष्ट्र यान, अम्बु क्रिडा, प्लवन, लंघन

संप्राप्ति –

वायुः विवृद्धो वृद्धेन रक्तेन आवरितः पथि ।

कृत्स्नं संदूषयेद् रक्तं तत् ज्ञेयं वातशोणितम् ॥

पर्याय – खुड़, वातबलास, आढ़यवात,

स्थान – कर पादांगुली, सर्वसंधी

कृत्वा आदौ हस्तपादे तु मूलं देहे विधावति ।

सर्वप्रथम हस्तपाद तत् पश्चात सर्व शरीर

प्रूर्वरूप – स्वेदो अत्तर्थं न वा

काष्ठय

स्पर्श अज्ञत्व

क्षते अतिरूक्त

आलस्य व सदन

### पिंडकोदगम

जानु जंघा उरु कटी अंस हस्तपाद संधि स्थाने निस्तोद, कण्डु  
सन्धिषु रूक भुत्वा भुत्वा नश्यति चासकृत  
वैवर्ण्य, मंडलोत्पत्ती

### भेद - अवस्थानुसार - 2

- 1) उत्तान - त्वक मांसाश्रयी
- 2) गंभीर - त्वक मांस व्यतिरिक्त इतर धातु

### लक्षण -

- 1) उत्तान - कंडू दाह रूजा आयाम तोद स्फुरण, आकुंचन, श्यावरक वर्ण, ताम्र वर्ण - बाह्यत
- 2) गंभीर - श्वयथु स्तब्धः कठिनो अन्तभशा अरतिमान  
त्वकवर्ण श्याव अथवा ताम्र, संधिस्थाने दाह तोद स्फुरण पाक

### उभयाश्रित वातरक्त -

राग दाह युक्त वायुद्वारे संधि अस्थी मज्जा स्थाने छेदवत पीडा  
वायु का वक्र गतीद्वारा विचरण  
सर्व शरीरचारी वायु द्वारा खंज व पंगु उत्पत्ती

### वातरक्त दोषज भेद - 8

- |    |                  |
|----|------------------|
| 1) | एकदोषज - 3       |
| 2) | द्विदोषज - 3     |
| :  |                  |
| 3) | रक्तज - 1        |
| 4) | सान्त्रिपातज - 1 |
- 1) वातप्रधान वातरक्त - शोथस्य कार्ष्ण, रौक्ष्य च श्यावता वृद्धी हानयः, शीतप्रद्वेष
  - 2) पित्तप्रधान वातरक्त - विदाह वेदना मूर्छा, स्वेद तृष्णा
  - 3) कफप्रधान वातरक्त - स्नैमित्य, गौरव, सुप्तता, स्निग्धता, मंदता
  - 4) रक्तप्रधान वातरक्त - श्वयथुः भृशरूक, तोद, त्वकताम्र वर्ण, चिमचिमायन, स्निग्धरूक्षेः शमं नाति

### साध्यासाध्यता -

- 1) एक दोषज व नविन - साध्य
- 2) द्विदोषज - याप्य
- 3) त्रिदोषज व उपद्रवयुक्त - असाध्य

उपद्रव - अस्वज्ञ, अरोचक, श्वास, मांसकोथ, शिरोग्रह, मूर्छा, पांगुल्य, अंगुलीवक्रता, मर्मग्रह, विसर्प

### चिकित्सा -

- 1) रक्तमोक्षण - 6 प्रकारे
 

1) शृंग	4) सूची
2) जलौका	5) प्रच्छन
3) अलाबु	6) सिरावेध

### अवस्था / लक्षणानुसार रक्तमोक्षण -

- 1) रूग दाह तोद शूल - जलौका
- 2) सुप्ति कंडु चिम्चिमायन - शृंग/ तुम्बी

3) देशात् देशं व्रजत् – स्नाव्यं सिरभिः प्रच्छानेन वा (एक स्थान से दूसरे स्थान गमन)  
 रक्तमोक्षण निषेध – अंगग्लानी, अंगरौद्धय, वाताधिक्य  
 अति रक्तमोक्षण (अवसेचन) हानी – खंज आदी वातरोग, मृत्यु

### वातरक्त चिकित्सा सूत्र –

विरेच्यः स्नेहयित्वादौ स्नेहयुक्त विरेचनैः ।  
 रूक्षेवा मृदूभिः शस्तं असकृद् बस्तीकर्म च ॥  
 सेक अभ्यंग प्रदेह अन्न स्नेहाः प्रायो अविदाहिनः ।  
 स्नेहन पश्चात् – स्निग्ध वा रूक्ष विरेचन  
 पुनः पुनः बस्तीकर्म  
 अविदाही सेक अभ्यंग अन्न, प्रदेह

उज्जान वातरक्त चिकित्सा – बाह्य लेप अभ्यंग परीषेक उपनाह

गंभीर लातरक्त चिकित्सा – विरेचन, आस्थापन, स्नेहपान

बहु दोष में विरेचनाथ – एरंड तैल + क्षीर

### वातरक्त में बस्ती कर्म श्रेष्ठता –

नहि बस्तीसमं किंचित् वातरक्तं प्रशस्तम् ।  
 शोथयुक्त गौरव व कंडुयुक्त कफाधिक वातरक्त – मूत्र क्षार सुरा द्वारा पक्व धृत से अभ्यंग  
द्विदांषज दारूण वातरक्त – बोधिवृक्ष कषाय  
योग – श्रावण्यादी धृत, पारूषक धृत, जीवनीय धृत, मधुपर्ण्यादी धृत,  
 सुकुमारक तैल  
 अमृतादय तैल  
 महापदम तैल कुड़डाक पदम तैल  
 शतपाकी सहस्रपाकी बला तैल  
 गुडूच्यादी तैल  
 पिंड तैल – मधुचिछ्ट, मंजिष्ठा, सर्जरस, सारीवा  
 उपयोग – वातरक्त रूजापह

### योनिव्यापद चिकित्सा –

शुक्र दोष / रेतोदोष – 8

- |                     |   |        |
|---------------------|---|--------|
| 1) फेनिल            | } | वातज   |
| 2) तनु              |   |        |
| 3) रूक्ष            |   |        |
| 4) विवर्ण           | } | पित्तज |
| 5) पूती             |   |        |
| 6) पिच्छिल – कफज    |   |        |
| 7) अन्यथातुपसंसृष्ट |   |        |
| 8) अवसादी           |   |        |

### शुक्रदोष सामान्य चिकित्सा –

वाजीकरण योग सेवन, रक्तपित्तहर योग, योनीव्यापद चिकित्सोक्त योग

जीवनीय धृत, च्यवनप्राश

### दोषानुसार चिकित्सा –

- 1) वातप्रधान – निरूह अनुवासन
- 2) पित्तप्रधान – भयामलकीय पादोक रसायन
- 3) कफप्रधान – मागधी अमृता लोह त्रिफला रसायन भल्लातक रसयन  
प्रशस्तः शुक्रदोषेषु बस्तीकर्म विशेषतः ।

### क्लैब्य प्रकार – 4

- |              |               |
|--------------|---------------|
| 1) बीजोपघातज | 2) ध्वजोपघातज |
| 3) जरया      | 4) शुक्रक्षयज |

### चिकित्सा –

- 1) बीजोपघातज क्लैब्य – वार्जीकरण योग
- 2) ध्वजोपघातज क्लैब्य – प्रदेह परिषेक रक्तमोक्षण स्नेहपान स्नेह विरेचन उभय बस्ती
- 3) जरसंभवज क्लैब्य व शुक्रक्षयज क्लैब्य – स्नेहविरेचन, क्षीरसर्पियोग, रसायन

### स्तन्यदुष्टी – 8

- |              |          |
|--------------|----------|
| 1) वैरस्य    | वात से   |
| 2) फेनसंघात  |          |
| 3) रौक्ष्य   |          |
| 4) वैवर्ण्य  |          |
| 5) दोर्गंध्य | पित्त से |
| 6) स्नेह     |          |
| 7) पैच्छिल्य |          |
| 8) गौरवम्    |          |



### स्तन्यदुष्टी परीणाम –

वैरस्य	कृशीभवती, न चास्य स्वदते, कृच्छ्रेण विवर्धते
फेनसंघात	क्षामस्वर, बद्धविण्मूत्र, वातिक शीर्षरोग, पीनस
रौक्ष्य	बलहास
वैवर्ण्य	विवर्णगात्र, स्विन्न, तृष्णालु, भिन्नविट, नित्य उष्ण शरीर, न अभिनन्दति स्तन्यम्
दोर्गंध्य	पांडु व कामला
स्निग्ध	छर्दन, कुथन, लालालु, नित्य उपदिग्ध स्रोत, निद्रा क्लम, श्वास कास, प्रसेक तमक
पिच्छिल	लालालु, शूनवक्त्र, अक्षिजडत्व,
गुरुस्तन्य	हुद्रोग

### स्तन्यदुष्टी चिकित्सा –

तत्र आदौ स्तन्यशुद्ध्यर्थं धात्रीं स्नेहपादोदितम् ।

संस्वेदय विधिवद् वैदयो वमनेन उपपादयेत् ॥

### बालरोग चिकित्सा –

परतंत्र होने से वमनादी निषेध, भेषज मात्रा – स्वल्प

देय औषध – मधुराणी कषायाणि क्षीरवन्ती मृदूनी च ।

निषेध – अत्यर्थ स्निग्ध रूक्षोष्णां अम्लं कटुपाकी च । गुरु चौषधपानान्नमेतद् बालेषु गर्हितम् ॥  
 दृढबल द्वारा पूरीत अध्याय – 17 ( 9,10,11,12,13,,15,16,17,18,20, 22, 23,26,27, 28,29,30)  
 चरककृत अध्याय – रसायन वाजीकरण ज्वर रक्तपित्त गुल्म प्रमेह कुष्ठ, राजयक्षमा  
 अर्श अतिसार विसर्प मदात्यय द्विवर्णीय

आौषध सेवनकाल – चरक नोट्स

#### देशसात्म्य –

- 1) बाल्हिक पल्लव चीन शूलीक यवन इन देश के लोगों को मांस, गोधूम, माध्विक, शास्त्र व अग्नि ये अभ्यास सात्म्य होते हैं
- 2) प्राच्यदेशस्थ – मत्स्य सात्म्य
- 3) सिंधु देश – क्षीर सात्म्य
- 4) अश्मक / अवन्तिका देश – तैल अम्ल
- 5) मलयवासी – कन्द मूल फल
- 6) दक्षिण देशस्थ – पेया
- 7) उत्तर पश्चिम देश – मंथ
- 8) मध्यदेश – यव गोधूम गोरस

#### विपरीतार्थकारी चिकित्सा उदाहरण –

- 1) चंदन का इलक्षण पिच्छिल धन लेप – दाहकृत होता है
- 2) अगरु का तनु लेप – शीतकृत
- 3) छर्टिघ्नी माद्विका विष्ठा माद्विका एव तु वामदेत  
माद्विका विष्ठा – छर्टिघ्न
- 4) पित्तज व्रणशोथ मे – स्वेद सेक व उष्ण उपचार
- 5) कफज व्रणशोथ – बाह्यतः शीत उपचार

**TIERRA**